केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा- कांग्रेस बांग्लादेशी घुसपैठियों को मानती है वोट बैंक-12

औद्योगिक उत्पादन दो साल के उच्च स्तर 6.7% पर, विनिर्माण और खनन क्षेत्र का मजबूत प्रदर्शन-12

शांति समझौते को यूक्रेन से वार्ता में प्रगति, कुछ जटिल मुद्दे अभी बाकी-13

भारत की नजरें क्लीन स्वीप पर, सांत्वना जीत हासिल करना चाहेगा श्रीलंका-14

आज का मौसम

15.0° अधिकतम तापमान

8.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 07.04

सूर्यास्त 05.25

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

पौष शुक्ल पक्ष दशमी 07:51 उपरांत एकादशी विक्रम संवत 2082

मंगलवार, 30 दिसंबर 2025, वर्ष 7, अंक 36, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

योगी विजन साकार ....उप्र बना देश में सर्वाधिक पर्यटकों के आगमन वाला राज्य

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

महाकुंभ के भव्य आयोजन में आए 66 करोड़ लोग, 137 करोड़ से अधिक पर्यटकों के आगमन से बना देश में प्रथम

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने 2025 में अभूतपूर्व सफलताएं हासिल की हैं। मुख्यमंत्री योगी के विजन के मुताबिक धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों के नवीनीकरण और पर्यटन सुविधाओं के विकास से यूपी घरेलू पर्यटन में देश में प्रथम तथा विदेशी पर्यटन में चौथा स्थान प्राप्त किया है।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2025 में प्रदेश में 137 करोड़ से अधिक घरेलू पर्यटकों का आगमन हुआ, जबकि 3.66 लाख विदेशी पर्यटकों ने प्रदेश की यात्रा की। इसकी सबसे बड़ी वजह प्रयागराज में आयोजित दिव्य-भव्य महाकुंभ-2025 रहा, जहां रिकॉर्ड 66 करोड़ से अधिक श्रद्धालु पहुंचे। इसके अलावा अयोध्या, वाराणसी, मथुरा-वृंदावन और श्रावस्ती जैसे स्थल अब देश के प्रमुख पर्यटन केंद्र बन चुके हैं।

योगी विजन के अनुसार धार्मिक व सांस्कृतिक टूरिज्म की नई संभावनाओं का विकास हुआ है, साथ पर्यटन एवं कला, संस्कृति विभाग द्वारा समय-समय पर आयोजित होने वाले दीपोत्सव, देवदीपावली, माघ मेला जैसे आयोजन देश, विदेश के पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण बन गये हैं।

दरअसल, उपेक्षित पड़े पर्यटन स्थलों को योगी के शासन काल में न केवल पुनर्जीवित किया गया, बल्कि परिवहन, हॉस्पिटैलिटी और कनेक्टिविटी को मजबूत बनाया।

प्रयागराज में महाकुंभ में उमड़ी भीड़। (फाइल फोटो)

एयरपोर्ट, ट्रेन-बस सेवाओं तथा होटल-होम स्टे की सुविधाओं से विदेशी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई। इस वर्ष प्रदेश में पर्यटन के विकास के लिए 1283.33 करोड़ की महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू कीं। जिनमें वाराणसी के घाटों का सौंदर्यीकरण, एकीकृत सर्किट हाउस, कन्वेंशन सेंटर का निर्माण, चित्रकूट में कालिंजर एकीकृत मार्ग तथा राम वन गमन मार्ग पर पर्यटक सुविधा केंद्रों का विकास प्रमुख हैं। वहीं, मुरादाबाद के भगवानपुर मंदिर, शाहजहांपुर के अजीताश्रम योगकुंज (जन्मस्थली), वाल्मीकिनगर में लवकुश कुटी, त्रेतायुग भूमि कुटी, भरतकोठी, सीता रसोई और कौसल्या स्थल का जीर्णोद्धार तेजी से हो रहा है। इसी क्रम में जिला पर्यटन इकाइयों के माध्यम से 7 करोड़ रुपये की लागत से पांच नई परियोजनाएं शुरू हुईं।

पोर्टल पर 37,688.58 करोड़ के निवेश प्रस्ताव

पर्यटन नीति-2022 ने प्रदेश में पर्यटन के बहुआयामी विकास को सुनिश्चित किया। इसके तहत up-tourismportal.in पर 1757 पर्यटन इकाइयों का पंजीकरण हो चुका है, जबकि 37,688.58 करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। विभाग ने टूरिज्म के प्रचार-प्रसार के लिए ज्यूरिख ट्रेवल मार्ट, ग्लोबल ट्रेवल मार्केट-2025, पेरिस फैशनवीक, जीटीएसी टोक्यो-सिडनी जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिस्सा लिया।

पूरे साल महोत्सव से लगता रहा चार चांद

वर्ष 2025 में घाघरा महोत्सव, ब्रह्मा महोत्सव, मकर संक्रांति महोत्सव, दूधई मेला, गाजीपुर महोत्सव, वाराणसी महोत्सव, चित्रकूट का लालगढ़ मेला जैसे आयोजनों से पर्यटक संख्या, राजस्व और स्थानीय रोजगार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

अयोध्या का राम मंदिर। (फाइल फोटो)

मुख्यमंत्री पर्यटन विकास सहयोगिता योजना के तहत इस वर्ष 2 परियोजनाओं को अनुमोदन मिला, जबकि 4 अन्य को जल्द ही स्वीकृति मिलने वाली है। विभाग ने अन्य विभागों के साथ मिलकर कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी कराया। इस वर्ष का सबसे बड़ा आयोजन प्रयागराज में महाकुम्भ-2025 का आयोजन रहा। इसमें देश विदेश से रिकार्ड संख्या में पर्यटक प्रयागराज आये। आयोध्या के भव्य दीपोत्सव के आयोजन में दीयों के प्रज्जवलन का अपना ही पुरान गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ा, वहीं वाराणसी की रामलीला में विश्व का सबसे बड़ा राम तख्त भी गिनीज बुक में दर्ज हुआ।

न्यूज ब्रीफ

प्रधानमंत्री मोदी बजट से पहले अर्थशास्त्रियों से करेंगे मुलाकात

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी बजट पर विचार-विमर्श करने के लिए प्रख्यात अर्थशास्त्रियों और क्षेत्र विशेषज्ञों से मंगलवार को मुलाकात करेंगे। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने यह जानकारी दी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को 2026-27 का केंद्रीय बजट पेश कर सकती हैं। भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं और भारत के निर्यात पर अमेरिका के 50 प्रतिशत के भारी शुल्क के बीच यह बजट पेश किया जाएगा। अर्थशास्त्रियों तथा क्षेत्रीय विशेषज्ञों के अलावा, नीति आयोग के वाइस चेयरमैन सुमन बेरी, नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रह्मण्यम और आयोग के अन्य सदस्य भी बैठक में शामिल होंगे।

अल्प्राजोलम बनाने वाली अवैध फैक्टरी का भंडाफोड़

अहमदाबाद। राजस्थान में पुलिस ने अल्प्राजोलम दवा बनाने वाली एक अवैध फैक्टरी का भंडाफोड़ किया और 30 लाख रुपये मूल्य के नशीले पदार्थ बरामद करने के साथ तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गुजरात एटीएस ने राजस्थान पुलिस के साथ संयुक्त रूप से यह कार्रवाई की। अधिकारियों ने बताया कि आरोपियों ने राजस्थान के भिवाड़ी कस्बे के पास एक औद्योगिक क्षेत्र में चिंता और घबराहट संबंधी विकारों के लिए निर्धारित दवा के निर्माण के लिए दवा बनाने वाली एक फैक्टरी किराए पर ली थी।

बहुराज्यीय साइबर धोखाधड़ी गिरोह का भंडाफोड़, दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने एक एनआरआई महिला से 30 लाख रुपये की ठगी सहित साइबर धोखाधड़ी के अलग-अलग मामलों में दो लोगों को गिरफ्तार किया। जांच में डिजिटल अरेस्ट के माध्यम से ठगी, फर्जी निवेश योजनाओं और कई राज्यों में कई फर्जी खातों के जरिये धनशोधन में शामिल एक बड़े नेटवर्क का खुलासा हुआ है, जिसमें करोड़ों रुपये की रकम का लेन-देन हुआ है।

बरकरार रहेगी सेंगर की सजा

उन्नाव दुष्कर्म मामला : सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के सजा निलंबन के फैसले पर लगाई रोक

नई दिल्ली, एजेंसी

शीर्ष कोर्ट ने दिल्ली हाईकोर्ट के उस आदेश पर सोमवार को रोक लगा दी, जिसमें 2017 के उन्नाव दुष्कर्म मामले में भाजपा से निष्कासित नेता कुलदीप सिंह सेंगर की उम्रकैद की सजा को निलंबित कर दिया गया था। शीर्ष अदालत ने कहा कि सेंगर को रिहा नहीं किया जाएगा। सीजेआई सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की एक अवकाशकालीन पीठ सीबीआई की उस याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी गई थी।

पीठ ने कहा कि इस मामले में कानून से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्न सामने आए हैं, जिन पर विचार किया जाना आवश्यक है। कोर्ट ने सीबीआई की याचिका पर सेंगर को नोटिस भी जारी किया और उससे चार सप्ताह के भीतर अपना जवाब दाखिल करने को कहा। पीठ ने कहा कि वह इस तथ्य से अवगत है कि सामान्यतः जब किसी दोषी या विचाराधीन कैदी को निचली अदालत

या हाईकोर्ट के आदेश के तहत जमानत पर रिहा किया जाता है, तो संबंधित व्यक्ति को सुने बिना उस आदेश पर उसके द्वारा रोक नहीं लगाई जाएगी। पीठ ने यह भी कहा कि सेंगर को एक अन्य मामले में भी दोषी ठहराया गया है और उस मामले में वह अब भी हिरासत में है। पीठ ने कहा, मामले की विशेष परिस्थितियों को देखते हुए हम हाईकोर्ट द्वारा 23 दिसंबर को पारित आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगाते हैं। परिणामस्वरूप, प्रतिवादी (सेंगर) को उक्त आदेश के आधार पर रिहा नहीं किया जाएगा। कहा कि इस मामले में उसके विचार के लिए कानून से जुड़े कई महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न हुए हैं।

लोक सेवक की व्याख्या पर हम चिंतित : कोर्ट

शीर्ष अदालत ने कहा कि अदालत केवल इस बात को लेकर चिंतित थी कि अगर इस व्याख्या को सही माना गया, तो एक कांस्टेबल या 'पटवारी' जैसे व्यक्ति को ऐसे अपराध को लेकर एक 'लोक सेवक' माना जाएगा, जबकि संसद सदस्य या राज्य विधानसभा के निर्वाचित सदस्य इससे मुक्त रह सकते हैं। पीठ ने कहा, ये न्यायाधीश हमारे देश के बेहतरीन न्यायाधीशों में से हैं। उसने कहा, इसमें बहुत ही गहन विश्लेषण किया गया है लेकिन साथ ही, हम सभी गलतियां कर सकते हैं। पीठ ने यह भी कहा कि पीड़िता को उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ अलग से विशेष अनुमति याचिका दायर करने का कानूनी अधिकार है।

लोक सेवक की परिभाषा पॉक्सो अधिनियम में नहीं : सॉलिसिटर मेहता

सीबीआई की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ से हाईकोर्ट के आदेश पर यह कहते हुए रोक लगाने का आग्रह किया कि यह एक नाबालिग बच्ची के साथ भयावह दुष्कर्म की एक घटना थी। हम उस बच्ची के प्रति जवाबदेह हैं, जिसकी आयु 15 वर्ष और 10 माह थी। उन्होंने लोक सेवक के पहलू का भी उल्लेख किया और कहा कि संबंधित समय पर सेंगर उस क्षेत्र के एक अत्यंत प्रभावशाली विधायक थे। हाईकोर्ट ने 23 दिसंबर के अपने आदेश में कहा था कि सेंगर को पॉक्सो कानून की धारा 5(सी) के तहत दोषी ठहराया गया है, लेकिन एक निर्वाचित प्रतिनिधि भारतीय दंड संहिता की धारा 21 के तहत लोक सेवक की परिभाषा में फिट नहीं बैठता। मेहता ने कहा कि 'लोक सेवक' की परिभाषा यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो) अधिनियम में नहीं दी गई है।

हाईकोर्ट के जजों को आदेश के लिए निशाना बनाया जा रहा : हरिहरन

वरिष्ठ अधिवक्ता एन हरिहरन, अन्य वकीलों के साथ, सेंगर की ओर से पेश हुए और हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाने की सीबीआई की याचिका का विरोध किया। पीठ ने कहा सेंगर के वकीलों द्वारा प्रस्तुत दलीलों में भी दम है और उनका गहन रूप से विचार किया जाना चाहिए। हरिहरन ने हाईकोर्ट के आदेश के लिए न्यायाधीशों को निशाना बनाने के मुद्दे को उठाया और कहा कि लोगों को न्यायाधीशों के खिलाफ आरोप लगाने से बचना चाहिए। पीठ ने कहा, हम इसे समझते हैं। लोग राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश कर रहे हैं और ऐसे लोग भी हैं जो इसका व्यक्तिगत फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। हरिहरन ने कहा कि एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें जजों पर आरोप लगाए जा रहे हैं, जो चिंता का विषय है। पीठ ने कहा ऐसे लोग भूल रहे हैं कि सेंगर को न्यायपालिका ने ही दोषी ठहराया था।

अरावली मामले में सुप्रीम कोर्ट ने अपने ही फैसले पर लगाई रोक

नई दिल्ली, एजेंसी

- कोर्ट ने माना- कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को स्पष्ट करने में हुई है चूक
- व्यापक समीक्षा के लिए उच्चस्तरीय समिति गठित करने दिया प्रस्ताव

देश भर में पर्यावरणविदों में फैले आक्रोश का जिक्र करते हुए शीर्ष कोर्ट ने अपने 20 नवंबर के फैसले में दिए गए उन निर्देशों को सोमवार को स्थगित रखने का आदेश दिया, जिसमें अरावली पहाड़ियों और पर्वतमाला की एक समान परिभाषा को स्वीकार किया गया था। कोर्ट ने कहा कि कुछ अस्पष्टताओं को दूर करने की आवश्यकता है, जिनमें यह भी शामिल है कि क्या 100 मीटर की ऊंचाई और पहाड़ियों के बीच 500 मीटर का अंतर पर्यावरण संरक्षण के दायरे के एक महत्वपूर्ण हिस्से को कम कर देगा।

सीजेआई सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी व न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की अवकाशकालीन पीठ ने इस मुद्दे की व्यापक और समग्र समीक्षा के लिए इस क्षेत्र के विशेषज्ञों को शामिल कर एक उच्चस्तरीय समिति गठित करने का भी प्रस्ताव रखा। पीठ ने कहा कि प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि समिति की पिछली रिपोर्ट और फैसले में कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों को स्पष्ट रूप से स्पष्ट करने में चूक हुई है और अरावली क्षेत्र की पारिस्थितिकी अखंडता को कमजोर करने वाली किसी भी नियामकीय खामी को रोकने के लिए आगे की पड़ताल की सख्त जरूरत है। यह भी निर्देश दिया कि 9 मई, 2024 के आदेश के अनुसार अगले आदेश तक 25 अगस्त 2010 की एफएसआई रिपोर्ट में परिभाषित अरावली पहाड़ियों और पर्वतमाला में खनन के लिए इसकी पूर्व अनुमति के बिना कोई अनुमति नहीं दी जाएगी। पीठ ने कहा, पर्यावरणविदों में काफी आक्रोश देखने को मिला है, जिन्होंने नई स्वीकार की गई परिभाषा व इस न्यायालय के निर्देशों की गलत व्याख्या और अनुचित कार्यान्वयन की संभावना पर गहरी चिंता व्यक्त की है।

आंध्र प्रदेश में टाटानगर-एर्नाकुलम एक्सप्रेस में लगी आग, दो एसी बोगी जलीं, एक की मौत

विशाखापत्तनम, एजेंसी

- यात्रियों ने चेन खींचकर ट्रेन को रुकवाया

आंध्र प्रदेश में यलमंचिली के पास टाटानगर-एर्नाकुलम एक्सप्रेस के दो डिब्बों में आग लग जाने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस को आग लगने की सूचना रात 12 बजकर 45 मिनट पर मिली। प्रभावित डिब्बों में से एक में 82 और दूसरे में 76 यात्री सवार थे। आग लगने के बाद यात्रियों ने चेन खींचकर ट्रेन को रुकवाया था।

दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) के विजयवाड़ा मंडल ने बताया कि

आग डिब्बे के विद्युत पैनल वाले हिस्से से नहीं लगी, जैसा कि आमतौर पर होता है, बल्कि यह कपड़ा भंडारण क्षेत्र से शुरू हुई। मामले की जांच की जा रही है। आग लगने की घटना में 70 वर्षीय यात्री चंद्रशेखर सुंदर की मृत्यु हो गई। एससीआर ने कहा कि मृतक के परिजनों को अनुग्रह राशि दी जाएगी।

दक्षिण मध्य सर्कल के रेलवे सुरक्षा आयुक्त (सीआरएस) आग लगने की घटना की विस्तृत जांच करेंगे। अधिकारी ने बताया कि क्षतिग्रस्त दोनों डिब्बों को ट्रेन से अलग कर दिया गया, जिसके बाद ट्रेन एर्नाकुलम की ओर रवाना हो गई।

प्रदूषण से निपटने को दिल्ली सरकार ने गठित की विशेषज्ञ समिति

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी की वायु गुणवत्ता सोमवार शाम चार बजे बेहद खराब श्रेणी में दर्ज की गई। यहां एक्यूआई 401 दर्ज किया गया, जो गंभीर श्रेणी में माना जाता है। इसको देखते हुए दिल्ली सरकार ने वायु गुणवत्ता संकट से निपटने के उपाय सुझाने के लिए विशेषज्ञों की एक समिति गठित की है। विशेष विशेषज्ञ समिति में 11 सदस्य हैं, जिनमें आईआईटी कानपुर व आईआईटी-दिल्ली जैसे संस्थानों के विशेषज्ञ भी शामिल हैं।

कोडीन सिरप की सप्लाई चेन की ध्वस्त

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- मुख्यमंत्री के निर्देश पर चला प्रदेशव्यापी अभियान, एनडीपीएस व बीएनएस के तहत हुई कार्रवाई
- 52 जिलों में सघन जांच, 161 फर्मों पर एफआईआर, 36 जिलों में अवैध डायवर्जन का खुलासा

अमृत विचार : राज्य सरकार ने जीरो टॉलरेंस नीति के तहत ताबड़तोड़ एक्शन से अवैध नशे के सौदागरों की कमर तोड़ दी है। हाल ही में कोडिनयुक्त कफ सिरप से जुड़े प्रकरण सामने आने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सख्त चेतावनी पाकर एफएसडीए ने अपनी छानबीन और कार्रवाई के बाद रिपोर्ट सीएम और पुलिस को सौंपी।

इस आधार पर पुलिस और एसटीएफ ने 79 अभियोग दर्ज किये। इसमें अब तक 85 अभियुक्तों की गिरफ्तारी की जा चुकी है। वर्तमान में एक्शन चल रहा है। वहीं मामले में गठित एसआईटी की भी जांच रिपोर्ट अगले माह सीएम को सौंप दी जाएगी।

इसी बीच मुख्यमंत्री के निर्देश पर एफएसडीए मुख्यालय द्वारा थोक औषधि विक्रय लाइसेंसिंग प्रणाली को और अधिक सख्त व पारदर्शी बनाने के लिए शासन को प्रस्ताव भेजा गया है। इससे पहले मुख्यमंत्री ने एफएसडीए को कोडिनयुक्त कफ सिरप एवं एनडीपीएस श्रेणी की औषधियों के अवैध भंडारण, क्रय-विक्रय, वितरण तथा अवैध डायवर्जन पर प्रभावी नियंत्रण के लिए अभियान चलाने के निर्देश दिए। विभाग ने देश का सबसे बड़ा क्रैक डाउन शुरू करने से पहले अंदरुनी जांच शुरू की। इस दौरान झारखंड, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखंड जैसे राज्यों में विवेचना की गई और यूपी के सुपर स्टॉकिस्ट और होलसेलर के साथ उनके कारोबारी रिश्तों के सबूत जुटाए।

दिल्ली में कोहरे से 128 उड़ानें रद्द

नई दिल्ली, एजेंसी

- आठ का मार्ग बदला गया, 200 उड़ानें देरी से संचालित हुईं
- इंडिगो ने खराब मौसम की वजह से 80 उड़ानें रद्द कीं

घने कोहरे के कारण सोमवार को दिल्ली हवाई अड्डे पर 128 से ज्यादा उड़ानें रद्द कर दी गईं, आठ उड़ानों का मार्ग बदलना पड़ा, जबकि लगभग 200 उड़ानें देरी से संचालित हुईं। एक अधिकारी ने बताया कि दिल्ली हवाई अड्डे पर घने कोहरे और कम दृश्यता की स्थिति के कारण 64 प्रस्थान और 64 आगमन उड़ानें रद्द की गईं, जबकि आठ उड़ानों का मार्ग बदल दिया गया। दिल्ली हवाई अड्डा संचालक डायल (दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड) ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि रनवे की दृश्यता में सुधार हो रहा है, लेकिन कुछ उड़ानों के प्रस्थान और आगमन पर अब भी असर पड़ सकता है। फ्लाइट ट्रैकिंग

वेबसाइट फ्लाइटरडार24डॉटकॉम पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, करीब 200 उड़ानों में देरी हुई, जबकि औसतन प्रस्थान में लगभग 24 मिनट की देरी दर्ज की गई।

इंडिगो नेखराब मौसम की वजह से 80 उड़ानें रद्द कीं। रद्द की गई इन 80 उड़ानों में से आधी दिल्ली हवाईअड्डे से संबंधित हैं। इंडिगो ने इससे पहले एक यात्री परामर्श जारी करते हुए कहा था कि उड़ान संचालन कम दृश्यता की स्थिति में किया जा रहा है। इंडिगो की वेबसाइट के अनुसार, मुंबई, बेंगलुरु, कोचिन, हैदराबाद, कोलकाता, अमृतसर, चंडीगढ़, जयपुर, देहरादून, इंदौर, पटना और भोपाल जैसे अन्य हवाई अड्डों से आने-जाने वाली उड़ानें भी रद्द की गई हैं।

जनसुनवाई | मुख्यमंत्री ने गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन में करीब 150 लोगों की सुनीं समस्याएं

घबराइए मत हर समस्या का कराएंगे समाधान : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: घबराइए मत, हर समस्या का समाधान कराएंगे, सरकार सबकी भरपूर मदद करेगी। पीड़ितों को राहत देने वाले यह वाक्य मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के हैं। इतना ही नहीं समस्या लेकर आए लोगों से आत्मीयता से संवाद करते हुए योगी ने अपने अधिकारियों को निर्देशित किया कि हर पीड़ित व्यक्ति की समस्या पर संवेदनशीलता से ध्यान दें और तत्परता से उसका समयबद्ध व पारदर्शी निस्तारण कराएं।

दरअसल, जनता के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए मुख्यमंत्री

गोरखपुर में जनता दर्शन में लोगों की समस्याओं को सुनते मुख्यमंत्री योगी।

योगी ने प्रचंड ठंड में भी सोमवार को जनसेवा का अनुष्ठान जारी रखा। प्रतिकूल मौसम के बावजूद उन्होंने गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन का आयोजन कर लोगों से मुलाकात की। उनकी समस्याएं सुनीं। सोमवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन सभागार में आयोजित जनता दर्शन के दौरान मुख्यमंत्री ने करीब 150 लोगों की समस्याएं सुनीं और अधिकारियों को उनका समाधान करने का निर्देश दिया। कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक मुख्यमंत्री खुद पहुंचे और एक-एक कर सबकी समस्याएं सुनीं। उन्हें आश्वस्त किया कि वह सभी की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कराएंगे। किसी को भी घबराने की आवश्यकता नहीं है। जनता दर्शन में कुछ लोग इलाज में आर्थिक मदद की गुहार लेकर पहुंचे थे। मुख्यमंत्री ने उनसे कहा कि इलाज में धन की कमी बाधक नहीं होगी।

जमीन कब्जाने वालों पर हो ठोस कार्रवाई

कुछ लोगों द्वारा जमीन कब्जाने की शिकायत पर मुख्यमंत्री ने कठोर कानूनी कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने कहा यदि कोई दबंग, माफिया किसी की जमीन जबरन कब्जा कर रहा हो तो उसके खिलाफ कठोर से कठोर कार्रवाई की जाए। गरीबों को उजाड़ने वाले कतई न बख्शे जाएं। जहां पैमाइश की जरूरत हो, वहां पैमाइश कराकर विवाद का निस्तारण कराया जाए। पारिवारिक विवाद के मामलों में उन्होंने दोनों पक्षों से संवाद कर समाधान की राह निकालने के लिए निर्देशित किया।

अमृत विचार
बरेली, मंगलवार, 30 दिसंबर 2025
पीलीभीत

सपा ने गंवाया कार्यालय, ईओ को मिला सरकारी आवास

यादें 2025 : कई बार गरमाई राजनीति, साल के अंत में बसपा को भी लगा बड़ा झटका, राजनीति ने खो दिए दो दिग्गज

वैभव शुक्ला, पीलीभीत

अमृत विचार : तराई के जनपद पीलीभीत की राजनीति में साल 2025 में कई उतार चढ़ाव आए। फिर चाहे सत्ताधारी भाजपा हो या विपक्षी दल सपा, बसपा और कांग्रेस। समाजवादी पार्टी को दो दशक पुराना जिला कार्यालय गंवाना पड़ा। काफी जद्दोजहद के बीच नगर पालिका के ईओ को सरकारी आवास पर पुनः कब्जा मिल सका। भाजपा के कई जनप्रतिनिधियों और नेताओं के बीच रार छिड़ी रही। नया भाजपा जिलाध्यक्ष बनने के लिए 28 दावेदारों का साल भर इंतजार जारी रहा।

साल की शुरुआत में ही जिले की राजनीति उस वक्त गरमा गई थी जब सत्ताधारी भाजपा में नए जिलाध्यक्ष को लेकर चुनाव प्रक्रिया शुरू की गई। जिलाध्यक्ष संजीव प्रताप सिंह छह साल का कार्यकाल पूरा कर चुके हैं। ऐसे में नए चेहरे की ताजपोशी की उम्मीद जताई जा रही थी। कुल 28 दावेदारों ने इस पद के लिए आवेदन कर दिया। इसके बाद लखनऊ से लेकर दिल्ली तक बड़े नेताओं से खुद के लिए आशीर्वाद पाने के लिए दौड़-भाग चलती रही। शुरुआत में माना जा रहा था कि होली बाद घोषणा होगी। मगर उसके बाद महीनों घोषणा टलती रही। कई जनपदों के जिला

सपा कार्यालय का सामान हटाने के बाद ईओ का सरकारी आवास का भवन।

- पूरे साल भाजपा जिलाध्यक्ष पद पर ताजपोशी के लिए चला 28 दावेदारों का इंतजार

अध्यक्षों की घोषणा के बाद भी जब पीलीभीत का निर्णय नहीं हुआ तो दावेदारों का उत्साह भी थमता सा दिखा। इसे लेकर विपक्षी दलों में भी खलबली मची हुई थी। फिर प्रदेश अध्यक्ष की घोषणा का इंतजार चला और अब साल भर बीतने के बाद नए साल में घोषणा की उम्मीद जताई जा रही है। हालांकि कुछ दावेदारों का ये भी मानना है कि खरमास के चलते घोषणा रुकी है। मकर संक्रांति के बाद पीलीभीत को नया भाजपा जिलाध्यक्ष मिल सकता है। वहीं, राजनीति से जुड़ा एक और चर्चित मामला रहा। वह था नकटादाना चौराहा पर ईओ आवास में करीब 2005 से संचालित हो रहे सपा के जिला कार्यालय को खाली कराने का। वैसे तो कई बार इसे लेकर प्रयास हुए थे। मगर, 18 मई को लखनऊ में चेयरमैन डॉ. आस्था अग्रवाल की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से हुई इस मुद्दे पर मुलाकात के बाद शासन प्रशासन का एक्शन दिखा। 195 दिन में कई उतार-चढ़ाव आए और फिर अंत में नगरपालिका को अपना सरकारी ईओ आवास पर पूर्णतया कब्ज मिला और सपा को जिला कार्यालय गंवाना पड़ा। हालांकि पार्टी की बैठकों के लिए नजदीक में ही सपा जिला महासचिव की कॉलोनी में लोकसभा चुनाव के दौरान बनाए गए लोकसभा कार्यालय को ही जिला कार्यालय के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। इस पूरी कार्रवाई के पीछे पालिकाध्यक्ष डॉ. आस्था अग्रवाल का कद भी कहीं

राकेश गुप्ता।

बुद्धसेन वर्मा।

पीलीभीत की राजनीति ने खो दिए दो दिग्गज

इस साल राजनीतिक पृष्ठभूमि के लिहाज से देखा जाए तो खट्टी -मीठी यादों के बीच दो दिग्गज नेता भी तराई ने खो दिए। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष शहर के वल्लभनगर कॉलोनी के रहने वाले राकेश गुप्ता का निधन हो गया। वह राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष सहकारी संस्था नेफेड के निदेशक थे। वह पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के निर्देश पर दिल्ली, हरियाणा ,पश्चिम बंगाल सहित कई राज्यों में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के दौरान जिम्मेदारी भी संभाल चुके थे। वहीं, अक्टूबर माह में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष बुद्धसेन वर्मा का निधन हो गया। वह मूल रूप से गजरौला कस्बे के रहने वाले थे और लंबे अरसे से नगर के वल्लभनगर कॉलोनी में रह रहे थे। उनकी पत्नी अनीता वर्मा भी जिला पंचायत की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

न कहीं बढ़ा। उधर, साल के अंत में बसपा के एक कद्दावर नेता के दूसरे दल में जाने की बात लगभग तय हो गई। जिसे बड़े नुकसान से जोड़कर देखा जा रहा है।

कुछ फजीहतें भी रहीं यादगार, धरना और जेल तो कहीं तबादला

साल 2025 में कुछ फजीहत कराती घटनाएं भी हुई। सत्ताधारी दल के एक पदाधिकारी के साथ 18 अप्रैल को मारपीट हुई। इसमें अपनी कार्रवाई के लिए पदाधिकारी की ओर से थाने में धरना तक देना पड़ गया। वहीं, जोरशोर के साथ खुद का स्वागत कराने वाले एक संगठन के जिलाध्यक्ष चंद दिन में ही हाईवे जाम करने के दौरान गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए। इसके बाद एक -एक कर कई मुकदमे भी दर्ज हो गए। फजीहत होने के साथ ही पद भी गंवाना पड़ा। महज पांच दिन के जिलाध्यक्ष रहे। सितंबर माह में भाजपा के एक जनप्रतिनिधि के पति पर मारपीट की एफआईआर दर्ज हुई। जिसके बाद जनप्रतिनिधि को पति पर हुई कार्रवाई के विरोध में थाना परिसर में धरना देना पड़ा। साल के ग्यारहवें महीने में जनपद की राजनीति तब और गरमाई जब एक तरफ प्रशासन का बड़ा अफसर और दूसरी तरफ विहिप नेता थे। दरअसल, छह नवंबर को सदर कोतवाली में तत्कालीन एडीएम ऋतु पुनिया की ओर से विश्व हिंदू परिषद के संगठन मंत्री प्रिंस गौड़ पर एफआईआर कराई गई। जिसके बाद पुलिस ने गिरफ्तारी कर जेल भी भेज दिया। इसके बाद कार्रवाई का विरोध हुआ और संगठन के वरिष्ठ नेता भी पीलीभीत आए। फिर कुछ ही दिन बाद एडीएम का तबादला हो गया, जिसे इसी विरोध से जोड़कर देखा गया।

अधिकार सीज और फिर स्टे ने बढ़ाई जनप्रतिनिधियों में खलबली

सत्ताधारी भाजपा में आपसी खींचतान भी कम नहीं रही। एक ब्लॉक प्रमुख की शिकायत मौजूदा विधायक की ओर से पिछले साल की गई थी। बैठक के दौरान भी विरोध खुलकर उजागर दिखा। साल 2025 में इस रार का असर ये दिखा कि ब्लॉक प्रमुख के अधिकार सीज कर दिए गए। इसे जीत-हार से जोड़कर देखा जाने लगा। वहीं, कुछ समय बाद खलबली तब बढ़ गई जब ब्लॉक प्रमुख को न्यायालय से राहत मिल गई। उधर, एक अन्य ब्लॉक प्रमुख के पति पर हत्या की रिपोर्ट दर्ज हो गई। हालांकि विवेचना में बाद में राहत मिल गई। इसके अलावा नगर पालिका में सभासदों के बीच गुटबाजी हावी रही। इसमें शिकायतें न सिर्फ संगठन के नेताओं तक पहुंची बल्कि प्रशासनिक अधिकारियों को भी कई शिकायत पत्र दिए गए।

न्यूज ब्रीफ

समीक्षा बैठक में तय की आगामी रणनीति

पीलीभीत, अमृत विचार : भारतीय सुभाष आर्मी संगठन की समीक्षा बैठक एक बरात घर में हुई। जिसमें आगे की रणनीति पर मंथन किया गया। अध्यक्ष राणा प्रताप सिंह ने विचर रखे। मंडल के अन्य जनपदों से भी कार्यकर्ता शामिल हुए। इस मौके पर राजू राठौर, धर्मेंद्र, प्रेम राठौर, पार्वती सागर, मुनीष कुमार, श्रवण कुमार वर्मा, राजेंद्र गंगवार, अवधेश गुप्ता आदि रहे।

बैठक में सिटी मजिस्ट्रेट ने दिए निर्देश

पीलीभीत, अमृत विचार : गांधी सभागार में जिला श्रम बन्धु समिति एवं बाल श्रम जिला टास्कफोर्स समिति की बैठक सिटी मजिस्ट्रेट विजय वर्धन तोमर की अध्यक्षता में हुई। जिसमें समिति के सदस्य शामिल हुए। बैठक में उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अन्तर्गत श्रमिक पंजीयन, श्रमिक के नवीनीकरण, निर्माण श्रमिकों के हितार्थ चलाये जाने वाली कन्या विवाह सहायता योजना, मातृत्व शिशु एवं बालिका मद्द योजना, निर्माण कामगार मृत्यु एवं दिव्यांगता सहायता योजना आदि के प्रचार प्रसार के निर्देश दिए गए।

बांग्लादेश सरकार का फूंका पुतला

बरखेड़ा, अमृत विचार : बांग्लादेश मे हिंदू समाज पर हो रहे अत्याचार के विरोध में अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद, बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को कस्बे में प्रदर्शन किया। बांग्लादेश सरकार का पुतला फूंका गया। कार्यकर्ता कस्बा स्थित सिद्ध बाबा की मढ़ी पर एकत्रित हुए। नारेबाजी करते हुए कस्बे में स्थित गांधी आश्रम के सामने चौराहे पर पहुंचे और पुतला फूंका। इस मौके पर राष्ट्रीय बजरंग दल के जिला मंत्री अनिल कुमार सिंह, अनमोल भोजवाल, ललित कुमार कश्यप, विपिन कुमार, राजकुमार, अर्जुन, महेंद्र आदि मौजूद रहे।

सड़क हादसे में दो युवक घायल

बीसलपुर, अमृत विचार : मोहल्ला दुर्गाप्रसाद निवासी अशोक कुमार रविवार रात घर से रामलीला मार्ग पर स्थित दुकान से घरेलू सामान खरीदने गए थे। वह सामान खरीद कर जैसे ही दुकान से नीचे उतरे वैसे ही बाइक चालक ग्राम बिहारीपुर कुमरिखा निवासी हरपाल ने टक्कर मार दी। हादसे में दोनों घायल हो गए। बाइक सवार भी सामने खंभे से टकरा गया था। सीएचसी में प्राथमिक इलाज के बाद दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। अशोक की हालत गंभीर होने पर परिजन उसे बरेली ले गए।

प्रशिक्षण में दी गई शिक्षा परक जानकारी

बरखेड़ा, अमृत विचार: राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना के तहत ऑन सोर्स रिवेन्यू विषय पर ब्लॉक सभागार में चल रहे ग्राम प्रधानों, पंचायत सहायकों और सचिवों के दो दिवसीय प्रशिक्षण का सोमवार को समापन हो गया। अनावासीय स्वयं की आय के स्रोत सृजन (ओएसआर) पर राज्य प्रशिक्षक वीर सक्सेना, देवेश यादव ने माइक्रो लैब, पीपीटी और वीडियो के माध्यम से चर्चा की।

प्रशिक्षण की शुरुआत एडीओ पंचायत नजरूल हसन ने कराई। ग्राम प्रधान, पंचायत सहायक, सचिव को बताया कि भारत में ग्राम पंचायतें पंचायती राज अधिनियमों और नियमों में निर्धारित विभिन्न प्रावधानों के माध्यम से अपना स्वयं के स्रोत से राजस्व पैदा करती हैं। राज्य प्रशिक्षक वीर सक्सेना ने बताया कि राज्य अधिनियमों में पंचायत के स्वयं के स्रोत से राजस्व से संबंधित प्रावधानों के विश्लेषण से पता चलता है कि उनमें कर और गैर कर स्रोतों के लिए विशिष्ट खंड शामिल किए गए हैं। जिनका पंचायतों द्वारा अपने स्वयं के राजस्व के स्रोत बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। ग्राम पंचायत में कुछ कर लगा सकते हैं। जैसे बाजार शुल्क, जल शुल्क, स्ट्रीट लाइट आदि। प्रशिक्षिका बबिता सिंह ने बताया कि स्वयं के स्रोत से राजस्व सृजन के लिए व्यवहार विज्ञान संबंधी सिद्धांतों का उपयोग करना चाहिए।

कन्यादान योजना का चेक सौंपा

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार : टीचर्स सेल्फ केयर टीम (टीएससीटी) की कन्यादान योजना में पात्र आवेदक को शगुन राशि के तौर पर 55 हजार रुपये का चेक सौंपा गया।

बता दें कि टीएससीटी ने अपनी मुख्य योजना दिवंगत शिक्षक आर्थिक सहयोग योजना में बीते पांच साल में 476 दिवंगत शिक्षकों के परिवार को 207 करोड़ रुपये से अधिक की मदद करने के बाद जीवनदान और कन्यादान योजनाएं शुरू की हैं। जीवनदान योजना में किसी शिक्षक सदस्य को गंभीर बीमारी में उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती होने पर आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। सोमवार को जिला टीम पदाधिकारियों ने

कन्यादान का चेक सौंपते टीएससीटी पदाधिकारी। ● अमृत विचार

ललौरीखेड़ा विकास क्षेत्र के गांव सुंदरपुर में तैनात शिक्षक सैय्यद नुसरत अली को उनके आवास पर पहुंचकर शगुन राशि का चेक सौंपा। जिला संयोजक राजकुमार वर्मा, प्रवक्ता नरेश पाल गंगवार, सह संयोजक मनोज कुमार मौर्य, भानू प्रताप सिंह, अमरदीप, शिवम सक्सेना, मीडिया प्रभारी फुरकान हाशमी मौजूद रहे। वहीं टीएससीटी पदाधिकारियों ने सोमवार को बीएसए रोशनी सिंह से शिष्टाचार भेंट कर टीम के कार्यक्रमों योजनाओं के बारे में बताया। बीएसए ने टीएससीटी की प्रशंसा करते हुए कहा कि वास्तव में बहुत बड़ा काम संस्था कर रही है। टीम की ओर से बीएसए को स्मृति चिन्ह, वार्षिक पत्रिका विचार क्रांति और टीएससीटी 2026 का कलेंडर भेंट किया गया।

टोल प्लाजा के कर्मियों ने की मारपीट

बीसलपुर, अमृत विचार: नगर की पटेल नगर कॉलोनी निवासी चार युवक अपनी कार से पीलीभीत की ओर जा रहे थे। कार जैसे ही टिकरी के नजदीक टोल प्लाजा पर पहुंची वैसे ही पहले से खड़ी एक कार के कारण उनकी कार टोल पर रुक गई। इसी दौरान वह आपस में गाली गलौज करने लगे। टोल प्लाजा के कर्मचारियों को लगा कि उन्हें अपशब्द कहे जा रहे है। इसी बीच विवाद हो गया। आरोप है कि टोल प्लाजा के कर्मचारियों ने गाड़ी में बैठे युवकों की पिटाई कर दी। सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पार पहुंची और तीन कर्मचारियों को हिरासत में ले लिया। कोतवाल संजीव कुमार शुक्ला ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच समझौता हो गया है। मामले की जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

सनातन की रक्षा के लिए आगे आना होगा

- अखिल भारत हिंदू महासभा का कार्यकर्ता मिलन समारोह संपन्न

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: अखिल भारत हिन्दू महासभा की महिला विंग मंडल अध्यक्ष बबीता सक्सेना के नेतृत्व में कार्यकर्ता मिलन समारोह बीसलपुर के एक बरात घर में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष ठाकुर संजीव सिंह राणा और विशिष्ट अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव मिश्रा, ठाकुर रुद्र प्रताप सिंह रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत चीनी मिल गेस्ट हाउस से रोड शो के साथ हुई, जोकि विभिन्न प्रमुख मार्गों से होते हुए कार्यक्रम स्थल तक पहुंचा। बड़ी संख्या में कार्यकर्ता शामिल हुए। संचालन नगर अध्यक्ष सुनील अवस्थी

कार्यकर्ता मिलन समारोह में मौजूद हिंदू महासभा पदाधिकारी। ● अमृत विचार

और नगर महामंत्री अवनीश रतन ने संयुक्त रूप से किया। जिलाध्यक्ष पंकज शर्मा ने कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा समाजहित, राष्ट्रहित एवं सनातन संस्कृति की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष कर रही है। मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष ठाकुर संजीव सिंह राणा ने कहा कि हिन्दू महासभा केवल एक संगठन नहीं, बल्कि एक वैचारिक आंदोलन है। आज समाज को संगठित होकर सनातन संस्कृति, राष्ट्र की एकता और सामाजिक मूल्यों की रक्षा के लिए आगे आना होगा। कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे संगठन की नीतियों और विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाएं और जमीनी स्तर पर संगठन को मजबूत करें। प्रदेश उपाध्यक्ष रुद्र प्रताप सिंह प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव मिश्रा जिला महामंत्री मयंक जायसवाल, युवा विंग जिलाध्यक्ष गौरव शर्मा, महामंत्री आयुष सक्सेना, महिला विंग जिला महामंत्री कविता वंशवाल आदि लोग कार्यक्रम में मौजूद रहे।

विज्ञान प्रदर्शनी में बच्चों ने पेश किए मॉडल, मिला सम्मान

बच्चों के बनाए मॉडल देखते सिटी मजिस्ट्रेट और बीएसए। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- सिटी मजिस्ट्रेट और बीएसए ने बच्चों का बढ़ाया हौसला

अमृत विचार : समग्र शिक्षा अभियान के तहत जिला स्तरीय राष्ट्रीय आविष्कार अभियान एवं क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। सिटी मजिस्ट्रेट विजयवर्धन तोमर, बीएसए रोशनी सिंह ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित करके शुरुआत कराई। स्कूली बच्चों ने कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विज्ञान प्रदर्शनी के तहत समस्त विकासखंड से आए छात्र-छात्राओं ने अपने मॉडल प्रस्तुत किए।

जिनका अधिकारियों ने स्टॉल पर जाकर निरीक्षण किया। क्विज प्रतियोगिता के तहत पहले चरण में लिखित प्रश्नोत्तरी हुई। जिसमें 40 छात्र,छात्राओं ने प्रतिभाग किया। दूसरे चरण में 25 छात्र-छात्राओं ने मौखिक क्विज में प्रतिभाग किया। छात्र छात्राओं ने पूछे गए प्रश्नों के आधार पर टीम ई के प्रतिभागी छात्र-छात्राएं विजेता बने।

इसमें मरौरी ब्लाक के जूनियर हाई स्कूल कुंवरपुर के कौशल सिंह, नगर क्षेत्र पीलीभीत के कंपोजिट स्कूल नखासा की सुमन मंडल, पूरनपुर के पीएमश्री खासपुर स्कूल की सृष्टि यादव, बरखेड़ा ब्लाक की कंपोजिट स्कूल बरगदा की मिथिलेश, बीसलपुर ब्लॉक के जूनियर हाईस्कूल किशनी के अजीत गंगवार क्विज में विजेता रहे। विज्ञान प्रदर्शनी में ललौरीखेड़ा कंपोजिट स्कूल बरहा के ऋतिक, बिलसंडा ब्लॉक के कंपोजिट स्कूल नौगवां संतोष की प्रशा , पूरनपुर के कंपोजिट स्कूल खासपुर के विवेक, बरखेड़ा के कंपोजीशन स्कूल बरगदा के प्रियांशी श्रीवास्तव, बीसलपुर ब्लॉक के कंपोजिट स्कूल सिसैया जलालपुर के यश पाराशर विजेता रहे। बीएसए ने विजेताओं को सम्मानित किया। इस मौके पर राजकीय इंटर कॉलेज के प्रवक्ता सर्वेश गंगवार, डायट बीसलपुर के प्रवक्ता स्वदेश गंगवार, वीरेंद्र कुमार, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज की प्रवक्ता सुमन, खंड शिक्षाधिकारी शिव शंकर मौर्य, सुनील कुमार सिंह, जिला समन्वयक राकेश पटेल, सचिन चौधरी, जितेंद्र कुमार, मनीष श्रीवास्तव, जिला व्यायाम शिक्षक राजीव कुमार, एसआरजी अमित पाठक , वैभव जैसवार, प्रधान अध्यापक सईदा, अवंती गंगवार, शबाना बी, अंजलि गंगवार, केके सागर, श्रीकृष्ण आदि मौजूद रहे।

छत से गिरकर युवक घायल

बीसलपुर, अमृत विचार: नगर के मोहल्ला दुबे निवासी राजा बाबू अपनी छत पर थे। रविवार रात करीब आठ बजे वह छत से गिरकर घायल हो गए। उन्हें सीएचसी लाया गया। प्राथमिक इलाज के बाद हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

किशोरी का वीडियो वायरल करने का आरोप

पीलीभीत, अमृत विचार : फोन पर बातचीत करना बंद हुई तो युवक नाराज हो गया। इसके बाद धमकाया और फिर किशोरी की आपत्तिजनक वीडियो वायरल कर दी। पीड़िता की मां ने रिपोर्ट दर्ज कराई है।

थाना अमरिया क्षेत्र की एक महिला ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसकी 16 वर्षीय पुत्री की ग्राम टांडा निवासी अनस पुत्र रहमान शाह से फोन पर बातचीत होती थी। इस बात की जानकारी होने पर उसने इसका विरोध किया और पुत्री को उससे बात करने से रोक दिया। आरोप है कि इसके बाद आरोपी ने महिला को फोन कर धमकी दी कि यदि उसकी पुत्री उससे बातचीत नहीं करेगी तो वह उसकी आपत्तिजनक वीडियो वायरल कर देगा। बातचीत बंद कराने के बाद 25 दिसंबर को आरोपी ने फेसबुक पर पुत्री की आपत्तिजनक वीडियो वायरल कर दी।

जरूरतमंदों को वितरित किए कंबल और कोट

जरूरतमंदों को कंबल और कोट बांटते कॉलेज के प्रचार्य व अन्य। ● अमृत विचार

पीलीभीत, अमृत विचार: चौधरी निहाल सिंह कृषि पीजी कॉलेज ऐमी में स्वर्गीय प्रेमवती की पुण्यतिथि मनाई गई।

इसकी शुरुआत उनकी प्रतिमा के समक्ष पुष्पार्चन एवं दीपार्चन करके की गई। इसके बाद शांति पाठ के लिए यज्ञ का किया गया। कॉलेज/गन्ना विकास सहकारी समिति लिमिटेड पीलीभीत के अध्यक्ष चौधरी दिग्विजय सिंह ने तमाम जरूरतमंद लोगों को सर्दी से बचाव के लिए कंबल और कोट का वितरण किया। प्राचार्य डॉ.एसपी सिंह, चीफ प्रॉक्टर आदेश यादव, कृषि विभागाध्यक्ष कुलदीप गंगवार, राजेंद्र सिंह, जगजोत सिंह, अनूप सिंह आदि मौजूद रहे।

निधि प्रेरणा ग्राम संगठन की बैठक में बताए कार्य

अमरिया, अमृत विचार: ग्राम पंचायत नवादा श्यामपुर में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के द्वारा चलाए जा रहे में निधि प्रेरणा ग्राम संगठन की बैठक सोमवार को हुई। जिला मिशन प्रबंधक अवधेश उपाध्याय ने विचार रखे। बता दें कि ग्राम संगठन को प्रेरणा एग्रीकल्चर टूल बैंक फंड प्राप्त हुआ है। जिसका उपयोग कृषि यंत्रों को खरीदने में किया जाएगा। क्रय किए गए कृषि यंत्रों को ग्राम संगठन के द्वारा गांव में किराए पर दिया जाएगा। जिनके उपयोग से ग्रामवासियों को सहूलियत होगी। साथ ही समूह की महिलाओं को भी रोजगार मिल सकेगा। जिस से उनकी आजीविका में बढ़ोत्तरी होगी। कृषि यंत्रों का चयन महिलाओं द्वारा उगाई जाने वाली फसलों के आधार पर स्वयं किया जा रहा है।

विश्व हिंदू महासंघ के कार्यकर्ताओं ने सौंपा ज्ञापन

कलेक्ट्रेट में ज्ञापन देने पहुंचे कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

पीलीभीत, अमृत विचार: विश्व हिंदू महासंघ के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को कलेक्ट्रेट पहुंचकर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन एसडीएम न्यायिक को सौंपा। जिसमें बताया कि माधोटांडा क्षेत्र में बीते दिनों धर्म परिवर्तन से जुड़ा प्रकरण सामने आया था। आरोपी ने पीड़िता से दुष्कर्म भी किया। इसके अलावा बिजनौर के नूरपुर इलाके में भी घटना हो चुकी है। इन मामलों का संज्ञान लेकर सख्त कदम उठाने कीर मांग की है। इसके अलावा नकटादाना चौराहा के पासपास बन रही कॉलोनी के विस्तार क्षेत्र के कारण उत्पन्न जलभराव की स्थिति से क्षेत्र के किसानों की फसल बर्बाद होने से संबंधित ज्ञापन भी दिया गया। इस मौके पर जिलाध्यक्ष नितिन राठौर, विनोद कुमार राठौर, मनोज कुमार, जगदीश, बूटा सिंह, सतवंत सिंह, हिमांशु आदि रहे।

नए साल से उम्मीदें | आरटीई, डीबीटी और बुनियादी सुविधाओं में प्रदेश स्तर पर हुई सराहना, नए साल में डिजिटल व प्रयोगात्मक शिक्षा का विस्तार

वर्ष 2025 की उपलब्धियों ने परिषदीय शिक्षा को जिले में दी नई पहचान

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार : जिले में परिषदीय शिक्षा को साल 2025 में नई पहचान मिली। शासन की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से स्कूलों को बुनियादी सुविधाएं मिलीं और बच्चों के सीखने का माहौल बदला। जमीन पर बैठकर पढ़ने को मजबूर बच्चों को डीएम ज्ञानेंद्र सिंह के विशेष सहयोग से फर्नीचर उपलब्ध कराया गया। आरटीई के तहत कॉन्वेंट स्कूलों में प्रवेश, डीबीटी में शत-प्रतिशत सफलता और परीक्षा पे चर्चा में प्रदेश स्तर पर पहचान बनने से परिषदीय शिक्षा के प्रति विश्वास बढ़ा। अब आने वाले साल में डिजिटल, प्रयोगात्मक और गुणवत्तापरक शिक्षा में विस्तार की मजबूत उम्मीद है। नए साल में मुख्यमंत्री कंपोजिट विद्यालय योजना के तहत दो विद्यालय भी मिले हैं। जिनका निर्माण नए साल में शुरु

एक परिषदीय सकूल में पढ़ते बच्चे।(फाइल फोटो)। ● अमृत विचार

हो सकेगा।

जिले में परिषदीय विद्यालयों की संख्या 1508 हैं। जिसमें 291 कंपोजिट, 928 प्राथमिक और 280 उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित होते हैं। इसके अलावा नौ कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय भी शामिल हैं। इनमें 18 स्कूलों का संचालन नगरीय क्षेत्र में किया जा रहा है। इन सभी स्कूलों में कक्षा चार से आठ में 1.15 लाख और कक्षा एक से तीन में 60864 छात्र-छात्राएं शामिल हैं। बीते सालों में शैक्षिक सत्र शुरु होने के बाद भी शत प्रतिशत किताबों का वितरण नहीं हो पाता था। मगर, इस बार शासन प्रशासन के सहयोग से शैक्षिक सत्र के बीच में ही 1.75 लाख बच्चों को किताबें उपलब्ध कराई गई। आरटीई के तहत कॉन्वेंट स्कूलों में होने वाले दाखिल के लिए निर्धारित 1138 बच्चों को एडमिशन दिलाया गया, जोकि अध्ययनरत हैं। वहीं, डीबीटी के माध्यम से यूनिफॉर्म, जूते-मोजे व अन्य मदों की धनराशि सीधे अभिभावकों के खातों में भेजने के मामले में जिला प्रदेश में अव्वल रहा। वहीं बालिका शिक्षा का भी दायरा बढ़ा। जिले में संचालित नौ बॉ स्कूलों में तीन को 12वीं तक की मान्यता मिली। लर्निंग बाय डूइंग की अवधारणा को साकार करते हुए 16 स्कूलों में लाइव लैब की स्थापना कराई गई, ताकि बच्चे प्रयोगात्मक शिक्षा से जुड़ सकें। 240 दिव्यांग बच्चों को सहायक उपकरण मिले। बरहा समेत कई स्कूलों को मॉडल का दर्जा मिला। स्वच्छ हरित विद्यालय के रूप में कंपोजिट स्कूल बारह कंपोजिट स्कूल गौनेरी वदी,कंपोजिट स्कूल खासपुर, प्राइमरी स्कूल चोखा पुरी, कंपोजिट स्कूल बरहा का चयन किया गया।

> परिषदीय विद्यालयों में काफी हद तक सुधार हुआ है। आरटीई, डीबीटी समेत विभिन्न योजनाओं का शत प्रतिशत लाभ दिलाया गया है। कई स्कूलों में शिक्षकों ने आपसी सहयोग से उन्हें मॉडल बनाया गया है। अब स्कूलों में डिजिटल शिक्षा से भी बच्चों को जोड़ा जा रहा है। सबसे बड़ी उपलब्धि 1031 स्कूलों के बच्चों को फर्नीचर मुहैया कराना रही। नए साल में और कई बदलाव देखने को मिलेंगे। – **रोशनी सिंह,** बीएसए

डीएम के प्रयास से 1031 स्कूलों को मिला फर्नीचर

परिषदीय विद्यालयों में दशकों से प्राइमरी के बच्चे जमीन पर बैठ रहे थे। हर साल ठंड के दिनों में मुद्दा उठाता था। मगर ग्रांट न होने के कारण बच्चों को फर्नीचर नहीं मिल पाता था। डीएम ज्ञानेंद्र सिंह ने प्राइमरी स्कूलों में फर्नीचर मुहैया कराने की मुहिम प्राथमिकता से संभाली। अगस्त में ग्राम पंचायत की मदद से स्कूलों में फर्नीचर उपलब्ध कराया गया। डीएम की सख्ती के चलते 1031 स्कूलों को इस साल फर्नीचर उपलब्ध हो सका।

जनवरी में शुरु होगा दो स्कूलों का निर्माण

एक छत के नीचे प्राइमरी से इंटर तक शिक्षा मुहैया कराने के लिए मुख्यमंत्री कंपोजिट विद्यालय योजना के तहत जिले को दो विद्यालय मिले हैं। यह दोनों विद्यालय पांच एकड़ भूमि पर बनेंगे। इन विद्यालयों के लिए 22 करोड़ का बजट स्वीकृति किया गया है। एक के लिए तो 11.89 करोड़ की पहली किस्त भी जारी कर दी गई है। जिसका भूमि पूजन जनवरी के पहले ही सप्ताह में कराने की तैयारी है। विद्यालय में 70 से अधिक कमरे बनेंगे। बच्चों को पढ़ाने के लिए करीब 80 शिक्षक तैनात रहेंगे।

शहर में आज

- चौक बाजार स्थित द्वारिकाधीश मंदिर में संकीर्तन और सुंदरकांड पाठ शाम 06 बजे।
- चावला चौराहा पर राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार करेंगे चाय पर चर्चा सुबह 08 बजे।
- ऑकेजन बरात घर में श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ शाम 04 बजे।
- गुरुद्वारा गुरु कलगीधर सिंह सभा से प्रभातफेरी सुबह 04 बजे से।
- बिलसंडा के जायसवाल फिलिंग स्टेशन पर कंबल वितरण सुबह 10 बजे से।

न्यूज ब्रीफ

उपभोक्ताओं ने जमा किया बकाया बिल

बिलसंडा, अमृत विचार : क्षेत्र के ग्राम सिंबुआ में बिजली बिल राहत योजना के तहत शिविर का आयोजन किया गया। 20 उपभोक्ताओं ने अपना रजिस्ट्रेशन कराया। 90 हजार रुपये की बकाया धनराशि जमा की। इस दौरान जेई राजेश कुमार, रमेश कुमार, अवनीश कुमार आदि मौजूद रहे।

मायके आकर विवाहिता को पीटा

पीलीभीत,अमृत विचार : थाना गजरौला क्षेत्र के ग्राम कल्याणपुर नौगवां निवासी कीर्ति सक्सेना ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी शादी 12 साल पूर्व मोनू पुत्र नरेंद्र कुमार निवासी ग्राम अजयपुर थाना हजरतपुर जिला बदायूं के साथ हुई थी। उसके दो बच्चे हैं। आरोप है कि पति के नशा अधिक करने पर वह नाराज होकर 25 दिसंबर को मायके आ गई थी। आरोप है कि उसके पति ने मायके आकर मारपीट करते हुए जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज की है।

रेस्टोरेंट संचालक के साथ मारपीट, रिपोर्ट

पीलीभीत,अमृत विचार : थाना सुनगढ़ी क्षेत्र के जंगरौली फैक्ट्री मार्ग निवासी सुनील ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 26 दिसंबर को रात करीब आठ बजे अचानक दीपक नाम के युवक ने अपने दो साथियों के साथ पहुंचकर उसके साथ गाली गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। मारपीट की सूचना पर डायल 112 पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने एंबुलेंस की मदद से घायल को जिला अस्पताल भिजवाया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज की है।

नए साल पर पीटीआर में वन महकमे के साथ दिखेगी पुलिस

चूका बीच, सप्त सरोवर समेत अन्य भीड़-भाड़ वाले टूरिज्म प्वाइंटों पर तैनात रहेगी पुलिस

पीलीभीत टाइगर रिजर्व का द्वार।

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

बाइफरकेशन प्वाइंट पर मौजूद भीड़ (फाइल फोटो)।

अमृत विचार : पीलीभीत टाइगर रिजर्व में नए साल पर सैलानियों के उमड़ने वाली भीड़ को नियंत्रित करने के लिए वनकर्मियों के साथ पुलिस की भी मौजूदगी रहेगी। प्रायः देखा गया है कि नए साल पर सैलानियों की भीड़ के बीच कुछ लोग अवैध रूप से इंट्री प्वाइंटों के माध्यम से वन क्षेत्र में घुसने का प्रयास करते हैं। ऐसे लोगों को रोकने के लिए इस बार टाइगर रिजर्व के टूरिज्म प्वाइंटों पर वनकर्मियों के साथ-साथ पुलिस बल भी मौजूद रहेगा। इधर सैलानियों की भीड़ के मद्देनजर टाइगर रिजर्व प्रशासन की ओर से तैयारियां तेज कर दी गई है।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व का जंगल और महोफ रेंज स्थित इको टूरिज्म स्पॉट चूका बीच खूबसूरती की मिसाल है। चूका बीच का

- **अवैध रूप से घुसने वालों पर कसा जाएगा शिकंजा, टाइगर रिजर्व प्रशासन ने बनाई रणनीति**

अद्भभुत नजारा और जंगल में घूमते वन्यजीवों के दीदार सैलानियों को यहां आने पर मजबूर कर देता है। पर्यटन सत्र के दौरान दूर-दराज के राज्यों समेत दुनिया के विभिन्न देशों से सैलानियों की आमद होती है। चालू पर्यटन सत्र में भी सैलानियों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। अब तक 100 के आसपास विदेशी सैलानी भी टाइगर रिजर्व में आ चुके हैं। इधर नए साल को लेकर सैलानियों के उत्साह का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि नए साल का जश्न मनाने के लिए सोमवार से ही देश के अन्य शहरों के सैलानियों ने चूका बीच पहुंचना शुरू कर दिया है। चूका बीच की सभी हटें और गेस्ट हाउस पहले से बुक हो चुके हैं। इधर सैलानियों की संभावित भीड़ को देखते हुए टाइगर रिजर्व प्रशासन की ओर से पर्यटन व्यवस्था को और मजबूत किया जा रहा है। चूका बीच समेत भीड़ वाले टूरिज्म प्वाइंटों पर अतिरक्त स्टाफ की तैनाती की जा रही है। वहीं नए साल पर पर्यटन व्यवस्था में कोई व्यवधान न पैदा हो, इसको लेकर टाइगर रिजर्व प्रशासन की ओर से पुलिस फोर्स की भी मांग की गई है।

दरअसल पीलीभीत टाइगर रिजर्व में नए साल पर बड़ी संख्या में स्थानीय और बाहरी सैलानी पहुंचते हैं। बड़ी संख्या में सैलानियों के पहुंचने से सफारी वाहन कम पड़ जाते हैं। प्रायः देखा गया है कि ऐसे मौके पर कुछ लोग महोफ गेट, चूका, लालपुल और बाइफरकेशन प्वांइट से अवैध तरीके से वन क्षेत्र में घुसने का प्रयास करते हैं। ऐसे में जंगल में मौजूद वन्यजीव तो प्रभावित होते ही है, साथ ही सैलानियों की सुरक्षा भी प्रभावित होती है।

पर्यटन व्यवस्था को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ही पुलिस फोर्स की मांग की गई है। नए साल पर बाइफरकेशन, लालपुल, चूका, महोफ समेत अन्य भीड़-भाड़ वाले टूरिज्म प्वाइंटों पर वनकर्मियों के साथ पुलिस बल भी तैनात रहेगा।

> पीटीआर में नए साल पर सैलानियों संख्या में अधिक बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। ऐसे में वन्यजीवों एवं सैलानियों की सुरक्षा को लेकर रणनीति तैयार की गई है। इसमें पुलिस विभाग का भी सहयोग लिया जा रहा है, ताकि पर्यटन व्यवस्था में कोई व्यवधान न हो। – **मनीष सिंह, डिप्टी डायरेक्टर,** पीलीभीत टाइगर रिजर्व

गोकशी और धर्मांतरण के मामले में तत्काल करें कार्रवाई

घुंघचिहाई ,अमृत विचार: एएसपी विक्रम दहिया ने सोमवार को थाना घुंघचिहाई का निरीक्षण किया। इस दौरान परिसर की साफ सफाई, कार्यालय, मैस, हवालात आदि की व्यवस्थाएं देखी।

एएसपी ने महिला सुरक्षा केंद्र पर पहुंचकर अभिलेख चेक किया। मौजूद कर्मचारियों को महिलाओं की समस्याएं सुनने और समयबद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए। दुष्कर्म के आरोपियों पर गैगस्टर एक्ट, गुंडा एक्ट, एनएसए के तहत कार्रवाई कर शिकंजा कसा जाए। साइबर हेल्प डेस्क से संबंधित अभिलेख देखे। एनसीआरपी पोर्टल, जेएमआईएस पोर्टल पर संदिग्ध म्यूल एकाउंटस को चेक करने के निर्देश दिए। कहा कि विगत समय में फर्जी कॉल सेंटर के जरिए लोगों को ठगने वाले गिरोह पकड़े गए हैं। इसे लेकर भी सतर्कता बरती जाए। गोकशी और धर्मांतरण के मामलों में तत्काल एफआईआर दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी की जाए। गोमांस तस्करों पर गैंगस्टर के तहत कार्रवाई हो। कच्ची शराब के धंधेबाजों पर अंकुश लगाया जाए। यह भी कहा कि थाने पर आने वाले फरियादियों से अच्छा व्यवहार हो। विवेचना के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण, ऑपरेशन क्लीन, वांछित अपराधियों की धरपकड़, तस्करों के सत्यापन आदि को लेकर निर्देशित किया।

कोडीन युक्त कफ सिरप की अवैध बिक्री पर एफआईआर

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- **बरेली में हुई पूर्व छापेमारी के बाद खुला था पीलीभीत का मामला**
- **नोटिस के बावजूद अभिलेख न देने पर ड्रग इंस्पेक्टर ने लिखाई एफआईआर**

अमृत विचार : कोडीन युक्त कफ सिरप की बिक्री पर प्रतिबंध होने के बाद भी बरेली और जिले में बड़ी मात्र में कफ सीरप की अवैध बिक्री का मामला सामने आया था। पूर्व में बरेली में हुई छापेमारी में खुलासा हुआ था कि सीरप की खेप बरखेड़ा के सूर्या मेडिकल स्टोर पर भी दी गई है।जिसकी जांच ड्रग इंस्पेक्टर के द्वारा की गई थी। संचालक द्वारा क्रय विक्रय के बिल प्रस्तुत न करने पर नोटिस दिया गया। नोटिस देने के बाद भी बिल नहीं दिए। जबकि कफ सीरप पहुंचने के साक्ष्य मिले थे। अब इस मामले में ड्रग इंस्पेक्टर की ओर से संचालक के खिलाफ बरखेड़ा थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई है।

औषधि निरीक्षक नेहा वैश्य ने बरखेड़ा थाने में सूर्या मेडिकल स्टोर संचालक पंकज कुमार के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। जिसमें कहा गया है कि कोडीन युक्त कफ सीरप पर प्रतिबंध होने के बाद बरेली जनपद में मेडिकल प्रतिष्ठान मेसर्स एक्सट्रीम हेल्थ सॉल्यूशन पर बरेली टीम ने छापा मारा था। छापेमारी के दौरान बरेली स्थित मेडिकल स्टोर के प्रोपराइटर ने पूछताछ में स्वीकार किया कि उनके प्रतिष्ठान से उक्त कोडीन युक्त कफ सीरप की आपूर्ति बरखेड़ा के सूर्या मेडिकल स्टोर को भी की गई थी। इस सूचना के आधार पर उन्होंने टीम के साथ छह दिसंबर को सूर्या मेडिकल स्टोर पर छापा मारा था। निरीक्षण के दौरान संचालक पंकज कुमार कफ सीरप की खरीद से इनकार करते रहे और मांग के बावजूद कोई प्रामाणिक क्रय-विक्रय बिल प्रस्तुत नहीं कर सके। मौके पर केवल एक विक्रय बिल दिखाया गया। विभागीय कार्रवाई के तहत नोटिस देते हुए दवाओं के क्रय-विक्रय पर अस्थायी रोक लगा दी गई थी। नोटिस देने के बाद भी संचालक ने क्रय विक्रय के बिल प्रस्तुत नहीं किए। जांच में सामने आया कि बरेली स्थित मेडिकल स्टोर को करीब 11.75 लाख रुपये का भुगतान अन्य दवाओं के नाम पर किया गया, जिससे कोडीनयुक्त कफ सीरप को अवैध रूप से बेचने की आशंका और गहराई है। मामला संवेदनशील मानते हुए मेडिकल संचालक के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई गई है।

प्रसव के दौरान महिला की मौत, जांच के लिए स्वास्थ्य विभाग की टीम पहुंची

कार्यालय संवाददाता,पीलीभीत

- **एमओआईसी ने दिया नोटिस अभिलेख प्रस्तुत करने के लिए मिला समय**
- **दो दिन पहले प्रसव के दौरान हुई थी महिला को मौत, टीम पहुंचने पर भाग गया स्टॉफ**

अमृत विचार : प्रसव के दौरान हुई महिला की मौत के मामले में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने अस्पताल को रडार पर ले लिया है। जांच करने पहुंची स्वास्थ्य विभाग की टीम को देखकर अस्पताल संचालक और स्टाफ वहां से खिसक लिया। एमओआईसी की ओर से अस्पताल को नोटिस जारी करते हुए अभिलेख प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं।

सेहरामऊ उत्तरी थाना क्षेत्र के गांव गोरा निवासी शाहिद बेग की पत्नी शायरा बेगम (35) शुक्रवार को अपनी सास के साथ पूरनपुर अल्ट्रासाउंड कराने आई थीं। जांच के दौरान गर्भ में शिशु को दिक्कत बताकर उन्हें पूरनपुर के एक निजी अस्पताल ले जाया गया था। आरोप है कि यहां अनट्रेड स्टाफ से महिल का प्रसव कराया गया था। जिससे उसे ब्लीडिंग हो गई। हालत बिगड़ने पर उसे रेफर कर दिया। जिससे उसकी मौत हो गई। महिला की मौत पर परिजनों ने जमकर हंगामा किया। हंगामे की सूचना मिलने पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। कार्रवाई की आशंका के चलते अस्पताल का स्टाफ भाग निकला। परिजनों ने लापरवाही से विवाहिता की मौत का आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की है। इस मामले में एमओआईसी डॉ. मनीष राज शर्मा टीम के साथ जांच करने के लिए वहां पहुंचे तो अस्पताल बंद मिला। अस्पताल को नोटिस जारी करते हुए अभिलेख प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। इस पर उनके द्वारा नोटिस दिया गया है। एमओआईसी डॉ. मनीष राज शर्मा ने बताया कि अस्पताल में महिला की मौत की जानकारी मिली है। इसलिए जांच करने के लिए गए थे।

अस्पताल बंद मिला। संचालक को नोटिस जारी किया है। अभिलेख प्रस्तुत करें। अन्यथा कार्रवाई की जाएगी।

ग्राम पिंजरा में मां बेटे को पीटा रिपोर्ट हुई दर्ज

पीलीभीत,अमृत विचार : थाना अमरिया क्षेत्र के ग्राम पिंजरा बमनपुरी निवासी मेराज बानो पत्नी अहमद नूर ने थाना पुलिस को दी तहरीर में बताया कि 23 दिसंबर को वह अपने पुत्र मोहम्मद आरफीन के साथ घर में अकेली थी। आरोप है कि इस दौरान ग्राम अमखेड़ा निवासी मोहम्मद आमिर,लईक अहमद,मोहम्मद सोहिल,मेनाज उसके घर पर आ गए। आरोपियों ने गाली गलौज की, तो उसके पुत्र ने विरोध किया। जिस पर आरोपी ने उसकी पिटाई कर दी। फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी दी। आरोपियों ने जान से मारने की धमकी भी दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस ने बताया कि जांच की जा रही है। जांच के बाद कार्रवाई होगी।

रहस्यमय ढंग से तीन नाबालिग लापता साथ जाने की जताई जा रही आशंका

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- **पेटीएम ट्रांजेक्शन से खुला सुराग पुलिस ने तहरीर मिलने के बाद शुरू की तलाश, परिजन परेशान**

अमृत विचार : शहर के एक मोहल्ले में रहने वाली तीन नाबालिग अचानक लापता हो गए। इनमें दो छात्र और एक छात्रा है। सोमवार को स्कूलों में पीटीएम बुलाई गई थी। मगर वह उसमें पहुंचे नहीं। किशोर घर से नकदी, बाइक और मोबाइल लेकर निकले। एक किशोरी भी लापता है। अभी तक की जांच में तीनों के साथ जाने की बात सामने आई है। पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर बरामदगी का प्रयास कर रही है।

मामला थाना सुनगढ़ी क्षेत्र का है। यहां का रहने वाला 17 वर्षीय किशोर सोमवार सुबह करीब चार बजे घर से निकल गया। परिजनों ने खोजबीन की, तो बाइक और उसकी मां का मोबाइल भी गायब मिला। मोबाइल से पेटीएम का लेन-देन होता था। इसी दौरान जानकारी मिली कि क्षेत्र की एक कॉलोनी का रहने वाला 16 वर्षीय किशोर भी उसी समय घर से निकल गया। वह घर से करीब पौने दो लाख रुपये लेकर गया है।

दोनों के परिजन ने थाना सुनगढ़ी पहुंचकर शिकायत की। पुलिस ने जांच शुरू की तो पता चला कि एक किशोर द्वारा ले जाए गए मोबाइल से एक नंबर पर पेटीएम के माध्यम से भुगतान किया गया है। नंबर ट्रेस करने पर वह थाना क्षेत्र की ही एक किशोरी का निकला। पुलिस जब किशोरी के घर पहुंची तो वह भी सुबह चार बजे से लापता बताई गई। जांच में सामने आया कि तीनों पिछले वर्ष तक एक ही स्कूल में कक्षा नौ में पढ़ते थे। इस वर्ष किशोरी के पिता ने उसका नाम कटवाकर दूसरे स्कूल में दाखिला करा दिया था। पुलिस के अनुसार, जिस स्कूल में दोनों किशोर पढ़ते थे, वहां मंगलवार को पैरेंट्स-टीचर मीटिंग होनी थी। आशंका जताई जा रही है कि दोनों किशोर और किशोरी साथ ही गए होंगे। इंस्पेक्टर सुनगढ़ी नरेश त्यागी ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। तीनों की बरामदगी के लिए टीमों को लगाया गया है।

कार्यशाला में दी योजनाओं की जानकारी

कार्यशाला में मौजूद लोग। ● अमृत विचार

संवाददाता, बरखेड़ा

अमृत विचार: कस्बा स्थित जूनियर हाईस्कूल परिसर में सोमवार को ग्राम प्रधान, स्थानीय प्राधिकारी और प्रधानाध्यापकों के उन्मुखीकरण के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि बरखेड़ा विधायक प्रतिनिधि अमित गंगवार ने सरकार द्वारा विद्यालयों को दी जाने वाली समस्त योजनाओं के बारे में बताया।

विद्यालयों को स्मार्ट बनाने की पहल को सराहनीय बताया। खंड शिक्षा अधिकारी अजय कुमार ने विचार रख जागरूक किया। बाल अधिकारों को सुनिश्चित करने और उनकी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर जोर दिया। एआरपी हरिपाल के द्वारा एमएमसी, आउट ऑफ स्कूल ,ऑपरेशन कायाकल्प पर प्रकाश डाला। संचालन तीर्थदेव शर्मा ने किया।

राज्यमंत्री ने दिवंगतों को अर्पित की श्रद्धांजलि

कार्यालय संवाददाता,पीलीभीत

अमृत विचार : गन्ना विकास एवं चीनी मिलें राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार ने सोमवार को दिवंगत हुए लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए हुई श्रद्धांजलि सभाओं में शामिल होकर श्रद्धाजलि अर्पित की। शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। बता दें कि शहर के चिकित्सक डॉ.नरेन्द्र नाथ मिश्रा की विगत दिनों लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया था। दसवां स्थल पर हुई श्रद्धाजलि सभा में राज्यमंत्री शामिल हुए और दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद राज्यमंत्री आवास विकास कालोनी स्थित भाजपा के पूर्व नगर अध्यक्ष विकास श्रीवास्तव के आवास पर पहुंचे। वहां विगत दिनों हुए माता के निधन को लेकर श्रद्धाजलि अर्पित की। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की।

दिवंगत के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करते राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार।

- **दसवां स्थल पर हुई श्रद्धाजलि सभा में राज्यमंत्री शामिल हुए**

रास्ता भटके बालक को जीआरपी ने परिजनों से मिलाया

पीलीभीत, अमृत विचार : रेलवे स्टेशन परिसर में रविवार शाम जीआरपी ने सर्कुलेटिंग एरिया में एक 12 वर्षीय बालक को बैठा देखा। पूछताछ में उसने खुद को बरेली जनपद के नकटी नरायनपुर इलाके का रहने वाला बताया। उसका कहना था कि वह रास्ता भटकने के कारण गलती से पीलीभीत रेलवे स्टेशन पहुंच गया है। मामले की जानकारी मिलते ही जीआरपी थानाध्यक्ष अभिषेक पांडे ने टीम को बालक के परिजनों के संबंध में जानकारी जुटाने के निर्देश दिए। बालक द्वारा बताए गए उसके नाना के मोबाइल नंबर पर संपर्क किया। नाना और बालक की मां के साथ जीआरपी थाने पहुंचे। औपचारिक सत्यापन के बाद जीआरपी ने बालक को परिजनों सौंप दिया।

विधान परिषद सदस्य ने कार्यकर्ताओं को दिए टिप्स

बरखेड़ा, अमृत विचार: कस्बे के एक बारात घर में सोमवार को भाजपा की ओर से अटल स्मृति सम्मेलन एवं विधानसभा कार्यशाला मतदाता पुनरीक्षण अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री एवं विधान परिषद सदस्य बहोरन लाल मौर्य रहे।

उन्होंने कहा कि भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी व डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धांजलि अर्पित की। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। मतदाता पुनरीक्षण अभियान के बाबत भी लोगों को जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय उपाध्यक्ष हर्षवर्धन आर्य व विधायक स्वामी प्रवक्तानंद ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष श्याम बिहारी भोजवाल, जिला महामंत्री किसान मोर्चा नागेंद्र प्रताप सिंह एडवोकेट, भाजपा मंडल अध्यक्ष प्यारेलाल कश्यप, दीपक सूर्यवंशी, कमलेश वर्मा, सूरज श्रीवास्तव, नरेश गंगवार, राकेश वर्मा, अजय आदि मौजूद रहे।

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते विधान परिषद सदस्य बहोरन लाल मौर्य।

पिता-पुत्री पर हमला, रिपोर्ट दर्ज

बीसलपुर, अमृत विचार: ग्रामीण और उसकी पुत्री पर हमला कर पिटाई कर दी गई। ग्राम सिसैइया जलालपुर निवासी ठाकुरदास की पुत्री प्रीति ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि 28 दिसंबर की शाम साढ़े छह बजे उसके पिता घर में थे। इसी दौरान पड़ोसी बुद्धसेन ,सत्यदेव और जितेंद्र कुमार शोर मचा रहे थे। प्रीति ने जब शोर मचाने से मना किया तो आरोपी हमलावर हो गए। लाठी डंडे से पिटाई कर दी। बचाने पहुंची बहन रितु और पिता ठाकुरदास को भी पीटा। पीड़ित परिवार ने बताया कि आरोपी आए दिन उनके परिवार के साथ बदसलूकी करते रहते हैं। कई बार मना करने पर भी नहीं मानते हैं। इस बार जब विरोध किया तो लाठी डंडे लेकर आ गए और गाली गलौज करने लगे। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी ने बताया कि जांच की जा रही है।

कवायद अब तक 90 हजार रुपये की कमाई, ग्रामीणों को भी मिल रहा रोजगार, पूरनपुर देहात में 16 लाख रुपये की लागत से स्थापित की प्लास्टिक यूनिट

प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट ने शुरू की रीसाइक्लिंग

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

पूरनपुर देहात में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट में कचरे को रीसाइकल करते कर्मचारी।

अमृत विचार: पूरनपुर ब्लाक में बनी प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट जनपद की पहली ऐसी यूनिट है, जिसके माध्यम से प्लास्टिक कचरे की रीसाइक्लिंग शुरू कर दी है। खास बात यह है कि पंचायत राज विभाग की ओर से स्थापित की गई इस प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट ने रोजगार देने के साथ कमाई करना भी शुरू कर दिया गया है। हालांकि अभी रीसाइक्लिंग मैटेरियल की बिक्री स्थानीयस स्तर पर ही की जा रही है। जल्द ही रीसाइक्लिंग मैटेरियल की महानगरों में बिक्री की जाएगी, ताकि आय में बढ़ोत्तरी हो सके।

सरकार द्वारा प्लास्टिक के प्रयोग पर रोक लगाई गई है, मगर यह यह कवायद पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो पा रही है। प्लास्टिक कचरा पर्यावरण के लिए तो गंभीर खतरा बनता ही जा रहा है, साथ ही बीमारियां फैलने का खतरा भी मंडराने लगा है। केंद्रीय बोर्ड प्रदूषण के अनुसार सबसे ज्यादा प्रदूषण प्लास्टिक कचरे से ही हो रहा है। प्लास्टिक कचरे के निस्तारण के लिए सरकार ने ब्लाक स्तर पर प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट लगाने की शुरुआत की है। प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट में अनुपयोगी प्लास्टिक को उपयोग के लायक बनाया जाएगा। जिसके बाद गत वर्ष शासन की ओर से जनपद में स्वच्छ भारत मिशन के तहत एक प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट स्थापित करने का का लक्ष्य दिया गया था। जिलाधिकारी अध्यक्षता में हुई बैठक के बाद प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट लगाने के लिए पूरनपुर ब्लाक की ग्राम पंचायत पूरनपुर देहात का चयन किया गया था। शासन स्तर से हरी झंडी मिलने के बाद पंचायत राज विभाग की देखरेख में पूरनपुर देहात में करीब 16 लाख रुपये की लागत से प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का निर्माण कराया गया।

निर्माण कार्य पूरा होने के बाद यूनिट में श्रेडर, बेलर और डस्ट रिमूवर मशीनें लगाई गई। यूनिट संचालन को लेकर पंचायत के लोगों को मशीन के संचालन समेत अन्य कार्य को लेकर प्रशिक्षण दिलाया गया, ताकि यूनिट से संबंधित क्षेत्र के लोगों को रोजगार से जोड़ा जा सके। इधर बीते जुलाई माह से प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का संचालन शुरू करते हुए ग्राम पंचायत से एकत्रित किए गए प्लास्टिक कचरे को इसे मशीनों के माध्यम से रीसाइक्ल कर फिर से इस्तेमाल करने लायक बनाया जा रहा है। इधर बीसलपुर ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत गुलैंदा गौटियां में भी एक प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का निर्माण कराया जा रहा है।

> पूरनपुर ब्लॉक में प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का संचालन शुरू कर दिया गया है। रीसाइकल मैटेरियल की बिक्री के माध्यम से आय भी अर्जित की जा रही है। जल्द ही पूरनपुर ब्लाक की सभी ग्राम पंचायतों को इस यूनिट से जोड़ा जाएगा, ताकि गांवों को प्लास्टिक कचरा मुक्त करते हुए उनकी आय में भी बढ़ोत्तरी की जा सके। –**रोहित भारती,** जिला पंचायत राज अधिकारी

अब तक 90 हजार की कर चुकी कमाई

ग्राम पंचायत पूरनपुर देहात में स्थापित की गई प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट का संचालन शुरू हुए करीब पांच माह ही बीते हैं, मगर प्रशिक्षित ग्रामीणों के सहयोग से संचालित की जा रही इस यूनिट ने कमाई का आंकड़ा एक लाख रुपये के करीब पहुंचा दिया है। ग्राम पंचायत के सचिव अवनीश गंगवार के मुताबिक प्लास्टिक वेस्ट यूनिट के माध्यम से रीसाइक्लि किए गए प्लास्टिक मैटेरियल की बिक्री कर 90 हजार रुपये की आय अर्जित की जा चुकी है। यूनिट के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार भी दिया जा रहा है। हालांकि अभी रीसाइकल मैटेरियल की बिक्री स्थानीय स्तर पर की जा रही है, मगर जल्द ही इसकी बिक्री अन्य महानगरों में करने की तैयारी चल रही है। जिससे आय में वृद्धि हो सके। सचिव ने बताया कि यूनिट में आए प्लास्टिक कचरे को सर्व प्रथम डस्ट रिमूवर से साफ सुथरा किया जाता है। इसके बाद श्रेडर मशीन के माध्यम से प्लास्टिक के कचरे को छोटे-छोटे हिस्सों में काटा जाता है। छोटे-छोटे टुकड़ों को बेलर मशीन में डालकर उसका धनत्व कम करते हुए पैक कर दिया जाता है।

यूनिट से जुड़ेगी पूरनपुर की सभी पंचायतें

इस प्लास्टिक वेस्ट मैनेजमेंट यूनिट से पूरनपुर ब्लॉक क्षेत्र की सभी ग्राम पंचायतों को जोड़ने की कवायद शुरू की जाएगी, ताकि बड़े स्तर पर प्लास्टिक वेस्ट को रीसाइकल कर बेहतर आय प्राप्त की जा सके। इस संबंध में ब्लाक क्षेत्र के सभी सचिवों को निर्देशित भी किया जा चुका है। इसके बाद कुछ ग्राम पंचायतों के सफाईकर्मियों ने संबंधित गांवों से निकले प्लास्टिक कचरे को इस प्लास्टिक वेस्ट यूनिट तक पहुंचाया भी, मगर अभी यह व्यवस्था पूरी तरह कारगर नहीं हो सकी है। हालांकि जिम्मेदारों का कहना है कि इसके लिए जल्द ही नए सिरे से प्रयास किए जाएंगें, ताकि गांवों को प्लास्टिक कचरे से मुक्त करते हुए आय में भी बढ़ोत्तरी की जा सके। इससे लोगों को काफी लाभ मिलेगा। वहीं कचरा मुक्त गांव भी हो सकेंगे।

अमृत विचार

बरेली, मंगलवार, 30 दिसंबर 2025

पीलीभीत

क्षतिग्रस्त पुल की दीवार तोड़ी कर रहे जोखिम भरा सफर

माधोटांडा रोड पर पुल में आई दरार के बाद रोका गया था आवागमन

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: क्षतिग्रस्त सड़कों की बदहाली दूर करने के लिए शासन स्तर से स्वीकृति के तमाम दावे आए दिन जनप्रतिनिधियों के स्तर से किए जा रहे हैं। हर कोई विकास से जोड़कर इसे बयां कर रहा है। मगर, क्षतिग्रस्त हुए पुलों का सुधार लंबे समय बाद भी नहीं हो सका है। शुरुआत में आवागमन रोकने के लिए पिलर खड़े किए गए और दीवार बना दी गई थी। इसकी निगरानी भी कराई जा रही थी। मगर अब निगरानी कोई नहीं है। राहगीरों ने भी बनवाई गई दीवार तोड़कर रास्ता बना लिया है और जान जोखिम में डालकर सफर कर रहे हैं।

बता दें कि कलीनगर तहसील क्षेत्र में बाइफरकेशन से हरदोई ब्रांच नहर निकली है। इस नहर पर ब्रिटिश काल के दौरान 04 पुल बनवाए गए थे। सात मार्च को हरदोई ब्रांच नहर पर डगा गांव के पास बने करीब 100 वर्ष पुराने पुल में दरार दिखाई दी थी। पुल में आई दरार के बाद सुरक्षा की दृष्टि से इसके दोनों तरफ दीवार खड़ी कर आवागमन बंद कराया गया, ताकि कोई अनहोनी न हो। बताते हैं कि दो-तीन बाद ही आवागमन बंद करने को बनाई गई दीवार तोड़ दी गई। इसके बाद से तमाम बाइक सवार और अन्य राहगीर इसी क्षतिग्रस्त पुल से गुजर रहे हैं। करीब दस माह बीत चुके हैं, लेकिन अभी इन पुलों का सुधार नहीं हो सका है। इसके अलावा क्षेत्र का एक और पुराना पुल क्षतिग्रस्त होने पर आवागमन बंद कराया गया। उसका भी सुधार नहीं हो सका है। पीलीभीत से माधोटांडा तक सफर करने वाले बड़ी संख्या में राहगीर है। बड़े वाहन तो नहर से सटी सड़क से होकर सफर कर रहे हैं। मगर जब लंबे समय बाद भी सुधार नहीं हुआ तो दुपहिया वाहन चालक और पैदल सफर करने वालों ने अपना रास्ता खुद बना लिया। शुरुआत में कुछ दिन यहां पर पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई थी। निगरानी भी चलती रही और अब तो कोई निगरानी नहीं है। बनवाई गई दीवार का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और फिर जोखिम भरा सफर किया जा रहा है। उसी रास्ते से बाइकर्स निकल रहे हैं।

माधोटांडा मार्ग पर क्षतिग्रस्त पुल पर टूटी दीवार के बीच से गुजरते बाइक सवार।

- सुधार और निर्माण की नहीं हो सकी शुरुआत, निगरानी भी भूले जिम्मेदार

कोहरे में रात के वक्त हादसे का भी डर

इन दिनों सर्दी में कोहरे की दस्तक बढ़ चुकी है। घने कोहरे के बीच क्षतिग्रस्त पुलिया, आधू अधूरे निर्माण और क्षतिग्रस्त पुल के दौरान राहगीरों को लंबा सफर तो तय करना ही पड़ रहा है। वहीं, कोहरे के बीच हादसे का डर भी बना हुआ है। रात के वक्त इस मार्ग पर रोशनी के भी पुख्ता इंतजाम नहीं है ऐसे में राहगीरों को काफी दिक्कत हो रही है।

दो युवतियां प्रेमी संग फरार, 11 पर एफआईआर दर्ज

खुटार, अमृत विचार: क्षेत्र के दो अलग-अलग गांव से एक विवाहिता और एक युवती अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई। घटना में दोनों युवतियों के परिजनों की ओर से ज्यादा लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। क्षेत्र के एक गांव में रहने वाले एक व्यक्ति ने दर्ज कराई गई रिपोर्ट में बताया कि गांव में रहने वाले सत्यम कुमार का उसकी पत्नी से प्रेम प्रसंग चल रहा था।

जिसे वह अपने पारिवारिक नन्हे, श्यामू, राजू और अपनी मां के सहयोग से बहला फुसलाकर भगा ले गया। पुलिस ने सत्यम समेत पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज का जांच शुरू कर दी है। इसी तरह एक दूसरे गांव में रहने वाले एक व्यक्ति ने दर्ज कराई गई रिपोर्ट में बताया कि उसकी 15 वर्ष की भतीजी को गांव में रहने वाला कुलदीप कुमार बहला फुसलाकर भगा ले गया। इससे पूर्व भी कुलदीप दो बार उसकी भतीजी को भाग चुका है। जिसका मुकदमा थाने में दर्ज कराया गया था। पुलिस ने किशोरी को बरामद कर परिजनों के सुपुर्द कर दिया था। 20 दिसंबर को एक बार फिर कुलदीप अपने साथी सुरजीत, हीरालाल, प्रदीप परशुराम और श्री कृष्ण के सहयोग से भगा ले गया।

बाल विवाह के दुष्परिणाम बताकर किया जागरूक

जागरुकता कार्यक्रम में जिला समन्वयक व अन्य। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत कई बिंदुओं पर चर्चा

अमृत विचार: जिला विधिक सेवा प्राधिकरण व जिला प्रोबेशन अधिकारी के निर्देशन में बीएसए कार्यालय स्थित एक्सीलेटर लर्निंग केंद्र में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें दिव्यांग बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त स्पेशल एजुकेटर के साथ बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत कई बिंदुओं पर चर्चा की गई।

महिला कल्याण विभाग के कर्मचारियों द्वारा बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में बताया गया। अनुरोध किया गया कि अगर कहीं बाल विवाह होने की जानकारी प्राप्त हो तो चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 पर सूचना दें।

संबंधित थाने को अवगत कराया जा सकता है। ताकि बाल विवाह रोक जा सके। कार्यक्रम में शून्य से 18 वर्ष के दिव्यांग बालक,बालिकाओं को विभाग से संचालित मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना सामान्य एवं स्पॉन्सर (प्रवक्ता) कार्यक्रम योजना, कन्या सुमंगला योजना के सम्बन्ध में जानकारी दी गई। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग से जिला समन्वयक राकेश पटेल भी मौजूद रहे।

अंतर्राज्यीय बदमाश को मुठभेड़ में लगी गोली

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: राष्ट्रीय राजमार्ग पर पुलिस मुठभेड़ में गोली से घायल अंतर्राज्यीय हिस्ट्रीशीटर सईद उर्फ बंजारा पर हत्या की कोशिश, गैंगस्टर, चोरी आदि के 61 मुकदमे बरेली, सीतापुर, लखीमपुर खीरी आदि जिलों में मुकदमे दर्ज है।

पुलिस ने आरोपी बदमाश को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया। चौक कोतवाली प्रभारी निरीक्षक अश्वनी कुमार सिंह को रविवार देर रात सूचना मिली कि अंतर्राज्यीय शातिर बदमाश और हिस्ट्रीशीटर सईद उर्फ बंजारा निवासी ककरा थाना निगोही हाईवे पर बाइक लिए खड़ा है। जो मंघई टोला के पीछे डेयरियों से पशु चोरी की रैकी कर रहा है। पुलिस ने घेराबंदी की तो उसने टीम पर फायरिंग की। पुलिस ने आत्मरक्षा पर के लिए फायर किए, जिससे शातिर बदमाश बंजारा के एक पैर में गोली लगने से घायल हो गया था। पुलिस ने घायल बदमाश को मेडिकल कॉलेज में इलाज कराने के बाद चालान कर दिया।

ईओ आवास की भूमि पर बनेंगी दुकानें, पालिका की बढ़ेगी आय

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

- बोर्ड बैठक में सर्वसम्मति से पारित किया प्रस्ताव, कई अन्य बिंदुओं पर भी चर्चा
- पालिका सभागार में अधिशासी अधिकारी की मौजूदगी में मासिक बोर्ड बैठक हुई

अमृत विचार: समाजवादी पार्टी के कब्जे से खाली कराए गए ईओ आवास की भूमि पर दुकानों का निर्माण कराया जाएगा। एक अन्य स्थान की भूमि पर भी दुकानें बनवाई जाएंगी। जिससे पालिका की आय बढ़ेगी। बोर्ड बैठक में इसे लेकर प्रस्तावित सर्वसम्मति से पारित किया गया। इसके अलावा भी कई बिंदुओं पर चर्चा की गई।

नगर पालिका सभागार में सोमवार शाम अधिशासी अधिकारी संजीव कुमार की मौजूदगी में मासिक बोर्ड बैठक संपन्न हुई। इसकी अध्यक्षता चेयरैमन डॉ. आस्था अग्रवाल ने की। शहर के विकास एवं प्रशासन से जुड़े महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। नगर की सफाई व्यवस्था, जलापूर्ति, पथ प्रकाश, कर निर्धारण, निर्माण कार्यों की प्रगति सहित कई बिंदु शामिल रहे। नगर में नल के नए बोरिंग, री-बोरिंग, वार्डों में सड़कों व नालियों की मरम्मत कराए जाने के प्रस्तावों पर भी सहमति बनी। चेयरमैन द्वारा नगर पालिका की आय बढ़ाने से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव सदन के समक्ष रखा गया। प्रस्ताव के तहत नकटादाना चौराहा स्थित अधिशासी अधिकारी आवास की भूमि, जिसे पूर्व में समाजवादी पार्टी कार्यालय से कब्जा मुक्त कराया गया था, दूधिया मंदिर रोड स्थित पालिका की भूमि-जहां वर्तमान में नलकूप आदि स्थापित हैं। दोनों खाली पड़ी संपत्तियों पर दुकानें निर्माण कर किराए पर देने का सुझाव दिया गया। पालिकाध्यक्ष ने बताया कि जनहित एवं पालिकाहित को ध्यान में रखते हुए इन संपत्तियों पर दुकानें बनाकर उनका एलॉटमेंट के माध्यम से किराया उठाया जाना चाहिए। जिससे नगर के विकास को गति मिलेगी और पालिका की आय में स्थायी वृद्धि होगी। उन्होंने यह भी कहा कि सीमित बजट की स्थिति को देखते हुए शासन की किसी योजना या पीपीपी मॉडल (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) के तहत दुकानों का निर्माण कर नियमानुसार किराये पर दिया जा सकता है। प्रस्ताव पर सभी सभासदों ने सकारात्मक विचार रखते हुए इसे नगरहित में आवश्यक बताया। विस्तृत चर्चा के बाद बोर्ड बैठक में उक्त प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया।

बोर्ड बैठक में चेयरमैन डॉ. आस्था अग्रवाल, ईओ संजीव कुमार व अन्य।

इस मौके पर सभासद गोकुल प्रसाद मौर्य, साकेत सक्सेना, वतनदीप मिश्रा, विपिन कुमार राजू फौजी, निर्मल सिंह टीटू, अनस अंसारी, राशिद हुसैन, मो. शरीफ, निजाकत अली कादरी, इकबाल हजरत, शैलेंद्र कौर, शबनम, जाहिदा बी, शिखा वर्मा, पुष्पा उपाध्याय, रत्ना शुक्ला, मेहनाज बेगम, पल्लवी, श्यामलता, उषा देवी, एहतश्याम वली खां, सुरेश लोधी, राजेंद्र भारती, शिवम श्रीवास्तव, चैतन्य गंगवार, राज्यमंत्री के नगर पालिका प्रतिनिधि राकेश सिंह आदि मौजूद रहे।

पानीपत में तिलहर क्षेत्र के युवक की हत्या

संवाददाता, तिलहर

अमृत विचार : तिलहर क्षेत्र के गांव फतेहपुर बुजुर्ग उर्फ मोहद्दीपुर निवासी राकेश कुमार मौर्य पुत्र केदार उम्र 35 की हरियाणा के पानीपत में हत्या कर दी गई। राकेश लंबे समय से पानीपत में मजदूरी करता था। जसदीप कॉलोनी नूरवाला में अपने साथियों के साथ किराए पर रह रहा था। रविवार देर शाम एक दबंग ने उस पर पेचकस से हमला कर दिया। हमला इतना गंभीर था कि पेचकस गर्दन में श्वास नली तक जा घुसा। चीख-पुकार सुनकर साथियों ने राकेश को निकटतम अस्पताल पहुंचाया, जहां उसने दम तोड़ दिया। घटना की जानकारी मिलने पर तिलहर कस्बा के मोहल्ला निजामगंज में रह रहे मृतक के भाई सोनपाल को सूचना दी गई। खबर मिलते ही परिजन रात में ही पानीपत के लिए रवाना हो गए। मृतक के परिवारी धर्मेंद्र कुमार मौर्य ने बताया कि करीब दो दशक पहले राकेश का हाथ चारा मशीन से कट गया था, जिसके बाद वह पानीपत जाकर मजदूरी करने लगा था। वह बाहर से आने वाले कपड़ों की लोडिंग और अनलोडिंग का काम करता था। राकेश अविवाहित था। धर्मेंद्र कुमार मौर्य ने बताया कि जसदीप कॉलोनी निवासी अमन पुत्र सोमपाल एक पखवाड़े पहले ही जेल से बाहर आया था। राकेश के किसी साथी से उसका पहले विवाद हुआ था। रविवार रात राकेश की हत्या कर दी गई।

श्रद्धालुओं ने कथा का किया रसपान

कथा सुनाते गौरवानंद जी महाराज।

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

कथा सुनने के लिए पहुंचे श्रद्धालु। ● अमृत विचार

- अमृतमयी श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन जुटे श्रद्धालु

अमृत विचार: शहर के एक बरात घर में चल रही अमृतमयी श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन सोमवार को भी श्रद्धालु पहुंचे और कथा का रसपान किया। अंत में प्रसाद वितरण किया गया।

कथा व्यास गौरवानंद जी महाराज ने कहा कि एक बार प्रभु के लिए त्याग करके देखो। प्रभु इससे दस गुना ज्यादा फल देते हैं। बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न होई। बिना सत्संग के ज्ञान नहीं मिलता और ये प्रभु की कृपा के बिना संभव नहीं होता है। इसके असर से ही मानव अच्छाई और बुराई के रास्ते पर चलता है। इसलिए मानव को सत्संग को अपनाकर ज्ञान, वैराग, और भक्ति का रास्ता चुनना चाहिए। आज के युग में सत्संग और नाम जप करना मानव जीवन के कल्याण में एंटीवायरस की तरह काम करता है। इस मौके पर रवि श्रीवास्तव, राजेन्द्र आचार्य, एचएन वर्मा, अवनीश पांडेय, कांतिस्वरूप पांडेय, अजीत, ममता शुक्ला, हितेश भटनागर, मनमोहन पालीवाल, सौरभ, संजय त्रिपाठी, कृष्णदेव शुक्ला, हरिवंश, अजय सैनी, बिट्टा, मुस्कान, राकेश गुप्ता, आदि मौजूद रहे।

शीतलहर

सोमवार को न्यूनतम पारा रहा छह डिग्री, चलती रही बर्फीली हवाएं

दिन भर नहीं निकली धूप, छाया रहा घना कोहरा

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार : तराई में ठंड ने अब अपने तीखे तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। जिले में कोहरे और शीतलहर ने जनजीवन को प्रभावित कर दिया है। तापमान में आई अचानक गिरावट और घनी धुंध के चलते हालात ऐसे बन गए हैं कि दिन में भी सड़कों पर वाहनों को हेडलाइट जलाकर चलना पड़ रहा है। विशेषज्ञों की मानें तो नए साल को ठंड बढ़ सकती है। जिसका असर जनवरी के पूरे सप्ताह देखने को मिलेगा।

बता दें कि पीलीभीत समेत तराई के जिलों में मौसम का मिजाज लगातार बिगड़ता जा रहा है। सोमवार को पारा लुढ़ककर सात डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। बर्फीली पछुआ हवाओं के चलते गलन और बढ़ गई है। सुबह और शाम के समय पूरा शहर कोहरे की सफेद चादर में ढक जा रहा है, जिससे आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। लोग ठंड से बचाव के लिए अलाव, हीटर और गर्म कपड़ों का सहारा लेने को मजबूर हैं। चार दिनों से धूप नहीं निकल रही है। कोहरे का असर यातायात पर भी साफ नजर आ रहा है। हाईवे और संपर्क मार्गों पर दृश्यता बेहद कम हो गई है। पीलीभीत-बरेली हाईवे पर दृश्यता घटकर 30-40 मीटर तक रह गई, जिससे वाहनों की गति थम गई। वाहन चालक हेडलाइट और इंडिकेटर जलाकर रेंगते हुए आगे बढ़ते दिखे। नदियों के तटीय इलाकों में दृश्यता लगभग शून्य तक पहुंच गई। कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार नमी और पछुआ हवाओं के कारण शीतलहर और विकराल हो सकती है, जिससे न्यूनतम तापमान में और गिरावट आने की संभावना है। सोमवार को अधिकतम तापमान 18 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम सात डिग्री दर्ज किया गया है। जोकि रात में पांच तक पहुंच रहा है। ठंड की वजह से सरकारी कार्योलयों और बाजार में भी सन्नाटा पसर रहा है। सड़कों पर राहगीर भी वाहनों पर गर्म कपड़ों से खुद का लपेट कर निकल रहे हैं। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि नए साल के शुरुआती दिनों में शीतलहर और बर्फीली हवाओं का असर रहेगा।

रात में हाईवे पर छाया कोहरा। ● अमृत विचार

गर्म कपड़ों से खुद को लपेटकर वाहनों से निकले राहगीर। ● अमृत विचार

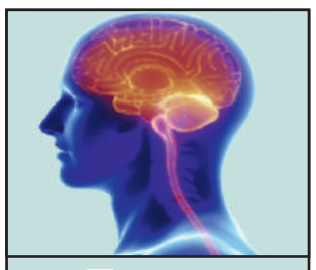

बरेली न्यूरो एण्ड स्पाईन सुपर स्पेशलिटी सेंटर

डा. मोहित गुप्ता

M.Ch. Neurosurgery (AIIMS) Senior Consultant Neurosurgeon

मस्तिष्क एवं रीढ़ रोग विशेषज्ञ

Reg. No. UPMCI 65389

सुविधायें

- सिर की चोट का इलाज व आपरेशन
- रीढ़ की हड्डी की चोट का इलाज व आपरेशन
- ब्रेन ट्यूमर, दिमागी की गांठ तथा ब्रेन हेमरेज का आपरेशन
- दूरबीन विधि द्वारा हाइड्रो सिफेलस (दिमाग में पानी भरना) का इलाज व आपरेशन
- सिर दर्द (माइग्रेन) व मिर्गी के दौरे का ईलाज
- दिमाग के फोड़े का इलाज व आपरेशन
- गर्दन (सर्वाइकल) व पीठ का दर्द, सियाटिका, स्लिम डिस्क का ईलाज व ऑपरेशन
- रीढ़ की नस का ट्यूमर (स्पाइनल ट्यूमर) का आपरेशन
- बच्चों के पीठ की गांठ का आपरेशन
- अत्याधुनिक माइक्रोस्कोप द्वारा ईलाज
- रीढ़ की हड्डी व दिमाग की टी.बी. का इलाज व ऑपरेशन
- लकवा तथा पैरालायसिस का इलाज

बरेली न्यूरो एण्ड स्पाइन सुपर स्पेशलिटी सेन्टर

सी-427, डिवाइन अस्पताल के सामने, के.के. अस्पताल रोड, राजेन्द्र नगर, बरेली

समय : प्रातः 10 12 बजे तक एवं सायं 6 से 8 बजे तक

लकवा के मरीजों के लिए 24 घंटे इमरजेंसी हेल्पलाइन नंबर

7017678157, 8077790358

7417389433, 9897287601

MEDICAL Lifelines OF BAREILLY

अमृत विचार

विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय

राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005

बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...

नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ

- 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
- बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
- आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
- कैशलेस ईलाज

डॉ. नितिन अग्रवाल

एम.डी. (गोल्ड मेडलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)

हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777

2D ECHO + TMT

हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल

APPLE CARDIAC CARE DR. NITIN AGARWAL'S HEART CLINIC

ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448

प्रसूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ

डा. दीक्षा गंगवार

एम.बी.बी.एस., डी.जी.ओ. (गोल्ड मेडलिस्ट)

(के.जी.एम.यू. लखनऊ)

निःशुल्क परामर्श हेतु संपर्क करें

+91 78952 78992

समय : प्रातः 9 से 10 बजे तक, सायं 4 से 5 बजे तक

पता : स्व. केसर सिंह गंगवार कार्यालय, अशर्फी बैंकट हाल, 100 फुटा रोड, बरेली

डॉ. हारिस अंसारी

एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)

Consultant Urologist & Andrologist

गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन

- प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP)
- गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL)
- गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL)
- पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज

कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल

डॉ. एम. खान हॉस्पिटल

मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली

समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 9897838286

न्यूज ब्रीफ

ब्राउन शुगर के साथ नेपाली बाल अपचारी गिरफ्तार

पलिया कलां, अमृत विचार : कोतवाली गौरीफंटा व एसएसबी टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए नेपाल के जुगेड़ा धनगढ़ी निवासी एक किशोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके पास से 7 .07 ग्राम ब्राउन शुगर बरामद होने का दावा किया है। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस ने आरोपी का चालान भेजा है।

देवी-देवताओं पर अभद्र टिप्पणी करने का आरोपी गिरफ्तार

मझगईं, अमृत विचार : थाना मझगईं पुलिस ने हिंदू देवी-देवताओं के खिलाफ अभद्र टिप्पणी करने वाले आरोपी किस्मत अली पुत्र सफीक अली निवासी दौलतापुर थाना मझगई को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी का चालान भेजा है। बता दें कि रविवार को बजरंगदल, विहिप आदि के कार्यकर्ता आरोपी के गांव पहुंचे थे और रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी की गिरफ्तारी की मांग को लेकर जमकर प्रदर्शन किया था। इसके बाद हरकत में आई पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर रिपोर्ट दर्ज की थी।

जीडी गोयनका में वार्षिक उत्सव आज

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचार : नगर की बांकेगंज रोड स्थित जीडी गोयनका स्कूल में सृजन थीम पर आधारित वार्षिकोत्सव, एरोबे लैब का शुभारंभ आज होगा। प्रबंध समिति के अतुल अग्रवाल ने बताया कि वार्षिकोत्सव के मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार में कारागार मंत्री सुरेश राही होंगे।

तमंचे के साथ दो युवक को किया गिरफ्तार

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : थाना नीमगांव पुलिस ने थाना हैदराबाद के गांव वांसविरिया निवासी जनीफ अली और थाना मितौली के गांव कस्ता निवासी बबलू को गिरफ्तार किया है। एसओ प्रवीर कुमार गौतम ने बताया कि पुलिस ने दोनों आरोपियों के पास से दो 315 बोर के तमंचे, दो जिंदा कारतूस व एक खोखा कारतूस बरामद किया है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर दोनों आरोपियों का चालान भेजा है।

किशोरी की मौत पर भड़के परिजन, लापरवाही का आरोप

तड़पती रही मरीज, बुलाने पर भी नहीं पहुंचे डॉक्टर और स्टॉफ, गुस्साए मृतका के परिजनों ने जिला अस्पताल गेट पर शव रखकर किया हंगामा

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

सीएमएस आरके कोली से बातचीत करते ब्लॉक प्रमुख नकहा पवन गुप्ता। ● अमृत विचार

जिला अस्पताल में बिलखते मृतका के परिजन। ● अमृत विचार

जिला अस्पताल गेट पर पुलिस व भीड़। ● अमृत विचार

अमृत विचार: मोतीपुर स्थित जिला अस्पताल में रविवार को भर्ती एक किशोरी की सोमवार सुबह इलाज के दौरान मौत हो गई। मौत के बाद आक्रोशित परिजनों ने अस्पताल गेट पर शव रखकर जमकर हंगामा किया। किशोरी की मां चीख चीख कर कह रही थी कि वह डॉक्टरों को बुलाने गई, लेकिन कोई उसकी बिट्टू को देखने नहीं आया। बिट्टू ने तड़प कर दम तोड़ दिया। इससे नाराज परिजनों ने शव अस्पताल के गेट पर रखकर हंगामा शुरू कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने समझाने की कोशिश की, लेकिन परिजन नहीं माने। करीब दो घंटे चले हंगामे के बाद एसपी संकल्प शर्मा और ब्लॉक प्रमुख नकहा के पहुंचे और कार्रवाई का आश्वासन दिया। तब जाकर परिजन शांत हुए।

थाना खमरिया के गांव ऊंचागांव महतव पुरवा निवासी कौशलेंद्र वर्मा ने बताया कि उनकी 14 वर्षीय पुत्री प्राची को रविवार को बुखार आया था। इसके बाद वह अपनी पत्नी पुष्पा देवी के साथ रविवार दोपहर करीब दो बजे बच्ची को जिला अस्पताल की इमरजेंसी में लेकर पहुंचे। कुछ देर बाद बच्ची को सेकेंड फ्लोर स्थित महिला मेडिकल वार्ड में भर्ती कर दिया गया। आरोप है कि भर्ती के बाद कोई भी डॉक्टर बच्ची को देखने नहीं आया, केवल एक कंपाउंडर द्वारा ड्रिप लगा दी गई। परिजनों का आरोप है कि सोमवार की तड़के जब किशोरी की हालत गंभीर हो गई तो वे डॉक्टर-डॉक्टर चिल्लाते रहे, लेकिन कोई चिकित्सक मौके पर नहीं पहुंचा। किशोरी की मां सिस्टर कक्ष में

● अस्पताल में शर्मसार हुई मानवता लोगों ने में दिखा रोष

गई, लेकिन फिर भी कोई नहीं देखने आया।

मृतका के मामा ललित वर्मा निवासी कलिका पूर्वा ने बताया कि सुबह जब भांजी की तबीयत बिगड़ी तो उन्होंने कई बार स्टाफ से डॉक्टर बुलाने को कहा, लेकिन केवल एक कंपाउंडर आया, कोई डॉक्टर नहीं पहुंचा। इसके बाद बच्ची की मौत हो गई। मौत के बाद जब परिजनों ने शव ले जाने के लिए स्ट्रेचर मांगा तो अस्पताल में स्ट्रेचर तक उपलब्ध नहीं कराया गया। इससे आक्रोशित परिजनों ने किशोरी के शव को गोद में उठाकर अस्पताल के मुख्य गेट पर रख दिया और हंगामा शुरू कर दिया। सूचना पर जिला अस्पताल चौकी व ओयल पुलिस मौके पर पहुंची।

बाद में एसओ खीरी निराला तिवारी के साथ ही सीओ सिटी सीओ सिटी विवेक तिवारी भी पहुंचे, लेकिन परिजन कार्रवाई की मांग पर अड़े रहे। लगभग दो घंटे चले हंगामे के बाद ब्लॉक प्रमुख नकहा पवन गुप्ता और एसपी संकल्प शर्मा मौके पर पहुंचे। उन्होंने परिवार वालों को हस्तक्षेप और कार्रवाई का आश्वासन देकर शांत कराया। इसके बाद शव को मृतका के गांव भेज दिया गया। घटना के बाद जिला अस्पताल की कार्यप्रणाली और स्वास्थ्य सेवाओं पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। सूचना मिलने पर नकहा ब्लॉक प्रमुख पवन गुप्ता और पुलिस अधीक्षक संकल्प शर्मा भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। काफी देर तक समझाने-बुझाने के बाद परिजन राजी हुए। परिजनों ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दिया और शव वाहन से शव लेकर घर चले गए। घटना के बाद से जिला अस्पताल की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। लगातार हो रही मौतों और परिजनों के आरोपों ने स्वास्थ्य विभाग की व्यवस्थाओं को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

> परिवार वालों ने लापरवाही का आरोप लगाया है। इसकी जांच कराई जा रही है। यदि किसी तरह की कोई लापरवाही सामने आती है तो कार्रवाई की जाएगी।
> - डॉ. आरके कोली सीएमएस जिला अस्पताल

मां बोलीं- जवाब दे देते तो बिट्टू को बचा लेते

जिला अस्पताल में प्राची वर्मा की मौत से उसकी मां का रो-रोकर हाल बेहाल है। वह बिलखते हुए चीख चीख कर कह रही थी कि अगर डॉक्टर जवाब दे देते तो उसकी बिट्टू की जान नहीं जाती। वह कहीं और उसका इलाज करवा लेती। मां पुष्पा चीख-चीख कर कह रही थी कि वह कई बार सिस्टर रूम में गई। मेडम ब्लोअर जलाकर सोती रहीं। जगाने के बाद भी वह न तो उनकी बिट्टू को देखने आईं और न ही कोई डॉक्टर पहुंचा। उनका कहना है कि एक रुपये में यहां पर्चा बनता है। शायद इसलिए ही इलाज नहीं है। अगर आठ सौ रुपये का पर्चा बनता तो उपचार हो जाता।

जिला अस्पताल के सर्जन को गिरफ्तार करने की मांग

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

● पूर्व बार कौंसिल अध्यक्ष ने डीएम कार्यालय में सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार: जिला अस्पताल में डॉक्टर पर 15 हजार रुपये मांगने से आहत किशोरी के शैंपू पीए जाने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। बार कौंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष अजय कुमार शुक्ला ने आरोपी डॉक्टर और उसके सहयोगी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर गिरफ्तारी की मांग उठाई है। इसको लेकर उन्होंने सोमवार को मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन डीएम कार्यालय पर अतिरिक्त मजिस्ट्रेट को सौंपा। ज्ञापन में आरोप लगाया गया कि मरीज के तीमारदार की बहन सौम्या शर्मा से पहले ऑपरेशन के नाम पर 12,500 रुपये वसूले गए, जबकि मात्र 400 रुपये की रसीद दी गई।

बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश के सदस्य एवं पूर्व चेयरमैन अजय कुमार शुक्ल ने बताया कि इसके बाद दूसरे ऑपरेशन के लिए 15,000 रुपये की अतिरिक्त मांग की गई। राशि न देने पर तीमारदार को विभिन्न तरीकों से प्रताड़ित किया गया और अस्पताल से डिस्चार्ज करने की धमकी दी गई। मानसिक उत्पीड़न से क्षुब्ध होकर सौम्या शर्मा ने आत्महत्या का प्रयास किया। अधिवक्ता महासंघ का कहना है कि इससे यह स्पष्ट होता है कि पहले ऑपरेशन में तीमारदार से अवैध रूप से 12,500 रुपये वसूले गए और ऑपरेशन सरकारी फंड से कराकर धन का गबन किया गया। अधिवक्ता महासंघ के उपाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह सूर्यवंशी ने चेतावनी दी शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन किया जाएगा।

टोल प्लाजा कर्मियों को दी अग्नि सुरक्षा की जानकारी

मैगलगंज, अमृत विचार: मैगलगंज टोल प्लाजा पर टोल कर्मचारियों की सुरक्षा एवं अग्नि सुरक्षा को लेकर एक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कर्मचारियों को आपात स्थिति में बचाव के उपाय, अग्निशमन उपकरणों के सही उपयोग व सुरक्षित कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई। यह प्रशिक्षण परियोजना प्रबंधक अंजनी कुमार के निर्देश पर आयोजित किया गया। इसमें टोल मैनेजर बृजेश सिंह, रामू सिंह, सेफ्टी मैनेजर संदीप सिंह एवं सेफ्टी ऑफिसर मोहम्मद मासूम रजा आदि मौजूद रहे। अधिकारियों ने कर्मचारियों को आग लगने की स्थिति में घबराने के बजाय संयम बरतते हुए त्वरित और सही कदम उठाने की सलाह दी।

दृढ़ निश्चय व राष्ट्र के प्रति समर्पण के प्रतीक थे अटल

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

जनशताब्दी समारोह को संबोधित करते प्रदेश मंत्री अभिजात मिश्रा और मंचासीन भाजपाई।

● जनशताब्दी समारोह में अटल के विचारों को आत्मसात करने का प्रदेश मंत्री ने किया आह्वान

अमृत विचार: भाजपा प्रदेश मंत्री अभिजात मिश्रा ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी देश के स्वयंसेवक से लेकर प्रधानमंत्री बनने तक अटल सिद्धांत, दृढ़ निश्चय और राष्ट्र के प्रति समर्पण के प्रतीक रहे। अटल को राष्ट्र गौरव, अजातशत्रु, महानायक और हिंदुत्व पुरोधा जैसे विशेषण यूं ही नहीं मिले, बल्कि उनके जीवन और कृतित्व ने उन्हें एक अटल व्यक्तित्व बनाया।

प्रदेश मंत्री भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी पर जिला पंचायत सभागार में आयोजित अटल जनशताब्दी समारोह के अंतर्गत अटल स्मृति व एसआई (स्पेशल इंटेंसिव) सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाने का साहसिक निर्णय लिया। पोखरण में हुए परमाणु परीक्षण के बाद अमेरिका सहित कई देशों ने आर्थिक प्रतिबंध लगाए, लेकिन अटल के इरादे अडिग रहे और भारत विश्व पटल पर एक मजबूत शक्ति के रूप में उभरा। कारगिल युद्ध के दौरान पाकिस्तान की सेना को मुंहतोड़ जवाब देकर देश की सीमाओं की रक्षा की गई।

इससे पहले सदर विधायक योगेश वर्मा ने कहा कि एसआई अभियान पार्टी का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। सभी मंडल अध्यक्षों, जिला पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को पूरी लगन से पात्र मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जुड़वाने और अवैध घुसपैठियों के नाम कटवाने का कार्य करना चाहिए।

कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए जिलाध्यक्ष सुनील सिंह ने कहा कि आज भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और विकास के नए-नए सोपान स्थापित कर रहा है। गोष्ठी से पूर्व जिला पंचायत परिसर में अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि ने किया। संचालन कार्यक्रम संयोजक अरविंद गुप्ता ने किया। सम्मेलन में कुलभूषण सिंह, आशू मिश्रा, रामजी मौर्य, संतोष कुमारी, अनुपम अवस्थी, जिला मीडिया प्रभारी रमेश चंद्र मिश्र, रामजी दीक्षित, कार्यक्रम के सहसंयोजक अजय अवस्थी, महिला आयोग की सदस्य सुजाता कुमारी आदि मौजूद रहे।

मकान में हैं अतिरिक्त कमरे तो बढ़ाएं इनकम

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

- **लखीमपुर खीरी, पीलीभीत और बहराइच जिले में मकान मालिकों के लिए सुनहरा मौका**
- **जिसे तेजी से पर्यटकों की संख्या बढ़ी, उसी गति से आवासीय सुविधाओं की मांग भी बढ़ी**

अमृत विचार: जिस तेजी से पर्यटकों की संख्या बढ़ी है, उसी गति से आवासीय सुविधाओं की मांग बढ़ी है। लखीमपुर खीरी, पीलीभीत और बहराइच में वन्यजीव अभयारण्यों के निकटवर्ती स्थानों में रहने वाले निवासियों के लिए एक नई संभावनाएं विकसित हो रही है।

स्थानीय निवासी अपने मकानों के अतिरिक्त कमरे पर्यटकों को उपलब्ध कराकर अच्छी इनकम प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए पर्यटन विभाग बेड एंड ब्रेकफास्ट एवं होमस्टे नीति-2025 लेकर आया है, जिसमें पंजीकरण सरल और सुलभ है।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि हमारा प्रयास है कि अधिक से अधिक लोग उत्तर प्रदेश बेड एंड ब्रेकफास्ट एवं होमस्टे नीति-2025 का लाभ उठाएं। पर्यटन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और स्थानीय सहभागिता को बढ़ावा देने की दिशा में बेड एंड ब्रेकफास्ट एवं होमस्टे नीति आम नागरिकों के लिए एक सुनहरा अवसर बनकर उभरी है। अब यदि आप अपने घर के किसी हिस्से को पर्यटकों के लिए उपयोग में लाना चाहते है, तो यह नीति न केवल आपको सम्मानजनक अतिरिक्त आय उपलब्ध कराती है, बल्कि सरकार की ओर से रियायतें, व्यावसायिक प्रशिक्षण और व्यापक प्रचार-प्रसार जैसी सुविधाओं के माध्यम से आपके प्रयासों को सशक्त भी बनाती है। **नीति के अंतर्गत पात्र इकाइयां शहरी होमस्टे :** ऐसे आवासीय भवन, जिनमें भूस्वामी स्वयं निवास करता हो एवं उसके पास अपने प्रयोग के बाद अतिरिक्त कक्ष उपलब्ध हो, जिन्हें यह पर्यटकों को आवास हेतु उपलब्ध कराना चाहे। ऐसे कक्षों की संख्या अधिकतम 06 हो सकती है, अर्थात कुल 12 बेड की व्यवस्था किसी एक आवासीय इकाई में हो सकती है।

बेड एंड ब्रेकफास्ट (बी एंड बी)

पर्यटन विभाग द्वारा बेड एंड ब्रेकफास्ट (बी एंड बी) इकाइयों से जुड़ी व्यवस्था को स्पष्ट किया गया है। ऐसे आवासीय भवन, जिनमें भूस्वामी स्वयं निवास न करता हो एवं उसके पास 01 से 06 तक कमरे उपलब्ध हो, जिन्हें वह पर्यटकों को आवास हेतु उपलब्ध कराना चाहे। ऐसे कमरों की संख्या अधिकतम 06 (कुल 12 बेड) हो सकती है। बी एंड बी इकाई में एक केयरटेकर रखना अनिवार्य होगा, जो इकाई के रखरखाव एवं संचालन का कार्य करेगा।

ग्रामीण होमस्टे

ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे आवासीय भवन, जिनमें भूस्वामी स्वयं निवास करता हो एवं उसके पास अपने प्रयोग के बाद कुछ कक्ष उपलब्ध हों, जिन्हें वह पर्यटकों को आवास हेतु उपलब्ध कराना चाहे, ऐसे कक्षों की संख्या 06 (कुल 12 बेड) तक हो सकती है।

पंजीकरण प्रणाली

बी एंड बी एवं होम स्टे नीति के अंतर्गत इकाइयों का पंजीकरण एक सरल और पारदर्शी ऑनलाइन प्रक्रिया है। नई और पहले से संचालित दोनों प्रकार की इकाइयां निर्धारित पोर्टल पर जाकर आसानी से पंजीकरण करा सकती हैं। इससे पर्यटन विभाग के रिकॉर्ड में आपकी इकाई शामिल हो जाती है और नीति के सभी लाभ आपको प्राप्त होते हैं। पंजीकरण हेतु आधिकारिक पोर्टल https://up-tourismportal.in/application/bnb/login है।

ई-रिक्शा पलटने से सात माह के बच्चे की जान गई

धौरहरा, अमृत विचार: गोंडा जनपद की मूल निवासी घुमंतू जाति की कुसुमी पत्नी बावर अन्य लोगों के साथ ई रिक्शा में सवार होकर धौरहरा आ रही थी। सोमवार दोपहर सिनेमा चौराहा के पास घने कोहरे के चलते चालक नियंत्रण खो बैठा, जिससे ई रिक्शा पलट गया। हादसे में बावर का सात माह का पुत्र ई रिक्शा के नीचे दब गया, जिससे उसकी मौत हो गई, जबकि कुसमी और उसका पति बावर को भी चोटें आईं। सूचना मिलते ही कस्बा चौकी प्रभारी वीरेंद्र सिंह मौके पर पहुंचे और सभी घायलों को सीएचसी धौरहरा भेजवाया, जहां प्राथमिक उपचार किया गया। थानाध्यक्ष रवींद्र सोनकर के मुताबिक मृत बच्चे की मां कुसुमी ने शव का पोस्टमार्टम कराने से इंकार कर दिया। इस कारण शव पोस्टमार्टम के लिए नहीं भेजा गया है।

दीपक बने सपा व्यापार सभा के जिलाध्यक्ष

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

नवनियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र देकर किया स्वागत। ● अमृत विचार

● जिला कार्यालय में सांसद की मौजूदगी में सभी का स्वागत नियुक्त पत्र सौंपे

अमृत विचार: समाजवादी व्यापार सभा के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष दीपक रस्तोगी के नेतृत्व में व्यापार सभा की जिला कमेटी का गठन किया गया। इस अवसर पर शहर स्थित लोहिया भवन में आयोजित कार्यक्रम में नव नियुक्त पदाधिकारियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए गए। मुख्य अतिथि खीरी सांसद उत्कर्ष वर्मा ने नव नियुक्त पदाधिकारियों का उत्साहवर्धन करते हुए बधाई दी।

पूर्व एमएलसी शशांक यादव, जिलाध्यक्ष रामपाल सिंह यादव और पूर्व जिलाध्यक्ष अनुराग पटेल ने नव नियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए संगठनात्मक अनुशासन और निरंतर सक्रियता पर जोर दिया। इस मौके पर जिला महासचिव अंसार महलूद, विधानसभा अध्यक्ष अशोक वर्मा, महिला सभा की राष्ट्रीय महासचिव तृप्ति अवस्थी, लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव आनंद पटेल, पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष अमित वर्मा तथा रियाजुल्ला खान ने भी नियुक्ति पत्र वितरित किए और नवगठित कमेटी से अपेक्षाएं जताईं। नवगठित जिला कार्यकारिणी में रोहित गुप्ता (मोहम्मदी) को जिला महासचिव नियुक्त किया गया। जिला उपाध्यक्ष पद पर यूसुफ मंसूरी, कपूर यादव, दलजीत सिंह बग्गा, मेराज अहमद, संदीप रस्तोगी, शानू उस्मानी, रोहित गुप्ता, धर्मेंद्र राज एवं मो. परवेज खान को जिम्मेदारी सौंपी गई। जिला सचिव के रूप में पंकज गुप्ता, अमन रस्तोगी, शिवम गुप्ता, अवनीश वर्मा, रिशु यादव, रोहित यादव, मो. अरशद सिद्दीकी, मोइन खान, रामकृष्ण अवस्थी, संतोष वर्मा, मनोज राज (सभासद), मोहम्मद आलम (फूलबेहड़), राजेश कुमार गुप्ता, दिलीप वर्मा एवं विपिन वर्मा को नियुक्त किया गया। इसके अलावा राहुल चौरसिया, मो. रिजवान, जितेंद्र कुमार पिंकू, मो. अमान, इमरान, जितेंद्र कुमार आदि को जिला कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया।

धूप के लिए तरस रहे तराई के लोग, 1 जनवरी तक सभी विद्यालय बंद

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

कड़ाके की ठंड में अलाव तापकर ठंड दूर करते लोग। ● अमृत विचार

आग का सहारा लेते पशु। ● अमृत विचार

● कड़ाके की ठंड से हाल बेहाल, सर्द हवाओं के बीच गलन बरकरार लोग घरों में रहने को मजबूर

अमृत विचार: सोमवार को भी सर्द पछुआ हवा चलने और पाला गिरने से तराई का समूचा क्षेत्र भयंकर शीतलहर की चपेट में रहा। सोमवार को भी धूप नहीं निकली। कड़ाके की ठंड के चलते अधिकतर लोग घरों में ही रहने को विवश रहे। उधर. शीतलहर को देखते हुए जिले के सभी कक्षा एक से 12 तक के स्कूलों में 1 जनवरी तक का अवकाश घोषित कर दिया गया।

नेपाल से सटे लखीमपुर खीरी जिले में पिछले करीब एक हफ्ते से धूप नहीं निकलने के कारण जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया है। घने कोहरे, शीतलहर और ठंडी पछुआ हवाओं ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। हालात ऐसे हैं कि कोहरा छंटने के बाद दिन भर धुंध छाई रहती है। इससे धूप नहीं निकल रही। शाम होते-होते ठंडी पछुआ हवा चलने से गलन के साथ ठिठुरन और बढ़ जा रही है।

सोमवार को शहर में कोहरा कम रहा, लेकिन शहर के बाहरी इलाकों में घना कोहरा छाया रहा। इससे दृश्यता मात्र 50 मीटर दर्ज की गई। भयंकर शीतलहर के कारण अधिकतर लोग घरों में ही दुबके रहे और रजाई व आग का सहारा लिया। सड़कों पर काफी कम चहल पहल रही। इससे बाजारों में भी सन्नाटा पसरा रहा। व्यापारी हीटर और ब्लोअर के सहारे अपनी दुकानों पर बैठे रहे। रविवार के बाद सोमवार को सरकारी कार्यालय और कचहरी आदि खुले, लेकिन ठंड के कारण फरियादियों की संख्या में भी कम रही। इससे दफ्तरों में भी सन्नाटा छाया रहा। कर्मचारी भी हीटर आदि के सहारे अपनी कुर्सियों पर बैठे रहे। उधर, जिले में जारी भयंकर शीतलहर को देखते हुए कक्षा एक से 12 तक के स्कूल और कॉलेजों को 1 जनवरी तक बंद कर दिया गया है। इसको लेकर बीएसए प्रवीण कुमार तिवारी और डीआईओएस विनोद कुमार मिश्रा ने 01 जनवरी तक कक्षा 12 तक सभी स्कूलों को बंद रखने के निर्देश दिए हैं।

कई दिन से सूरज न दिखने से बढ़ी सर्दी

पलिया कलां, अमृत विचार। घने कोहरे का असर और शीतलहर कम होने का नाम ही नहीं ले रही है। जिसके कारण दृश्यता काफी कम हो गई है। वाहनों को लाइट जलाकर धीमी रफ्तार में चलना पड़ रहा है, सर्दी का सबसे अधिक असर बुजुर्गों, बच्चों तथा घरेलू महिलाओं पर पड़ रहा है। नगर पालिका के अलाव के इंतजाम भी कड़ी सर्दी पड़ने से नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं। बाजारों में भी ग्राहक कम पहुंचने से रौनक फीकी हो चली है। बड़ी संख्या में ई-रिक्शा चालक नगर की सड़कों पर बगैर सवारियां लिए ही इधर से उधर दिन भर घूमते रहते हैं। मजदूरों को मजदूरी मिलनी भी कठिन है।

पलिया के छात्र की अयोध्या में सड़क दुर्घटना में जान गई

संवाददाता, पलिया कलां

अमृत विचार: नगर के मोहल्ला बाजार निवासी छात्र की अयोध्या में सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। शनिवार रात घने कोहरे के बीच अज्ञात वाहन की टक्कर से हुई इस दुर्घटना ने पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया। देर रात जब शव घर लाया गया तो परिजनों में कोहराम मच गया। सोमवार को गमगीन माहौल में शारदा नदी तट पर उसका अंतिम संस्कार किया गया।

नन्हें त्रिवेदी का पुत्र सुमित त्रिवेदी (18) बड़ा पुत्र था, जो अयोध्या के एक कॉलेज में बीएससी का छात्र था। नन्हें त्रिवेदी नगर के चौकी चौराहे पर खड़ी होने वाली रोडवेज बसों के यात्रियों को मटर बेचकर किसी तरह अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। उनका बेटा पढ़ाई में होनहार था और परिवार की उम्मीदों का सहारा माना जाता था। बताया गया कि छात्र अपने कॉलेज में 31 दिसंबर की रात होने वाले नववर्ष स्वागत समारोह के लिए ड्रेस व अन्य सामान खरीदने अपने एक मित्र के साथ बाइक से लखनऊ गया था। वापस लौटते समय अयोध्या से करीब 12 किलोमीटर पहले उसकी बाइक में किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में छात्र की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। रविवार देर शाम जब युवक का शव पलिया पहुंचा तो माता-पिता, भाई, रिश्तेदारों और मित्रों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

अमृत विचार

बरेली, मंगलवार,30 दिसंबर 2025

सिटी ब्रीफ

राम नाम का जाप करते रहने से होता है भव सागर पार

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचार : नगर के स्वामी विवेकानंद बाल उद्यान में कथा व्यास आचार्य अजयानंद महाराज ने श्रीराम कथा का शुभारंभ कर राम नाम की महिमा बताई।

उन्होंने कहा कि कलयुग में भगवान श्रीराम की कथा सुनने मात्र से भवसागर से पार पाया जा सकता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना करके कलयुग में संजीवनी प्रदान करने का कार्य किया है। इस दौरान मुख्य यजमान शशिबाला राबडा, केके शुक्ल, दुर्गा प्रसाद मिश्र, आनंद त्रिवेदी, राजेश त्रिवेदी, धर्मेंद्र मिश्र, सत्येंद्र शुक्ल, डॉ .वेद प्रकाश अग्निहोत्री, तथा विद्यालय के शिक्षक आदि मौजूद रहे।

महिला मंडल ने कंबल, गर्म टोपी और जूता बांटे

मैलानी, अमृत विचार : सामाजिक संस्था अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान द्वारा मैलानी रेलवे जंक्शन के समीप नारंग गांव स्थित अघोरपीठ मां सर्वेश्वरी ब्रह्मनिष्ठालय परिसर में महिला मंडल शाखा की संयोजिका रुबी सिंह की अगुवाई में गरीब महिलाएं बुजुर्ग और बच्चों को 200 कंबल, बच्चों को टोपी और जूते बांटें गये। इस मौके पर शारदा सिंह, सत्या, संगीता, मीरा, मधु आदि मौजूद रहीं।

रूट तय होने से नाराज चालकों ने विधायक को घेरा

विधायक अमन गिरी ने ई- रिक्शा चालकों की समस्या सुनकर कहा, किसी भी गरीब का शोषण नहीं होने दिया जाएगा

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचारः नगर पालिका परिषद चेयरमैन विजय शुक्ला रिंकू और प्रशासन के अधिकारियों की बैठक में एक जनवरी से बिना रजिस्ट्रेशन ई-रिक्शा संचालन पर रोक और रूट निर्धारण के निर्णय से परेशान 103 ई-रिक्शा चालकों ने सोमवार को विधायक अमन गिरि के फार्म हाउस को घेर लिया।

ई-रिक्शा चालक हड़ताल की घोषणा करते हुए फार्म के बाहर एकत्र हो गए। जानकारी पर विधायक ने ई-रिक्शा चालकों की समस्या सुनीं और उन्हें आश्वासन दिया कि किसी भी गरीब का शोषण नहीं होने दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि चालकों और नगर पालिका प्रशासन के बीच संवाद कराकर समस्या का समाधान निकाला जाएगा। साथ ही 30 दिसंबर को दोपहर तहसील में ई रिक्शा चालकों के प्रतिनिधि मंडल के साथ अधिकारियों की वार्ता कर फैसला करने का भरोसा दिया।

नगर पालिका परिषद में एसडीएम की अध्यक्षता में 16 दिसंबरको तहसीलदार भीमचंद, नायब तहसीलदार भानु प्रताप सिंह, सीओ रमेश कुमार तिवारी, इंस्पेक्टर अंबर सिंह की मौजूदगी में व्यापारियों, गोला टूरिज्म के पदाधिकारियो की बैठक में ई रिक्शा संचालन के लिए विभिन्न मानक तय किए गए थे, ताकि नगर वासियों को जाम की समस्या से निजात मिल सके और ई रिक्शा चालको की आय भी प्रभावित न हो। बैठक में व्यापारियों और पदाधिकारियो के सुझावों के बाद एसडीएम ने ई रिक्शा चालकों के लिए नगर में रूट प्लान, किराया निर्धारण तय किया था। इसको लेकर 103 ई रिक्शा चालकों ने नगर पालिका में पंजीकरण भी करा लिया था।

सोमवार को रूट प्लान और किराया निर्धारित किए जाने से असंतुष्ट सैकड़ो ई रिक्शा चालक विधायक अमन गिरि के फार्म हाउस पहुंच गए। उन्होंने बनाई गई इस योजना का विरोध करते हुए इस पर पुनर्विचार करने की मांग की। विधायक ने असंतुष्ट ई रिक्शा चालकों को आश्वासन देते हुए कहा कि उनकी आय को प्रभावित नहीं होने दिया जाएगा। मंगलवार को दोपहर एक बजे उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए तहसील सभागार में एसडीएम की मौजूदगी में उनके लिए आवश्यक नीति निर्धारण तय किया जाएगा, जिसमें ई रिक्शा चालकों के एक प्रतिनिधिमंडल को अपनी बात रखने के लिए बुलाया है। उन्होंने उनके हित में फैसला करने का भी भरोसा दिया है।

ई-रिक्शा चालकों की समस्याएं सुनते विधायक अमन गिरि। ● अमृत विचार

गोला में विधायक के फार्म हाउस के बाहर खड़े ई-रिक्शा। ● अमृत विचार

> गोला छोटा शहर है, जहां रूट प्लान के मुताबिक ई रिक्शा संचालन सुविधाजनक नहीं है। इसे लेकर तहसील में मंगलवार को बैठक कर उचित निर्णय लिया जाएगा।
> – **अमन गिरि**, विधायक।

> नगर में चौराहो, प्रमुख सड़कों पर लग रही जाम को लेकर नगर पालिका में व्यापारियों के साथ बैठक कर ई रिक्शा संचालन के लिए कुछ आवश्यक नीतियां तय की गईं थीं। आज होने वाली बैठक में जैसी सहमत बनेगी, उसी के अनुसार कार्य संपादित कराया जाएगा।
> – प्रतीक्षा त्रिपाठी, एसडीएम गोला।

> एसडीएम के निर्देशानुसार नगर पालिका में व्यापारियों, गोला टूरिज्म के पदाधिकारी के साथ बैठक में एसडीएम की संस्तुति पर रूट प्लान, स्टॉपेज और किराया संबंधी नीति निर्धारण हुआ था। मंगलवार 30 दिसंबर को तहसील में होने वाली बैठक में जैसी व्यवस्था बनाई जाएगी, उसी के अनुसार कार्य कराया जाएगा।
> – **विजय शुक्ला रिंकू**, अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गोला।

जाम से मुक्ति दिलाने को गोला टूरिज्म ने बनाई थी रणनीति

गोला टूरिज्म के पदाधिकारियों ने नगर में ई-रिक्शा से लग रही जाम और बेतरतीब संचालन से लोगों को हो रही परेशानियों को दूर करने के लिए रणनीति बनाई थी। इसके तहत ई- रिक्शा के कुशल संचालन, जाम से निजात दिलाने के लिए शहर में आवागमन के लिए ई- रिक्शा का रूट प्लान, किराया निर्धारण आदि को लेकर कार्य योजना बनाई गई थी। 16 दिसंबर को एसडीएम प्रतीक्षा त्रिपाठी ने व्यापारियों और गोला टूरिज्म के पदाधिकारी के साथ नगर पालिका में बैठक कर व्यापारियों के सुझाव पर इन योजनाओं के क्रियान्वयन को मंजूरी दी थी।

ई -रिक्शा चालकों की प्रमुख मांग

विधायक के फार्म हाउस पर ई-रिक्शा चालकों ने अपनी प्रमुख मांगों को रखते हुए कहा, जिन ई-रिक्शा चालकों के दस्तावेज नहीं हैं, उनको कम से कम छह माह का समय दिया जाए। जिससे वे लोग अपने दस्तावेजों को बनवा सकें। विकलांगों को ई-रिक्शा चलाने में छूट दी जाए। नगर में निर्धारित किए गए रूट प्लान को हटाया जाए, नगर में किराया 10 रुपये से कम कहीं का भी न रखा जाए। क्योंकि इससे कम किराया होने पर उन्हें कुछ नहीं बचेगा। ई- रिक्शा चालकों से अच्छे से व्यवहार किया जाए।

हिंदुओं पर अत्याचार के विरोध में बजरंग दल का प्रदर्शन

मझगई, अमृत विचारः बांग्लादेश में हिंदू समुदाय पर हो रहे अत्याचार के विरोध में सोमवार शाम बम्हनपुर चौराहे पर अंतरराष्ट्रीय बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस का पुतला फूंका और नारेबाजी की।

प्रदर्शनकारियों का आरोप था कि बांग्लादेश में हिंदुओं पर लगातार अत्याचार हो रहे हैं, लेकिन वहां की अंतरिम सरकार इस गंभीर मुद्दे पर चुप्पी साधे हुए है। उनके घरों-प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया जा रहा है। लूटपाट के बाद आग लगा दी जा रही है। इसके अलावा हिन्दू महिलाओं युवतियों से छेड़छाड़ और दुष्कर्म की घटनाएं सामने आ रही है। अंतरराष्ट्रीय बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने पुतला दहन कर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग उठाई और बांग्लादेश सरकार के खिलाफ जमकर नारे लगाए। बम्हनपुर चौराहे पर हुए इस प्रदर्शन में देव जुनेजा, सुनील श्रीवास्तव, रामसहाय निषाद, राजेश सक्सेना, राहुल सक्सेना, राहुल अवस्थी, मोनू सक्सेना सहित बड़ी संख्या में बजरंग दल के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

चोरी के सामान समेत चार चोर पकड़े

संवाददाता, पलिया कलां

अमृत विचारः पुलिस ने मोहल्ला रंगरेजान समेत नगर के दो स्थानों पर हुई बड़ी चोरी की वारदातों का खुलासा करते हुए सोमवार को चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी किए गए सोने-चांदी के जेवर समेत अन्य सामान बरामद होने का दावा किया है।

थाना पलिया में बरामद माल के साथ गिरफ्तार आरोपी ● अमृत विचार

● नगर में हुईं दो चोरियों का पुलिस ने खुलासा होने का किया दावा

एसओ पंकज त्रिपाठी ने बताया कि मोहल्ला रंगरेजान निवासी रामचंद्र गुप्ता 26 अक्टूबर 25 को परिवार समेत बाला जी दर्शन करने गए थे। इसी बीच 30 अक्टूबर की रात चोरों ने उनके मकान का ताला तोड़ दिया था और तीन बेटियों के सोने-चांदी के गहने, 90 चांदी के सिक्के और नगदी चोरी कर ले गए थे। वापस लौटने पर उन्हें चोरी की जानकारी हुई। पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की थी। इसके अलावा एक और बड़ी चोरी को अंजाम दिया गया था। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और अन्य साक्ष्यों के आधार पर पुलिस ने सोमवार को शिवम सोनी निवासी मोहल्ला रंगरेजान तृतीय,नीरज सिंह निवासी मोहल्ला टेहरा शहरी, रोहित उर्फ पिन्नी निवासी मोहल्ला इंदिरा नगर व अमर कश्यप निवासी मोहल्ला टेहरा शहरी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों के कब्जे से सोने और चांदी के जेवर बरामद हुए हैं। इसके अलावा 15 चांदी के सिक्के, 3 अदद मोबाइल, 20000 रुपये भारतीय व 10000 रुपये नेपाली मुद्रा, पीतल के बर्तन, एक गैस सिलेंडर, एक बड़ा बैटरा, घटना में प्रयुक्त प्लैटिना बाइक, चोरी के पैसों से खरीदी गई एक इलेक्ट्रिक स्कूटी बरामद की है। पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों का चालान भेजा है।

निजी अस्पताल की महिला कर्मचारी समेत दो पर रिपोर्ट

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

● पति ने गर्भपात कराने में लापरवाही का लगाया आरोप

अमृत विचारः एक युवक ने मिल पुरवा स्थित गुरु कृपा हॉस्पिटल की एक महिला चिकित्सक समेत अस्पताल के दो लोगों पर पत्नी का गर्भपात करने में गंभीर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है। पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर दोनों आरोपियों पर रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

थाना फूलबेहड़ के गांव श्रीनगर निवासी अखिलेश के अनुसार उसकी पत्नी शांति देवी गर्भवती थी। 2 सितंबर 2025 को इसी थाना क्षेत्र के मिलपुरवा में स्थित गुरु कृपा हॉस्पिटल में उसने अपनी पत्नी का चेकअप कराया था। इस दौरान डॉक्टरों ने गर्भ खराब बताते हुए गर्भपात की सलाह दी। इसके बाद 3 सितंबर को पत्नी को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां कथित तौर पर बिना योग्य चिकित्सक के गर्भपात कर दिया गया। पीड़ित का आरोप है कि उसे बताया गया कि डॉ. कामिनी यादव गर्भपात कराएंगी, लेकिन वह नहीं आईं और बिना किसी योग्यता के श्रीनगर निवासी जयेंद्र सिंह यादव और नीरू जायसवाल ने पत्नी का गर्भपात कर दिया। 3 और 4 सितंबर तक अपने हास्पिटल में भर्ती रखा, जिसके बाद डिस्चार्ज किया, लेकिन पत्नी का रक्तस्राव बंद नहीं हुआ और उसकी हालत बिगड़ती चली गई। जिसके बाद वह 20 दिन तक इलाज करते रहे, लेकिन स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। 24 सितंबर को उसने अपनी पत्नी को जिला महिला चिकित्सालय में दिखाया, जहां भी कोई सुधार नहीं हुआ। जहां से लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया।

गन्ना भरे ओवरलोड ट्रक की कमानी टूटी

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचारः ओवरहाइट और ओवरलोड गन्ना भरकर जा रहे ट्रक की अचानक महेवागंज तिराहे पर कमानी टूट गई। इससे ट्रक पलटने की स्थिति में आ गया, जिससे भगदड़ मच गई। हालांकि चालक की सूझबूझ और आसपास के लोगों की सतर्कता से ट्रक को बांस-बल्ली के सहारे रोक कर पलटने से बचा लिया गया।

सोमवार दोपहर महेवागंज चौकी तिराहे के पास उस समय अफरा-तफरी मच गई। जब चीनी मिल को गन्ना लेकर जा रहे एक ओवरलोड ट्रक की कमानी अचानक टूट गई। संतुलन बिगड़ने से ट्रक पलटने की स्थिति में आ गया, लेकिन चालक की सूझबूझ और मौके पर मौजूद स्थानीय लोगों की तत्परता से बड़ा हादसा टल गया। लोगों ने बांस-बल्ली लगाकर ट्रक को सहारा दिया, जिससे वह सड़क पर गिरने से बच गया। घटना की सूचना मिलते ही चौकी पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। बीच सड़क पर ट्रक खराब हो जाने से कुछ समय तक कस्बे में जाम की स्थिति बनी रही, जिसे पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद सुचारु कराया। स्थानीय लोगों का कहना है कि गन्ना ढोने वाले भारी वाहन जब भीड़भाड़ वाले बाजार और रिहायशी इलाकों से गुजरते हैं, तो हर समय दुर्घटना का खतरा बना रहता है। पूर्व में भी कई बार हादसे होते-होते बचे हैं। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि गन्ना वाहनों के लिए वैकल्पिक मार्ग निर्धारित किया जाए और ओवरलोड व ओवरहाइट वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में किसी बड़ी अनहोनी से बचा जा सके।

हादसे का शिकार होते बचा ट्रक।

● स्थानीय लोगों ने बांस-बल्ली लगाकर पलटने से रोका ट्रक

न्यूज डायरी

कुकरा में अंबेडकर पार्क का हुआ भूमि पूजन

कुकरा, अमृत विचार : बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर पार्क के निर्माण हेतु मुख्य अतिथि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली के प्रोफेसर महेंद्र प्रताप राना ने भूमि पूजन कर पार्क की आधारशिला रखी। कार्यक्रम का आरंभ बाबा साहब के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। मुख्य अतिथि

प्रो. महेंद्र प्रताप राना ने शिक्षा और सामाजिक चेतना पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि बाबा साहब का मूल मंत्र शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो आज भी प्रासंगिक है। इस पार्क का निर्माण नई पीढ़ी को उनके महान संघर्षों और संविधान की गरिमा की याद दिलाता रहेगा। समारोह को विशिष्ट अतिथि भारतीय बौद्ध महासभा लखनऊ के भन्ते सुमित रत्न, वीरेंद्र सिंह बिजनौर, सुमित भूपति तेलंगाना राज्य, न्यायमूर्ति मनोज कुमार, प्रेम भारती ने भी संविधान के संस्थापक डॉ. भीमराव अंबेडकर साहब के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के आयोजक प्रेम भारती, खूबचंद, संतोष कुमार, शिव भगवान, हरीश चन्द्र, राजेंद्र कुमार, रमेश कुमार, सुधीर कुमार, मनोज कुमार, जगन्नाथ प्रसाद, सरोज कुमार, रामधार, रामप्रसाद, छत्रपाल, प्रधान संघ अध्यक्ष प्रधान हरजिंदर सिंह, प्रधान कुलदीप कुमार, प्रधान विनोद कुमार भारती, प्रधान जनक यादव सहित काफी संख्या में बाबा साहब के दीवाने मौजूद रहे।

विधायक ने जरूरतमंदों को बांटे कंबल

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचार : विधायक अमन गिरि ने सोमवार को भीषण सर्दी के चलते त्रिलोक गिरि मंदिर परिसर में विधानसभा क्षेत्र के कई गांवों से आए 600 जरूरतमंद लोगों को कंबल प्रदान किए। लाल्हापुर प्रधान जनार्दन गिरि, विधानसभा संयोजक अवधेश मिश्रा, रामगुलाम पांडे, सभासद आनंद सोनी, भोली गिरि, कफील अहमद, समाजसेवी सत्यप्रकाश अग्रवाल, विनोद स्वर्णकार, सुधीर कोहली आदि मौजूद रहे।

जरूरतमंदों को कंबल बांटे

संसारपुर, अमृत विचार : ब्लॉक बांकेगंज की ग्राम पंचायत सिसनौर के कुकुहापुर गांव निवासी समाजसेवी अवधेश वर्मा के पुत्र सिद्धांत कनौजिया के वायुसेना में चयन होने की खुशी में 101 कंबल वितरित किए। इस दौरान ब्लॉक बांकेगंज प्रधान संघ अध्यक्ष हरजिंदर सिंह, बाबरपुर प्रधान कंधईलाल, ग्राम प्रधान मुनीश कुमार वर्मा, विनोद गुप्ता, राजन गुप्ता, कमलेश समेत अन्य रहे।

प्रशासन की ओर से जलवाया जा रहा अलाव पर्याप्त नहीं

केशवापुर , अमृत विचार : भीषण कोहरे के साथ हांड़ कंपाने वाली ठंड में राहगीरों, दुकानदारों, ई रिक्शा चालकों व कमजोर लोगों के लिए कस्बे में ठंड से राहत देने के लिए सदर तहसील प्रशासन ने अलाव की व्यवस्था तो कराई है, जो पर्याप्त नहीं है। गोला तहसील क्षेत्र के कस्बा अजान में तहसील प्रशासन की ओर से जलाए जा रहे एक मात्र अलाव में सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है। कस्बे की आबादी करीब चार हजार है। सुबह-शाम खानापूर्ति करते हुए मार्केट में सिर्फ एक अलाव जलाया जा रहा है, जिसमें सिर्फ दो-तीन किलो लकड़ियां ही जलाई जा रही है। यह अलाव चार हजार की आबादी वाले कस्बे के लिए सरकारी मजाक भर है। इस कस्बे में पुलिस चौकी, दो बैंक, होम्योपैथिक अस्पताल, बैंक की दो बीसी केन्द्र, सहकारी समिति सहित मार्केट में दर्जन भर गांवों से हजारों लोगों का रोजाना आना-जाना रहता है।

बाघ ने गन्ने में चर रही बकरी का किया शिकार

केशवापुर, अमृत विचारः मोहम्मदी वनरेंज की बिलहरी बीट के गांव कोटखेरवा निवासी नीलम देवी पत्नी रूपनरायन के सामने से बाघ एक बकरी को गन्ने के खेत में खींच ले गया।

महिलाओं और ग्रामीणों ने शोर मचाते हुए खोजबीन की लेकिन कोई पता न मिलने पर वन विभाग को सूचना दी। सोमवार सुबह मौके पर पहुंची वन विभाग की टीम ने ग्रामीणों के साथ गन्ने के खेतों में खोजबीन की, गन्ना खेत के काफी अंदर बकरी का अधखाया शव मिला है, जिसका वन विभाग ने पोस्टमार्टम कराया। बकरी मालकिन को सरकारी सहायता दिलाने का आश्वासन दिया है।

छटनी के विरोध में आउटसोर्सिंग कर्मियों ने किया प्रदर्शन

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन प्रबंधन के स्वयं के आदेशों का पालन न करने, आउटसोर्सिंग कर्मचारियों की छटनी किए जाने आदि के विरोध में पूर्व में दिए गए समझौते पत्र की प्रक्रिया दहन की।

सोमवार को विद्युत उपकेंद्र पर आउटसोर्सिंग बिजली कर्मचारियों ने विद्युत उपकेंद्र में धरना प्रदर्शन कर विद्युत उपकेन्द्रो के परिचालन व अनुरक्षण कार्य में तैनात बिजली आउटसोर्स कर्मचारियों की छटनी करने, छंटनी के उपरान्त मानक निर्धारित करने हेतु मानक समिति का गठन करने, अपने स्वयं के आदेश का पालन करते हुए कार्य के अनुरूप अनुबंध न करने, वेतन 18000 रुपया निर्धारित न करने, मार्च 2023 में हटाए गए कर्मचारियों को कार्य पर वापस न लेने, घायल कर्मचारियों का कैशलेस इलाज न कराने एवं घायल कर्मचारियों द्वारा उपचार में व्यय की गई धनराशि को संविदाकारों के बिल से काटकर भुगतान न करने, 55 वर्ष का हवाला देकर अनुभवी कर्मचारियों को कार्य से हटाने, वर्टिकल व्यवस्था लागू करने, जांच अधिकारियों द्वारा दी गई जांच रिपोर्ट के आधार पर भ्रष्ट ठेकेदारों के खिलाफ कार्रवाई न करने, मीटर रीडरों को न्यूनतम वेतन के हिसाब से वेतन का भुगतान न करने, स्मार्ट मीटर लगने की स्थिति में मीटर रीडरों को कार्य से हटाने के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए संगठन द्वारा 29 नवम्बर को पावर कारपोरेशन प्रबन्धन द्वारा जारी पत्र पर बनी सहमति के अनुरूप कार्रवाई न होने के कारण कार्यवृत्त की प्रति का दहन कर रोष व्यक्त किया।

अधीक्षण अभियंता कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन में सर्किल अध्यक्ष अतुल खरे, डिवीजन अध्यक्ष विकास कटियार, महामंत्री अब्दुल लइक, उपाध्यक्ष बॉबी सिंह, मोनू गिरि, कलीम बेग, जगतपाल शर्मा आदि मौजूद रहे।

गोला में समझौता पत्र की प्रतियां जलाते विद्युत संविदा कर्मचारी। ● अमृत विचार

● समझौते की प्रतियां जलाकर की नारेबाजी

अधूरे कार्यों पर भड़के ब्लॉक प्रमुख

संवाददाता, धौरहरा

अमृत विचार: ईसानगर ब्लॉक परिसर में सोमवार को ब्लॉक प्रमुख की अध्यक्षता में क्षेत्र पंचायत की बैठक आयोजित की गई, जिसमें विकास कार्यों की प्रगति को लेकर चर्चा हुई। बैठक में मुख्य अतिथि सांसद प्रतिनिधि व क्षेत्रीय विधायक ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और विकास कार्यों में तेजी लाने पर जोर दिया।

बैठक की अध्यक्षता ब्लॉक प्रमुख आलोक कटियार (दीपू) ने की। मुख्य अतिथि धौरहरा सांसद प्रतिनिधि उत्तम वर्मा एवं विधायक विनोद शंकर अवस्थी ने क्षेत्र पंचायत सदस्यों, ग्राम प्रधानों और बड़ी संख्या में उपस्थित क्षेत्रवासियों को संबोधित किया। इस दौरान

क्षेत्र पंचायत की बैठक में मौजूद सांसद प्रतिनिधि, विधायक व अन्य। ● अमृत विचार

● सरकारी योजनाओं में सुधार कर आमजन तक पहुंचाने पर जोर

ब्लॉक प्रमुख ने सरकारी योजनाओं को आम आदमी तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने पर बल देते हुए अधूरे पड़े विकास कार्यों को लेकर नाराजगी जताई और संबंधित अधिकारियों को इन्हें शीघ्र पूरा कराने के निर्देश दिए। बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, समाज कल्याण, पंचायत, मनरेगा, अमृत सरोवर, स्वच्छ भारत मिशन समेत विभिन्न विभागों की योजनाओं की बिंदुवार समीक्षा की गई। क्षेत्र पंचायत सदस्यों ने अपने-अपने क्षेत्रों से जुड़े विकास प्रस्ताव ब्लॉक प्रमुख को सौंपे, जिन्हें स्वीकार करते हुए उन्होंने जल्द अमल में लाने का आश्वासन दिया।

शिविर में टीबी की पहचान के लिए बुजुर्गों की हुई जांच

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: शहर के सलेमपुर कोन स्थित वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों में टीबी रोग की जांच के लिए सोमवार को टीबी अस्पताल की टीम ने स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। इस दौरान वृद्धजनों का एक्स-रे व बलगम सैंपल जांच के लिए लिया गया।

जिला क्षय रोग अधिकारी डिप्टी सीएमओ डॉ. प्रमोद कुमार रावत ने बताया कि मुख्य चिकित्सा अधिकारी के निर्देश पर टीबी रोगियों की पहचान हेतु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। ऐसे में वृद्धजनों को वरीयता के क्रम में रखते हुए वृद्धाश्रम ओयल में रविवार को शिविर का आयोजन किया गया था। सोमवार को वृद्धाश्रम सलेमपुर कोन में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 88 बुजुर्गों के एक्स-रे किए गए, वहीं पांच लोगों का लक्षण के अनुसार स्पुटम जांच के लिए लिया गया है।

जांच में टीबी रोग की पहचान होने पर इन बुजुर्गों को पूर्ण इलाज निशुल्क मिलेगा, साथ ही सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिलेगा। इस दौरान डिप्टी डीटीओ नवीन गुप्ता सहित टीबी अस्पताल के अन्य अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

● वृद्धाश्रम सलेमपुर कोन में लगा स्वास्थ्य कैंप

न्यूज ब्रीफ

दो बार हमला कर युवक से की मारपीट

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : सदर कोतवाली के गांव रैनी निवासी अंगद कुमार सिंह ने बताया कि वह 27 दिसंबर को खंभारखेड़ा मिल में गाड़ी लगा रहा था, तभी लखनापुर निवासी रमेश व बलराम यादव जबरन मिल गेट में घुस आए। मना करने पर गाली-गलौज करते हुए लात-घूंसों से मारपीट की। जान से मारने की धमकी दी गई। अगले दिन सुबह जब वह गन्ना छीलने जा रहा था, तभी रास्ते में ननकू के मकान के सामने आरोपियों ने बाइक खड़ी कर दोबारा उस पर हमला कर दिया। आसपास के लोगों के ललकारने पर आरोपी बाइक मौके पर छोड़कर भाग निकले। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

छज्जा निकालने का विरोध करने पर मारपीट, तीन घायल

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : थाना भीरा के गांव मिस्त्रीपुरवा निवासी छोटी देवी पत्नी रामू ने बताया कि पड़ोसी रमेश, रमन, पूनम देवी, ओमप्रकाश जबरन सार्वजनिक भूमि में अपने मकान का छज्जा निकाल रहे थे। उसने जब विरोध किया तो आरोपियों ने गाली-गलौज करते हुए लात-घूंसे व लाठी-डंडों से मारपीट की, जिससे उसके सिर में चोट आई। शोर सुनकर बीच-बचाव करने आई सास बिटोला देवी और ससुर छोटेलाल को भी मारपीट कर घायल कर दिया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर घायलों का मेडिकल परीक्षण कराया है।

मजदूरी के रुपये दिलवाने की मांग

खुटार, अमृत विचार : क्षेत्र के गांव रुजहा कलां निवासी उमेश ने पुलिस को बताया कि उसके ताऊ संतराम अपनी जिम्मेदारी पर कंबाइन मशीन पर पूरी सीजन के लिए दस हजार रुपये पर बाहर ले गए थे। जिसमें पांच हजार रुपये दे दिए है। आरोप है कि अभी तक बकाया धनराशि नहीं दे रहे हैं। कई बार कह चुके है। लेकिन आये दिन टालमटोल कर रहे हैं। सोमवार को भी मजदूरी के रुपये मांगे। इसके बावजूद नहीं दिए। पीड़ित उमेश ने तहरीर देकर मजदूरी के रुपये दिलवाने की मांग की है।

साइबर हेल्प डेस्क ने वापस कराए रुपये

शाहजहांपुर, अमृत विचार : बंडा के साइबर हेल्प डेस्क प्रभारी अमर कांत सिंह ने बताया कि बंडा थाना क्षेत्र के गांव मकसूदापुर निवासी जितेंद्र कुमार ने रविवार को रिपोर्ट दर्ज करायी थी कि अनजान व्यक्ति ने धोखाधड़ी करके फोन पे के माध्यम से 6300 रुपये किसी अन्य खाते में ट्रांसफर करा लिए थे। पुलिस ने आनलाइन धोखाधड़ी की गयी धनराशि शिकायतकर्ता को वापस करायी है।

छेड़छाड़ करने वाला मनचला गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : जलालाबाद पुलिस ने राह चलती महिलाओं के साथ छेड़छाड़ करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर चालान कर दिया। पुलिस को सूचना मिली कि ईट भट्टे के निकट राह चलती महिलाओं के साथ एक युवक छेड़छाड़ कर रहा है। पुलिस मौके पर पहुंच गयी ओर मनचले युवक को पकड़ लिया। पकड़ा गया आरोपी रहीस निवासी कमलापुर थाना पचदेवरा जिला हरदोई का है। पुलिस ने आरोपी का चालान कर दिया।

किशोरी के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज

शाहजहांपुर, अमृत विचार : कांट थाना क्षेत्र के एक गांव व्यक्ति ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि 24 दिसंबर को उसकी 18 वर्षीय पुत्री को बरेली मोड़ से गांव के गुरथना के महेश व रामऔतार अगवा करके ले गए है। आरोपियों का उनके घर पर आना जाना था।

बलरामपुर, गोला की टीमों के बीच होगा फाइनल

कृषक समाज कॉलेज के खेल मैदान में प्रादेशिक हॉकी टूर्नामेंट में आज फाइनल में भिड़ेंगी दोनों टीमें

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार: कृषक समाज इंटर कॉलेज के प्रादेशिक हॉकी टूर्नामेंट के सोमवार को खेले गए सेमीफाइनल में बलरामपुर और गोला की टीमें विजयी रहीं।

लखीमपुर रोड स्थित कृषक समाज इंटर कॉलेज के खेल मैदान पर खेले जा रहे प्रादेशिक हॉकी टूर्नामेंट मैं सोमवार को खेले गए सेमीफाइनल में मुख्य अतिथि गांधी विद्यालय के पूर्व प्रधानाचार्य विश्वनाथ सिंह, विशिष्ट अतिथि डॉ. सूर्य प्रकाश वर्मा, विनोद मिश्रा, श्याममूर्ति शुक्ला, लखपत भारती, अशोक वर्मा, ओमप्रकाश यादव, कॉलेज के प्रधानाचार्य अनंत प्रकाश सरोज ने टीम के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर खेल आरंभ कराया। पहला सेमीफाइनल मैच स्टार इलेवन बलरामपुर और गोरखपुर की टीम के बीच खेला गया, जिसमें 36 वें मिनट में गोरखपुर के खिलाड़ी आयुष ठाकुर ने फील्ड गोल किया और 41वें मिनट में बलरामपुर के खिलाड़ी आकाश ने पेनाल्टी कार्नर के द्वारा गोल कर दिया। खेल के 49वें मिनट में गोरखपुर के खिलाड़ी अरमान ने फील्ड गोल किया। 57वें मिनट में बलरामपुर के खिलाड़ी कुणाल ने फील्ड गोल किया।

समय समाप्त होने तक दोनों टीमें दो-दो गोल से बराबरी पर रही। मैच का परिणाम शूटआउट के द्वारा किया गया, जिसमें बलरामपुर की टीम 5-3 से विजयी रही। दूसरा सेमीफाइनल मैच ध्यानचंद गोला की टीम और महात्मा गांधी स्पोर्ट्स क्लब बाराबंकी की टीम के बीच खेला गया। खेल के 18वें, 22वें मिनट में गोला के खिलाड़ी लवप्रीत ने फील्ड गोल किए। 24वें मिनट में बाराबंकी के खिलाड़ी मोहम्मद हामिद ने फील्ड गोल कर दिया। 25वें मिनट में गोला के खिलाड़ी हरममनदीप ने फील्ड गोल किया, 38वें मिनट में गोला के खिलाड़ी मन्नी ने फील्ड गोल कर दिया और 40 वें मिनट में बाराबंकी के खिलाड़ी करन ने फील्ड गोल किया, जिससे गोला की टीम 4-2 से विजयी रही। टूर्नामेंट के सहसंयोजक, मंत्री अशोक, नारायण लाल वर्मा, मीडिया प्रभारी डॉ. अनिल कुमार, डेविड वर्मा, कौशल किशोर वर्मा, राजर्षि शुक्ला, सरोज कुमार वर्मा, कपिल वर्मा, सुमित यादव, वीरेंद्र भारद्वाज सहित तमाम खेलप्रेमी, दर्शक आदि मौजूद रहे। संचालन आशीष कुमार पांडे, देवेंद्र सिंह ने किया।

इनके बीच होगा फाइनल

मंगलवार को बलरामपुर की टीम और ध्यानचंद गोला की टीम के बीच फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। फाइनल मुकाबले के लिए आयोजकों द्वारा पूरी तैयारियां कर ली हैं। मैदान को भी साफ कराया गया है। जिससे खिलाड़ियों को दिक्कत न हो। बताया कि मैदान के पास अलाव की व्यवस्था भी की जाएगी।

कृषक समाज कॉलेज में विजयी टीम के साथ अतिथि और शिक्षक। ● अमृत विचार

गोला में खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते प्रधानाचार्य एपी सरोज। ● अमृत विचार

जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह का स्वागत करते भाजपा पदाधिकारी।

एकाग्रता और परिश्रम से ही मिलती है सफलता

संवाददाता, मैगलगंज

- शाहजहांपुर जाते समय जलशक्ति मंत्री ने भाजपा कार्यकर्ताओं से की मुलाकात

अमृत विचार: लखनऊ से शाहजहांपुर जाते समय जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने मैगलगंज क्षेत्र के चपरतला स्थित एक प्रतिष्ठान पर रुके और भाजपा पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से मुलाकात की।

भाजपा मंडल महामंत्री एवं क्षेत्रीय गन्ना डायरेक्टर अनिल राठौर ने केंद्रीय मंत्री का स्वागत किया। स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि एकाग्रता और परिश्रम ही सफलता की असली कुंजी है। यदि लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखकर निरंतर मेहनत की जाए तो सफलता स्वयं कदम चूमती है। उन्होंने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर क्षेत्र की स्थिति की जानकारी ली और कहा कि कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ होते हैं। किसी भी कार्यकर्ता का उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सरकार जीरो टॉलरेंस नीति पर काम कर रही है और भ्रष्टाचार के प्रति कोई नरमी नहीं बरती जाएगी। इस दौरान पुरातन छात्र परिषद के जिलाध्यक्ष शिव गुप्ता, सलमान, संदीप, पंकज राठौर, मनोज वर्मा सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सांड़ के हमले से दो किसान घायल

शाहजहांपुर, अमृत विचार: कटरा में खेत पर सांड़ को भगाने गए दो किसानों पर सांड ने हमला कर दिया। दोनों को मेडिकल कालेज में भर्ती कराया गयाञ। कटरा थाना क्षेत्र के गांव परशुरामपुर निवासी रामसागर वर्मा सोमवार की सुबह आठ बजे खेत पर गए।

उनके खेत पर सांड़ व गौवशींय पशु थे। वह सांड़ को भगाने लगे तो एक सांड ने उनके ऊपर हमला करके घायल कर दिया। उनको बचाने के लिए गया सिंह आए तो सांड़ ने उनके ऊपर भी हमला करके घायल कर दिया। परिवार वालों ने दोनों किसानों को सीएचसी पर भर्ती कराया। जहां डाक्टर ने दोनों घायलों को मेडिकल कालेज रेफर कर दिया। जहां हालत गंभीर बनी हुई है।

सड़क हादसे में युवक की मौत, दो लोग गंभीर घायल

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: बुधवाना गांव के सामने ट्रैक्टर-ट्रॉली ने बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में बाइक पर सवार तीन लोग घायल हो गए। घायलों को मदनापुर सीएचसी पर भेजा गया। यहां डॉक्टर ने एक को मृत घोषित कर दिया और घायल दोनों को मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया।

मदनापुर थाना क्षेत्र के गांव नरहा मझौरी निवासी उमेश अपनी बाइक से अपने भाई जावेंद्र सिंह ओर अमरपाल को लेकर रविवार को दौलतपुर गांव में नामकरण की दावत में गए थे। तीनों लोग रात दस बजे बाइक से दौलतपुर से अपने गांव वापस लौट रहे थे। बुधवाना गांव के सामने ट्रैक्टर-ट्राली ने बाइक को टक्कर मार दी, जिससे तीनों लोग घायल हो गए। चालक ट्रैक्टर-ट्राली लेकर भाग गया। सूचना पर मदनापुर पुलिस मौके पर पहुंच गई और तीनों घायलों को सीएचसी मदनापुर पर भेज दिया। डॉक्टर ने जावेंद्र सिंह को मृत घोषित कर दिया। मौत की खबर से परिवार में रोना पीटना मच गया। दोनों घायलों को मेडिकल कालेज के लिए रेफर कर दिया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि अज्ञात चालक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस ने आस-पास सीसीटीवी कैमरे चेक किए।

तकादा करने पर युवक के साथ की मारपीट, दी तहरीर

खुटार, अमृत विचार : आठ लाख रुपये का तकादा करने पर दबंगों ने युवक को धुन दिया। क्षेत्र के गांव लाह वीरान निवासी जसपाल सिंह उर्फ जस्सा ने पुलिस को बताया कि तकरीबन 20 माह पूर्व उसने मक्के की फसल 10 लख रुपये की गांव टाहखुर्द कलां के रहने वाले को भाइयों को दी थी। तीनों भाइयों ने उसे दो लाख रुपये दे दिए थे, जबकि शेष रकम बाद में देने को कहा। कई बाद तकादा करने के बाद भी आरोपियों ने रुपये नहीं दिए। बाद में मना कर दिया। रविवार को तकादा करने पर मना कर दिया, विरोध करने आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने थाना में तहरीर देकर रिपोर्ट दर्ज कराने की मांग की है। पुलिस ने तहरीर लेकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

घर में घुसकर नकदी- जेवर चोरी

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार: गांव अवस्थीपुरवा मजरा रामलोक निवासी मिथलेश कुमार ने बताया कि वह शुक्रवार रात परिवार के साथ सो रहे थे। रात में किसी समय चोर दीवार फांदकर घर में घुस आए।

कमरे के अंदर रखी अलमारी व बक्सों आदि का ताला तोड़कर सामान खंगाल लिया। उन्होंने बताया चोर सोने का हार, झुमकी की जोड़ी, झाला, कमर बिछुआ, दो जोड़ी पायल, छह अंगूठियां, करीब 40 चांदी के सिक्के और लगभग 23 हजार रुपये नकद सहित ले गए। चोरी गए उसकी साली के सभी जेवरात शामिल हैं। सुबह जब सोकर उठे तब घटना की जानकारी हुई। कमरों में बिखरा सामान देख परिवार वालों में हड़कंप मच गया। तमाम लोगों की भीड़ मौके पर जुट गई। पुलिस ने परिजनों और आसपास के लोगों से पूछताछ की। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर जांच एसआई मनोज कुमार को सौंपी है।

वाहन की टक्कर से युवक की मौत

संवाददाता, मझगईं

अमृत विचार: पलिया-निघासन मार्ग पर धनीराम पुरवा के पास रविवार रात किसी वाहन ने पीछे से बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार की मौके पर ही मौत हो गई।

विशाल।

थाना क्षेत्र के गांव भगवंतनगर गुलरा निवासी अवधेश तिवारी का पुत्र विशाल तिवारी (20) किसी काम से पलिया गया था। रविवार रात करीब आठ बजे वह बाइक से घर लौट रहा था। इसी दौरान धनीराम पुरवा के पास अज्ञात वाहन ने उसकी बाइक में पीछे से टक्कर मार दी। इससे वह बाइक समेत सड़क पर गिर गया। इसी बीच वाहन का पहिया उसके सिर को कुचलते हुए निकल गया। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलने पर तमाम लोगों की भीड़ जुट गई। सूचना पाकर प्रभारी निरीक्षक राजू राव भी फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने पहचान होने के बाद परिवार वालों को सूचना दी। इससे परिजनों में चीख पुकार मच गई। रोते-बिलखते परिजन मौके पर पहुंचे। शव की हालत देख परिजनों में कोहराम मच गया। युवक की असमय मौत से पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई।

पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। प्रभारी निरीक्षक राजू राव ने बताया कि अज्ञात वाहन की टक्कर से युवक की मौत हुई है। वाहन की तलाश की जा रही है और मामले की जांच जारी है।

मृतक के घर शोक में बैठी महिलाएं। ● अमृत विचार

तीन भाइयों में छोटा था विशाल

परिजनों ने बताया कि मृतक विशाल तीन भाइयों में सबसे छोटा था। उसके दोनों बड़े भाई गुजरात में रहकर मजदूरी करते हैं। यह परिवार के लिए दूसरा बड़ा हादसा है। इससे पहले 27 दिसंबर 2014 को विशाल के पिता अवधेश तिवारी की भी नौगवां क्षेत्र में सड़क दुर्घटना में मौत हो चुकी थी। ठीक दस साल बाद 28 दिसंबर को बेटे की मौत ने पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया है।

प्रदेश में 3683 करोड़ का मनरेगा भुगतान अटका

महिपाल गंगवार, बरेली

- वित्तीय वर्ष 2022-23 से लंबित चल रहा निर्माण सामग्री का भुगतान, प्रधान-वेंडर सब परेशान

अमृत विचार : प्रदेश में मनरेगा योजना के तहत कराए गए निर्माण कार्यों का दो साल का 3683 करोड़ रुपये का भुगतान लंबित है। प्रधानों का कहना है कि केंद्र सरकार ने हाल ही में योजना का नाम बदलकर वीबी-जी राम जी कर दिया है। मगर, नए नाम और नए दावों के बीच पुरानी भुगतान व्यवस्था की खामियां जस की तस बनी हैं। हालात यह है कि अकेले बरेली मंडल में ही करीब 150 करोड़ रुपये का बकाया फंसा हुआ है। शासन से समय पर ग्रांट न आने के कारण न तो पुराने भुगतान हो पा रहे हैं और न ही नए कार्यों को आगे बढ़ाया जा पा रहा है।

मनरेगा के तहत संपर्क मार्ग, इंटर लॉकिंग, पंचायत भवन, एमडीएम शेड, आंगनबाड़ी केंद्रों, अन्नपूर्णा भवनों, पार्क का निर्माण कराया जाता है। इसमें मजदूरी का सौ फीसदी भुगतान केंद्र सरकार करती है, जबकि सामग्री में 75 फीसदी हिस्सा केंद्र का और 25 फीसदी हिस्सा राज्य का है। बीते दिनों प्रदेश में कुल बकाया का 14 फीसदी भुगतान हुआ था। इसके बाद भी भुगतान की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 का 1068 करोड़, वित्तीय वर्ष 2024-25 का 2615 करोड़ रुपये का भुगतान अब तक नहीं हुआ है। शासन से समय पर ग्रांट न मिलने की वजह से जिन कार्यों को पूरा किया जा चुका है, उनका भुगतान न मिलने से सबसे ज्यादा परेशानी उन व्यापारियों को हो रही है, जिन्होंने सामग्री सप्लाई कर निर्माण कार्य पूरे कराए। अब पैसा न मिलने पर चक्कर काटने को मजबूर हैं। कई छोटे व्यापारी आर्थिक तंगी के कगार पर पहुंच गए हैं।

उधर, ग्राम प्रधानों में भी इसको लेकर भारी नाराजगी है। प्रधानों का कहना है कि मनरेगा जैसी योजना, जो ग्रामीण रोजगार और बुनियादी ढांचे को मजबूती देने के लिए बनी थी, आज खुद सिस्टम की भेंट चढ़ती दिख रही है। भुगतान न होने से उनकी साख गांव में गिर रही है। भविष्य में कोई भी व्यापारी उधार में काम कराने को तैयार नहीं है। अधिकारियों की ओर से सिर्फ आश्वासन मिल रहे हैं। यदि शासन ने जल्द ग्रांट जारी कर बकाया भुगतान नहीं किया, तो इसका असर केवल विकास कार्यों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि ग्रामीण बेरोजगारी और असंतोष भी तेजी से बढ़ेगा।

मनरेगा श्रमिकों की मजदूरी का भी 92 करोड़ बकाया : प्रदेश में मनरेगा श्रमिकों की मजदूरी पर भी संकट छाया हुआ है। वर्ष 2022-23 से अब तक का 92 करोड़ रुपये बकाया है। ग्रामीण रोजगार की रीढ़ मानी जाने वाली इस योजना में मजदूरों को समय पर मेहनताना न मिलना गंभीर चिंता का विषय है। महीनों से भुगतान अटका होने के कारण लाखों श्रमिक आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। दिहाड़ी पर निर्भर परिवारों के सामने रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना मुश्किल हो गया है।

यही हाल रहा तो आसान नहीं होगी राह : अखिल भारतीय प्रधान संगठन के जिलाध्यक्ष सुधीश पांडेय का कहना है कि मनरेगा भुगतान को लेकर संगठन की तरफ से लगातार आवाज उठाई जा रही है। भुगतान में देरी से श्रमिक ही नहीं निर्माण सामग्री सप्लाई करने वाली फर्में भी परेशान हैं। भुगतान में इसी तरह से देरी होती रही तो योजना में काम करने के लिए वेंडर नहीं मिलेंगे।

यह है बरेली मंडल का हाल

बरेली जिले में चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के 11.56 करोड़, वित्तीय वर्ष 2024-25 के 28.67 करोड़ रुपये, पीलीभीत में चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के 13.74 करोड़, वित्तीय वर्ष 2024-25 के 25 करोड़ रुपये, बदायूं में चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के 6.52 करोड़, वित्तीय वर्ष 2024-25 के 23.01 करोड़ रुपये, शाहजहांपुर में चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 के 14.16 करोड़, वित्तीय वर्ष 2024-25 के 27.62 करोड़ रुपये का बकाया है।

ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटने से दो युवकों की मौत

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : थाना फरधान क्षेत्र में रविवार की देर रात ट्रैक्टर-ट्राली पलटने से दो लोगों की उसके नीचे दबकर मौत हो गई। हादसा रात करीब 10:30 बजे मनिकापुर तिराहे के पास हुआ। प्रभारी निरीक्षक फरधान दिलीप चौबे ने बताया कि गांव सरगड़ा निवासी शिशुपाल (24) ट्रैक्टर चला रहा था। ट्रैक्टर पर गांव अमकोटवा निवासी इमरान भी सवार था। मनिकापुर चौराहा पर ट्रैक्टर-ट्राली अनियंत्रित होकर सड़क के डिवाइडर से टकराकर पलट गया। ट्रॉली के नीचे दबने से दोनों युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। धमाके की आवाज होने पर आसपास के तमाम लोग मौके पर पहुंच गए और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस जब तक ग्रामीणों के प्रयास से दबे दोनों युवकों को बाहर निकालती। इससे पहले ही दोनों की मौत हो गई। पुलिस ने मृतकों की पहचान कराने के बाद उनके घरों को हादसे की सूचना दी। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।

जहरीला पदार्थ खाकर युवती ने ने दी जान

संवाददाता, धौरहरा

- मंगेतर ने दी शादी तोड़ने की धमकी, आहत होकर उठाया कदम

अमृत विचार: थाना पढुआ क्षेत्र की एक युवती ने मंगेतर के शादी तोड़ने की धमकी दिए जाने से आहत होकर जहरीला पदार्थ खा लिया। इससे उसकी हालत बिगड़ गई। परिजनों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान युवती की मौत हो गई।

पढुआ थाना क्षेत्र के गोसाइनपुरवा मजरा सेमरी गांव जकरन सिंह ने पुलिस को तहरीर देकर आरोप लगाया है कि उसने अपनी बहन जगप्रीतकौर की सगाई 2 जून 2025 को ग्राम कबीरगंज थाना हजारा जनपद पीलीभीत निवासी गुरु सिमरन सिंह पुत्र रंजोध सिंह के साथ तय की थी। सगाई के कुछ दिन बाद तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा, लेकिन बाद में मंगेतर को फोन पर लगातार अपमानित करने लगा।और उसे मायके पक्ष से शादी न करने की बात कहने का दबाव बनाने लगा, और धमकी दी कि यदि उसने ऐसा नहीं किया तो उसे पूरे समाज में बदनाम कर देगा , जिससे कोई भी उससे शादी नहीं करेगा। इस मानसिक प्रताड़ना से उसकी बहन पूरी तरह टूट गई।और 5 दिसंबर को जहरीला पदार्थ खा लिया। इलाज के दौरान शनिवार को उसकी मौत हो गई। घटना से परिवार में कोहराम मच गया है। मामले में पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर कार्यवाही शुरू की है। प्रभारी निरीक्षक पढुआ विवेक कुमार उपाध्याय ने बताया रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना की जा रही है।

चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ने ऑनलाइन ली घूस

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- आंगनबाड़ी की नई भर्ती शुरू होने से पहले पुरानी भर्ती में घूसखोरी का मामला उजागर

अमृत विचार : नई आंगनबाड़ी भर्ती शुरू होने से पहले पुरानी भर्ती में हुई घूसखोरी का मामला एक बार फिर सामने आया है।

डीएसटीओ कार्यालय के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ने इसी साल हुई आंगनबाड़ी भर्ती में एक व्यक्ति से एक लाख रुपये गूगल पे के माध्यम से घूस के रूप में ले लिए। जब पीड़ित ने पैसा वापस मांगा तो कर्मचारी ने नहीं लौटाए। पीड़ित ने विकास भवन पहुंचकर हंगामा कर दिया, जिससे मामला सार्वजनिक हो गया। किसी तरह कर्मचारियों ने उसको काबू में किया। इधर, सीडीओ ने मामला संज्ञान में आते ही तुरंत एक्शन लेते हुए बारादरी पुलिस को मौके पर बुला लिया। पुलिस ने आरोपी को थाने ले जाकर पूरा पैसा वापस करवाया। अब आरोपी के निलंबन की तैयारी है। घटनाक्रम शुक्रवार देर शाम का है। इसमें सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि आरोपी कर्मचारी दूसरे विभाग का था, जिससे साफ है कि भ्रष्टाचार अब विभागीय सीमाओं की परवाह नहीं करता। इससे पहले भी रिश्वतखोरी के मामले में एक सीडीपीओ को निलंबित किया गया था और एक संविदा कर्मी की सेवाएं समाप्त की जा चुकी हैं। डीडीओ दिनेश यादव ने बताया कि आरोपी कर्मचारी को निलंबित किया जाएगा। चूंकि डीएसटीओ अभी अवकाश पर हैं, इसलिए निलंबन की कार्रवाई नहीं की जा सकी है। सीडीओ देवयानी ने भी स्पष्ट किया कि भर्ती प्रक्रिया पूरी पारदर्शिता के साथ होगी। किसी विभागीय या बाहरी व्यक्ति ने इसमें सेंधमारी की कोशिश की तो उसके खिलाफ सख्ती एक्शन लेते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई जाएगी।

साइबर ठग ने युवक के खाते से उड़ाए 13.35 लाख रुपये

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- साइबर क्राइम थाना पुलिस ने तहरीर के आधार पर दर्ज की रिपोर्ट, कई लोग हो चुके शिकार

अमृत विचार: जिले में साइबर क्राइम पर अंकुश नहीं लग रहा है। शहर में एक व्यक्ति का मोबाइल हैक करके खाते से 13.35 लाख रुपये उड़ा लिए।

सदर बाजार थाना क्षेत्र के मोहल्ला गदियाना निगोही रोड निवासी अनिल कुमार ने साइबर क्राइम थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि 18 दिसंबर को उसके मोबाइल नंबर एक मिस काल आयी। काल करने वाले व्यक्ति ने यूनो एप अपडेट करने के लिए बारे में बताया गया। इसके बाद उसके मोबाइल नंबर व्हाटसएप मैसेज से एसबीआई यूनो एप का लिंक आया है। उसको व्हाटसएप काल पर लिंक दबाकर यनो एप अपडेट करने के बारे में बताया गया। पीड़ित ने अपडेट करने के बाद बताए गए नियमों का पालन किया। उसका फोन हैंक हो गया। उसके खाते से 13.35 लाख रुपये कट गए। साइबर क्राइम थाना प्रभारी ने बताया कि ठगी की रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

आवश्यकता है
- कंप्यूटर ऑपरेटर (MS ऑफिस अनिवार्य, Corel Draw अनुभवी को वरीयता)
- नर्स ANM/GNM (Male) ● आयुर्वेदिक परिचारिका
- पंचकर्म थेरेपिस्ट/असिस्टेंट (Male, Female)
- आयुर्वेदिक मेडिकल स्टोर पर कार्य हेतु अनुभवी लड़के/लड़की
- रसोइया ● वार्ड बॉय
- हॉस्टल वार्डन फीमेल
- कैंटीन सुपरवाइजर/मेस सुपरवाइजर

रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल
सेक्टर-7, रामगंगा नगर योजना डोहरा रोड, बरेली
मो. +91-8077808309, 9837357497

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे आधार कार्ड पर मेरा नाम दीपक कुमार सक्सेना दर्ज है जबकि मेरी हाईस्कूल की मार्कशीट में मेरा नाम दीपक सक्सेना दर्ज है। यह दोनों नाम मेरे ही हैं। भविष्य में मुझे दीपक कुमार सक्सेना के नाम से ही जाना जाए। **दीपक कुमार सक्सेना पुत्र श्री हरीप्रसाद सक्सेना नि. दिलाजाक कैंट तहसील सदर जिला शाहजहांपुर**

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

न्यूज ब्रीफ

ट्रेन की चपेट में आने से बुजुर्ग महिला की मौत

बरेली, अमृत विचार : सीबीगंज थाना क्षेत्र में एक बुजुर्ग महिला की ट्रेन की चपेट में आने से मौत हो गई। परसाखेड़ा गौटिया निवासी टिकौली देवी (72) सोमवार दोपहर को घर से बकरी चराने के लिए गई थीं। घर से करीब 200 मीटर दूर रेलवे ट्रैक के खंभा नंबर 1321 के पास अचानक ट्रेन की चपेट में आने से मौके पर मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि वह कम सुनती थीं और आंख से भी बहुत साफ नहीं दिखाई देता था। महिला के बेटे करण और दुर्गा प्रसाद हैं।

शहर के कई इलाकों में रहा बिजली संकट

बरेली, अमृत विचार : शहर के कई इलाकों में सोमवार को बिजली का संकट बना रहा। सदर कैंट और सनसिटी क्षेत्र में काम कराए जाने के चलते तीन घंटे का शटडाउन रहा। वहीं किला में पोल से बिजली आपूर्ति बाधित रही। इसके अलावा कुतुबखाना, सिविल लाइंस प्रथम में भी दिक्कत रही। मिशन सबस्टेशन के किशोर बाजार में ट्रांसफार्मर का तार टूट जाने से बिजली आपूर्ति प्रभावित रही। दुर्गानगर सबस्टेशन पर आरडीएसएस योजना के तहत काम होने के चलते संजयनगर बाईपास फीडर पर शटडाउन रहा। सुभाषनगर, जगतपुर और शहर के अन्य इलाकों में भी लोकल फाल्ट और ट्रिपिंग से उपभोक्ता परेशान हुए।

बसाई जा रही अवैध कॉलोनियां ध्वस्त

बरेली, अमृत विचार : बीडीए ने सोमवार को सुभाष नगर इलाके में अभियान चलाकर 26 बीघा क्षेत्रफल में बसाई जा रहीं तीन अलग-अलग अवैध कॉलोनियों को बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दिया। बीडीए के विशेष कार्याधिकारी अजीत कुमार सिंह ने बताया कि सुभाष नगर में बदायूं रोड पर अनिल अग्रवाल लगभग 8 बीघा क्षेत्रफल, विजय पंडित व श्याम बाबू लगभग 10 बीघा क्षेत्रफल और अश्विनी चौहान बदायूं रोड पर लगभग 8 बीघा क्षेत्रफल में बिना विकास प्राधिकरण की स्वीकृति के भूखंडों का चिह्नांकन, सड़क व चहारदीवारी आदि का कार्य करते हुए अवैध कालोनी का निर्माण कार्य करा रहे थे, जिसे बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया गया। उन्होंने बताया कि बिना मानचित्र स्वीकृति के कॉलोनी काटना या भवन निर्माण करना सीधा कानून का उल्लंघन है। ऐसे मामलों में किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा।

स्वास्थ्य केंद्रों पर 10 से अधिक डिलीवरी कराएं

मंडलायुक्त ने विकास भवन में मंडलीय समीक्षा बैठक में संस्थागत प्रसव की संख्या बढ़ाने के लिए दिए निर्देश

कार्यालय संवाददाता, बरेली

विकास भवन के सभागार में मंडलीय समीक्षा बैठक करते मंडलायुक्त भूपेंद्र एस चौधरी।

अमृत विचार: मंडलायुक्त भूपेन्द्र एस. चौधरी ने सोमवार को विकास भवन के सभागार में मंडलीय विकास कार्यों और योजनाओं की समीक्षा बैठक की। संस्थागत प्रसव की समीक्षा में स्वास्थ्य केंद्रों में अमरिया, जरियनपुर व बरखेड़ा में डिलीवरी कम मिली। जरियनपुर, पूरनपुर में सिजेरियन नहीं हुए, कारण पूछकर मंडलायुक्त ने निर्देश दिए गए कि केंद्रों पर 10 से अधिक डिलीवरी कराने का प्रयास करें।

बरेली के विकास खंड शेरगढ़ में वसुंधरा प्रसव केंद्र सक्सेस स्टोरी के रूप में है, यहां बड़ी संख्या में डिलीवरी हो रही हैं, इसी प्रकार जनपद बदायूं के वजीरगंज के उसगवां में भी अच्छा कार्य हुआ है। सभी चिकित्सा इकाइयों में अग्नि व विद्युत सुरक्षा संबंधी आदेशों के क्रम में बताया कि बरेली में 16 में से 14 में फायर एनओसी ले ली है, विकासखंड बिथरी चैनपुर और फतेहगंज पश्चिमी में अभी एनओसी लेना अवशेष है। मंडल स्तर पर प्रतिशत 96.4 टीकाकरण हुआ है, आयुष्मान कार्ड बनाने में जनपद बदायूं पीछे है।

- बरेली के विकास खंड शेरगढ़ के वसुंधरा प्रसव केंद्र को सक्सेस स्टोरी के रूप में दें
- रियायती दरों की यूरिया का उपयोग औद्योगिक कार्यों में होने की जांच कराने के निर्देश

मंडलायुक्त ने संयुक्त निदेशक कृषि को निर्देश दिए कि मंडल के जिलों में उर्वरक न मिलने की समस्या देखें। यह भी जांच कराएं कि रियायती दरों की यूरिया का उपयोग कहीं औद्योगिक कार्य में तो नहीं लिया जा रहा है। समाज कल्याण विभाग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्ति की समीक्षा की, मंडलायुक्त को बताया कि जनपद समिति ने शुद्ध एवं संदेहास्पद डाटा लॉक करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2026 रखी है, धनराशि अंतरण 9 फरवरी 2026 तक किया जाना है। मुख्यमंत्री कंपोजिट स्कूल की समीक्षा में बताया गया कि शाहजहांपुर में 6, अवशेष जनपदों में 2-2 कंपोजिट विद्यालय प्रस्तावित है। शाहजहांपुर के कजरी नूरपुर में कार्य शुरू हो गया, बरेली के दोनों स्थानों पर कार्य प्रगति पर है। पीलीभीत में एक स्थान पर जनवरी में कार्य शुरू होगा।

बोगस फर्मों की फैली चेन चिह्नित कर सख्त कार्रवाई करें

कर करेत्तर की समीक्षा में राज्यकर में बरेली जोन प्रदेश में प्रथम स्थान पर बताया। स्टाम्प एंड रजिस्ट्रेशन की समीक्षा में मण्डल में 88.51 प्रतिशत वसूली हुई है। बोगस फर्मों की फैली चेन को चिह्नित कर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए। आबकारी विभाग में 93.84 प्रतिशत वसूली की है। निर्देश दिए कि ओवर रेटिंग न हो, इसका ध्यान रखें। परिवहन विभाग को प्रवर्तन कार्य बढ़ाने के निर्देश दिए।

मंडल में 608654.18 क्विंटल धान की खरीद

-धान खरीद की समीक्षा में पाया कि मंडल में 27 दिसम्बर तक लक्ष्य का 89 प्रतिशत धान क्रय कर लिया। 63 प्रतिशत धान मिलों को भी भेजा है। बरेली में 148713.86 क्विंटल, बदायूं में 32925.44 क्विंटल, शाहजहांपुर 255222.48 क्विंटल और पीलीभीत में 171792.39 क्विंटल कुल 608654.18 क्विंटल धान खरीद हुई है, जो लक्ष्य के सापेक्ष 84.65 है। मंडलायुक्त ने कहा कि शिकायत आ रही है कि किसान से धान खरीद नहीं की जा रही है, उन्हें विभिन्न कारण बताकर वापस किया जा रहा है, इस पर विशेष ध्यान दें।

मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान योजना में बरेली जनपद में सबसे अच्छा कार्य हुआ है। मुख्यमंत्री डैशबोर्ड, छात्रवृत्ति, फैमिली आईडी, पर्यावरण जलवायु, आईसीडीएस तथा सेतुओं के निर्माण की समीक्षा की। राजस्व वादों के निस्तारण की समीक्षा में 5 वर्ष से अधिक समय से लंबित वादों का निस्तारण करने के निर्देश दिए। धारा-80 के अंतर्गत कितने प्रकरण रिजेक्ट किए हैं, उसके कारणों पर ध्यान देने के निर्देश दिए। बैठक में डीएम बरेली अविनाश सिंह, डीएम बदायूं अवनीश राय, डीएम पीलीभीत ज्ञानेन्द्र सिंह, सीडीओ देवयानी, संयुक्त विकास आयुक्त देवेन्द्र प्रताप, अपर आयुक्त प्रीति जायसवाल मंडल स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

कोहरे में 7 ट्रेनें रद्द, दर्जनों ट्रेनों ने कराया घंटों इंतजार

बरेली जंक्शन पर ट्रेन में चढ़ने के लिए मारामारी करते यात्री।

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार: कोहरे की वजह से ट्रेनों का संचालन लगातार प्रभावित हो रहा है। ट्रेनों के घंटों देरी से आने से यात्रियों को कड़ाके की सर्दी में परेशान होना पड़ रहा है। वेटिंग रूम में भी जगह नहीं मिल रही है। सोमवार को भी 7 ट्रेनें कोहरे के चलते रद्द रहीं और दर्जनों ट्रेनों ने घंटों इंतजार कराया।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि कोहरे की वजह से दृश्यता काफी कम है। इसलिए संचालन प्रभावित हो रहा है। 12369 देहरादून कुंभ सुपरफास्ट, 15075 टनकपुर त्रिवेणी एक्सप्रेस, 15909 लालगढ़ अवध आसाम एक्सप्रेस, 14618 पूर्णियां कोट जनसेवा एक्सप्रेस, 64176 रोजी बीआर पैसेंजर, 14523 अंबाला कैंट हरिहर एक्सप्रेस, 12210 कानपुर गरीब रथ एक्सप्रेस सोमवार को कोहरे के चलते रद्द रहीं। इसके अलावा 13109 काठगोदाम बाघ एक्सप्रेस 12 घंटे, 12203 अमृतसर गरीब नवाज एक्सप्रेस 4 घंटे 32 मिनट, 12370 हावड़ा कुंभ सुपरफास्ट 4 घंटे, 12232 लखनऊ इंटरसिटी 4 घंटे 20 मिनट, 15910 डिब्रूगढ़ अवध आसाम एक्सप्रेस 1 घंटा 44 मिनट की देरी से आई।

- काठगोदाम बाघ एक्सप्रेस 12 घंटे अमृतसर गरीब नवाज एक्सप्रेस 4 घंटे देरी से आई

फतवा : मुसलमान न मनाएं नए साल का जश्न

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : नए साल के जश्न को उलमा ने शरीयत की नजर में नाजायज करार दिया है। ऑल इंडिया मुस्लिम जमात की तरफ से फतवा जारी करते हुए मुसलमानों से नए साल के जश्न से दूर रहने को कहा है। उलमा ने कहा कि 31 दिसंबर की रात युवा जश्न मनाने के नाम पर होटल और बार में जाकर हुडदंग करने के साथ डांस और शराब पार्टी करते हैं, जबकि इन चीजों को इस्लाम में हराम बताया गया है। ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन रजवी ने सोमवार को सोशल मीडिया पर वीडियो जारी करके कहा कि उनसे कुछ लोगों ने सवाल पूछा है कि नए साल पर जश्न मनाना जायज है या नाजायज। इसके जवाब में मौलाना ने कहा कि नए साल पर जश्न मनाना शरीयत की रोशनी में नाजायज है। उन्होंने बताया कि इस्लामी कलेंडर का साल मोहर्रम के महीने से शुरू होता है। ऐसे ही हिंदू कलेंडर का साल चैत्र माह से शुरू होता है। 31 दिसंबर या एक जनवरी को नए साल का जश्न मनाना यूरोपियन कल्चर है। मौलाना ने कहा कि नए साल के जश्न के नाम पर 31 दिसंबर की रात शोर-शराबा, हंगामा, नाचना-गाना होता है। ये सब फिजूलखर्ची है। शरीयत में इन तमाम चीजों की इजाजत नहीं है।

- ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष मौलाना शहाबुद्दीन ने बताया इस्लाम में नए साल का जश्न नाजायज

नए साल से जंक्शन तक आएगी पीलीभीत-बरेली सिटी पैसेंजर

बरेली अमृत विचार : पूर्वोत्तर रेलवे इज्जतनगर मंडल ने यात्रियों की सुविधा के लिए 55320 पीलीभीत-बरेली सिटी पैसेंजर का विस्तार 1 जनवरी से बरेली जंक्शन तक किया गया है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक संजीव शर्मा ने बताया कि ट्रेन पीलीभीत से संशोधित समय 13:25 बजे प्रस्थान कर पूर्व निर्धारित समय एवं स्टेशनों पर रुकते हुए बरेली सिटी 15:35 बजे पहुंचकर एवं 15:40 बजे प्रस्थान कर बरेली जंक्शन 15:55 बजे पहुंचेगी। इसके अलावा 1 जनवरी से 55330 बरेली जंक्शन-कासगंज पैसेंजर बरेली जंक्शन से 17:25 बजे प्रस्थान कर पूर्व निर्धारित समय एवं स्टेशनों पर रुकते हुए कासगंज 20:30 बजे पहुंचेगी। परिचालन कारणों से निरस्त की गईं।

अटल का व्यक्तित्व देशवासियों को दे रहा प्रेरणा

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार: सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने सोमवार को कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का विराट व्यक्तित्व देशवासियों को नई प्रेरणा प्रदान कर रहा है। राजनेता से राष्ट्रनेता तक उनकी यशस्वी यात्रा अभिनंदनीय है। उनकी नीति में दूरदृष्टि, नेतृत्व में सेवा भाव और निर्णयों में राजनीतिक कुशलता थी। ये हमारे प्रदेश की राजधानी का सौभाग्य है कि इसका प्रतिनिधित्व करते हुए प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश को विकास के नए दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाने का काम किया।

भाजपा महानगर की ओर से पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर सोमवार को अर्बन हाट के ऑडिटोरियम में आयोजित अटल स्मृति समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि और सिंचाई एवं जल संसाधन मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि अटल जी की पैतृक भूमि उत्तरप्रदेश के आगरा के बटेश्वर में है, बलरामपुर से देश की संसद में पहली बार चुने गए और संसद में सर्वाधिक बार उत्तर प्रदेश का ही प्रतिनिधित्व किया। विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ऐसे दूरदर्शी व्यक्तित्व थे, जिनकी राजनीति में गरिमा थी, शब्दों में संयम और निर्णयों में राष्ट्र के प्रति गहरी प्रतिबद्धता थी। उन्होंने सत्ता को सदैव जनसेवा का माध्यम माना। महापौर डॉ. उमेश गौतम ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस को सुशासन दिवस के रूप में भी जाना जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी का राजनीतिक जीवन लंबा और प्रेरणादायक रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महानगर अध्यक्ष अधीर सक्सेना ने कहा कि अटल जी ने पड़ोसी देशों के साथ शांति की पहल भी की। उनका मानना था कि युद्ध नहीं, बल्कि संवाद से समस्याओं का समाधान होना चाहिए। विरोधी दल के नेता भी उनकी वाणी, तर्क और शालीनता का सम्मान करते थे।

इससे पहले स्वतंत्र देव सिंह और दुर्विजय सिंह शाक्य ने अटल बिहारी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की। समारोह में गुलशन आनंद, श्रुति गंगवार, देवेंद्र जोशी, प्रभु दयाल लोधी, उमेश कठेरिया, बंटी ठाकुर, तृप्ति गुप्ता, प्रतेश पांडेय, अनुपम कपूर, रेखा श्रीवास्तव, विशाल मल्होत्रा, सर्वेश रस्तोगी, अजय चौहान, शालिनी जौहरी, चित्रा मिश्रा, मोहित तिवारी, नरेन्द्र मौर्या, कन्हैया राजपूत, जयदीप चौधरी, अजय मौर्या, राजीव कश्यप, बृजेश सिंह, शिखा मल्होत्रा उपस्थित रहे।

- स्वतंत्र देव सिंह ने कहा, राजनेता से राष्ट्रनेता तक उनकी यशस्वी यात्रा अभिनंदनीय

सट्टा माफिया तन्नू समेत तीन बदमाश किए गए जिला बदर

बरेली, अमृत विचार : जिलाधिकारी अविनाश सिंह ने सट्टा माफिया जगमोहन उर्फ तन्नू समेत तीन बदमाशों को छह-छह माह के लिए जिला बदर घोषित किया है। तन्नू के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट, हत्या समेत अलग-अलग थानों में हत्या समेत 19 आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं और वह कई बार जेल जा चुका है।

जिला बदर किए गए अपराधियों में इज्जतनगर थाना क्षेत्र का बेचा, बारादरी थाना क्षेत्र का सट्टा माफिया जगमोहन उर्फ तन्नू और वसीम उर्फ गंठी शामिल हैं। तीनों को छह-छह माह तक बरेली की सीमा से बाहर रहना होगा। गंगापुर निवासी सट्टा माफिया और गैंगस्टर जगमोहन उर्फ तन्नू पुलिस को चकमा देकर कुछ दिनों पहले कोर्ट में आत्मसमर्पण कर जेल गया था।

प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में बढ़ रही पर्यटकों की संख्या

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश में जिस तेजी से पर्यटकों की संख्या बढ़ी है, उसी गति से आवासीय सुविधाओं की मांग बढ़ी है। लखीमपुर खीरी, पीलीभीत और बहराइच में वन्यजीव अभयारण्यों के निकट रहने वाले निवासियों के लिए आमदनी की एक नई संभावनाएं विकसित हो रही है। स्थानीय निवासी अपने मकानों के अतिरिक्त कमरे पर्यटकों को उपलब्ध कराकर अच्छी इनकम प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए पर्यटन विभाग बेड एंड ब्रेकफास्ट एवं होमस्टे नीति-2025 लेकर आया है, जिसमें पंजीकरण सरल और सुलभ है।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि ऐसे आवासीय भवन, जिनमें भूस्वामी स्वयं निवास करता हो एवं उसके पास अपने प्रयोग के बाद अतिरिक्त कक्ष उपलब्ध हो, जिन्हें यह पर्यटकों को आवास हेतु उपलब्ध कराना चाहे। ऐसे कक्षों की संख्या अधिकतम 06 हो सकती है, अर्थात कुल 12 बेड की व्यवस्था किसी एक आवासीय इकाई में हो सकती है। जहां भूस्वामी स्वयं निवास न करता हो वहां एक केयरटेकर रखना अनिवार्य होगा, जो इकाई के रखरखाव एवं संचालन का कार्य करेगा। टूरिज्म पोर्टल https://up.tourismportal.in/application/bnb/login पर जाकर पंजीकरण करा सकते हैं।

पर्यटन मंत्री ने बताया कि सरकारी प्रयासों से उत्तर प्रदेश में ईको टूरिज्म ने सशक्त पहचान बनाई है। इसका स्पष्ट प्रमाण प्रदेश के वन एवं सीमावर्ती जिलों में लगातार बढ़ता पर्यटक आगमन है। वर्ष 2025 में जनवरी से जून महीने तक लखीमपुर में जहां 11.36 लाख से अधिक पर्यटक आए, वहीं पीलीभीत में आगंतुकों की संख्या करीब 24 लाख रही।

- बढ़ते पर्यटन से स्थायी निवासियों की आमदनी में बढ़ोतरी: जयवीर

डॉ. तजीन बोलीं-जेल में आजम खां को नहीं दिया गया बिस्तर

कार्यालय संवाददाता, रामपुर

अमृत विचार : जेल में बंद आजम खां से उनकी पत्नी डॉ. तजीन फातिमा और बेटे अदीब आजम ने सोमवार को करीब आधा घंटा मुलाकात की। बाद में उन्होंने बताया कि आजम खां को जेल में बिस्तर नहीं दिया गया है।

मुलाकात के बाद जेल से बाहर निकलीं डॉ. तजीन फातिमा ने कहा कि उन्हें कोई सुविधा नहीं दी गई है, उन्होंने आगे बताया उनकी तबियत जैसी थी वैसी है। एक सवाल के जवाब में कहा कि बार-बार पूछने से भी क्या फायदा। बेटे अदीब आजम खां ने कहा कि उनकी भी मुलाकात हुई। मोहम्मद आजम खां पैन कार्ड मामले में डेढ़ माह से रामपुर जेल में सजा काट रहे हैं। आजम खां को एमपी-एमएलए कोर्ट ने सजा सुनाई थी। जिसके बाद उन्हें कोर्ट ने रामपुर जेल भेज दिया था। कड़ाके की सर्दी में भी जेल में आजम खां को पलंग-बिस्तर नहीं दिया गया है। इस मुद्दे पर सपा के शहर अध्यक्ष आसिम राजा ने पत्रकार वार्ता में यह मुद्दा उठाया था। आजम खां की पत्नी पूर्व विधायक डॉ. तजीन फातिमा ने कहा कि उन्हें जेल प्रशासन की ओर से कोई सुविधा नहीं दी जा रही है। उनको जैसे पहले जमीन पर लिटाया जा रहा था अब भी जमीन पर लिटाया जा रहा है।

रामपुर जेल से बाहर आतीं डॉ. तजीन फातिमा और अदीब आजम। ● अमृत विचार

- जेल में बंद आजम खां से पत्नी और बेटे ने की मुलाकात

छात्रा की जन्मदिन पार्टी में हंगामा करने वाले छह गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : प्रेमनगर थाना क्षेत्र के राजेंद्रनगर में कैफे में एक छात्रा की जन्मदिन पार्टी में लव जिहाद के नाम पर हंगामा कर तोड़फोड़ करने वाले एक नाबालिग समेत छह आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार हुए सभी आरोपी बजरंग दल से जुड़े बताए जा रहे हैं। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान वीर सावरकर नगर निवासी प्रिंस सिंह, आकाश, आशीष उर्फ पारस जौहरी, मृदुल उर्फ मनीष दुबे, दीपक समेत एक नाबालिग के रूप में हुई है।

राजेंद्रनगर स्थित दि डेन कैफे एंड रेस्टो के मालिक पीलीभीत निवासी शैलेंद्र गंगवार ने प्रेमनगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उनके कैफे पर कुछ ग्राहक बैठकर जन्मदिन की पार्टी मना रहे थे। रेस्टोरेंट का स्टाफ उनको सर्विस दे रहा था। इसी बीच सुभाषनगर निवासी ऋषभ ठाकुर और मिनी बाईपास निवासी दीपक पाठक अपने 20 से 25 अज्ञात साथियों के साथ आए और ग्राहकों के साथ मारपीट और गालीगलौज की।

जान से मारने की धमकी देकर सामान तोड़ दिया जिससे उनका काफी नुकसान हुआ। उनके कैफे में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, जिसकी फुटेज भी उनके पास है। इस मामले में पुलिस ने घटना के बाद कैफे संचालक समेत दूसरे समुदाय के दो युवकों का ही शांति भंग की आशंका में चालान कर दिया था। पुलिस ने छह लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस की पूछताछ में पता चला कि ये सभी मुख्य आरोपी ऋषभ ठाकुर और दीपक पाठक के बहकावे में आकर कैफे पर हंगामा करने पहुंचे थे।

- छात्रा की बर्थ डे पार्टी में लव जेहाद का लगाया था आरोप

मालगाड़ी डिरेल होने से प्रभावित हुई ट्रेनें

बरेली, अमृत विचार : बिहार-झारखंड की सीमा पर सीमेंट भरी मालगाड़ी पुल पर डिरेल होने से बरेली होकर गुजरने वाली ट्रेनें भी प्रभावित हुईं। इससे यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। रविवार को मालगाड़ी डिरेल होने के बाद रेल मार्ग 12 घंटे तक बाधित रहा। इसकी वजह से 15005-06 हावड़ा अमृतसर एक्सप्रेस को निरस्त कर दिया गया। 13020-19 बाघ एक्सप्रेस को बरौनी स्टेशन से ही डायवर्ट कर दिया गया। 15006 अमृतसर-हावड़ा एक्सप्रेस 30 दिसंबर को भी निरस्त रहेगी। वहीं 20503 राजधानी एक्सप्रेस, 12332-31 हिमगिरी एक्सप्रेस, 13152-51 कोलकाता एक्सप्रेस भी प्रभावित हुई हैं। रेल लाइन को क्लियर करने का काम तेजी से चल रहा है। मंगलवार सुबह तक गाड़ियों का संचालन सामान्य हो जाएगा।

केंद्रीय कारागार-दो में कैदी की मौत

बरेली, अमृत विचार : केंद्रीय कारागार-दो में जानलेवा हमले के मामले में बेटे के साथ 10 साल की सजा काट रहे कैदी की मौत हो गई। शाही के गांव दुनका निवासी 61 वर्षीय राजकुमार उर्फ कल्लू और उसके बेटे धर्मेंद्र को जानलेवा हमले के मामले में 10 साल की सजा हुई थी। दोनों केंद्रीय कारगार-2 में एक ही बैरक में बंद थे। सोमवार को राजकुमार की अचानक हालत बिगड़ने पर जिला अस्पताल भेजा गया लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। जेल प्रशासन ने उसके परिवार वालों को सूचना दे दी है।

कार्यालय ग्राम पंचायत सुनौरा विकास खण्ड पसगवां-खीरी

पत्रांक- मेमो/निविदा सूचना प्रकाशन/वर्ष 2025-26

अल्पकालीन निविदा सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत सुनौरा में वर्ष 2025-26 मनरेगा योजना के अंतर्गत कार्य कराए जाने हेतु कार्य सामग्री की आपूर्ति हेतु पंजीकृत एवं प्रतिष्ठित फर्मों के स्थाई फर्म जिनका आयकर/वाणिज्य कर विभाग में पंजीकृत हो,से मोहर बंद निविदा दिनांक 29.12.2025 से 12.01.2026 को अपरान्ह 2:00 बजे तक डाक द्वारा अथवा ग्राम पंचायत सुनौरा के पंचायत कार्यालय में निविदा पेटिका में आमंत्रित की जाती है, प्राप्त हुई निविदा पंचायत कार्यालय में 12.01.2026 अपरान्ह 4:00 बजे खोली जायेगी।

क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत
1.	सूरजवली के मकान से छोटे लाल की मोड तक मिटटी खडंजा व नाली निर्माण कार्य	303108.00

कुलदीप राठौर सचिव — जलालुद्दीन प्रधान

IS 15700 : 2018

उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद
कार्यालय सम्पत्ति प्रबन्धक 122, सिविल लाइन्स, बरेली।

भारतीय मानक ब्यूरो — सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि परिषद की आवासीय/व्यवसायिक सम्पत्तियों के निम्नलिखित आवेदकों द्वारा उनके नाम के सामने अंकित सम्पत्ति का हस्तानान्तरण/नामान्तरण किये जाने हेतु परिषद में प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया गया है।

क्र. सं.	मूल आवंटी का नाम	भवन/भूखण्ड संख्या सेक्टर/खण्ड व योजना का नाम	मृत्यु दिनांक	मूल आवंटी के उत्तराधिकारी अथवा आवेदक का नाम	उत्तराधिकारी के पक्ष में अनापत्तिकर्ताओं के नाम	मूल आवंटी से मृतक का संबंध
1.	स्व. श्री अचल नन्दन पाण्डे एवं स्व. श्रीमती प्रेमवती पाण्डे	अ.आ.वर्ग भवन सं. 141 सिविल लाइंस यो.सं.-4 बरेली	15.10.1999 एवं 29.03.2008	श्री संजीव कुमार पाण्डे पुत्र स्व. अचल नन्दन पाण्डे	श्रीमती अनु विमल, श्रीमती संगीता गौर एवं श्रीमती रेनू कौशिश	पुत्र

उपर्युक्त नामान्तरण के सम्बन्ध में यदि किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह साक्ष्य सहित प्रकाशन तिथि से 30 दिनों के अन्दर अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्राप्त करा दें। निर्धारित तिथि तक कोई आपत्ति पत्र न होने पर परिषद अभिलेखों के कॉलम-5 पर लिखित व्यक्ति का नाम दर्ज कर लिया जायेगा तथा उसके बाद किसी आपत्ति पर विचार नहीं किया जायेगा। **सम्पत्ति प्रबन्धक**

हंगामे के बीच 978 करोड़ के पुनरीक्षित बजट को मंजूरी

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : नगर निगम की सोमवार को आयोजित पुनरीक्षित विशेष बजट बैठक में भारी हंगामे के साथ ही पार्षदों का नया अंदाज देखने को मिला। किसी ने गाना गाकर अफसरों पर तंज कसे तो किसी ने सीधे ही शहर के विकास को कागजी आइना साबित करते हुए अफसरों की कार्यशैली पर गंभीर आरोप लगाए। बैठक में पूर्व की भांति पार्षदों ने सबसे पहला मुद्दा कुत्तों और बंदरों के आतंक का ही उठाते हुए स्वास्थ्य विभाग को घेरा। वहीं टैक्स प्रणाली की विसंगतियों पर भी सवाल उठाए। आम जन की सुविधाओं को लेकर सदन में जमकर हंगामा हुआ। आरोप-प्रत्यारोप के बीच 978 करोड़ रुपये के बजट को हरी झंडी मिली।

मेयर डा. उमेश गौतम की अध्यक्षता में सोमवार सुबह करीब 11 बजे बोर्ड की पुरीक्षित बजट को लेकर बैठक हुई। सबसे पहले सपा पार्षद दल के नेता गौरव सक्सेना ने क्या हुआ तेरा वादा वो कसम वो इरादा गाना गाकर अफसरों पर तंज कसा। उन्होंने सवाल उठाए कि टैक्स वसूली लगातार घट रही है, जिससे नगर निगम की आय प्रभावित हो रही है, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी सिर्फ खानापूर्ति कर रहे हैं। वहीं दीपावली पर प्रत्येक वार्ड में 25 नई लाइटें लगाए का आदेश मेयर ने दिया था, लेकिन कई वार्डों में 10 लाइट ही लगीं।

कूड़ा कलेक्शन पर 5 करोड़, 6.50 करोड़ से नाला सफाई

बैठक में एक बार फिर सर्व सम्मति से डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन पर पांच करोड़ रुपये खर्च करने की सहमति बनी है। इसके साथ ही जल निकासी को लेकर भी करीब 6.50 करोड़ का बजट नालों की सफाई के लिए आरक्षित किया गया है। इसके साथ ही राष्ट्रीय वायु स्वच्छ कार्यक्रम 52 करोड़, छुट्टा पशु और आवारा कुत्तों को पकड़ने में 1 करोड़, कान्हा उपवन पर 3.50 करोड़ से 5 करोड़ व पार्कों के सौन्दर्यीकरण के लिए 10 करोड़ का बजट आरक्षित किया गया है।

> आम जन की सुविधाओं और शहर के विकास के लिए बजट को मंजूरी दी गई है। जल्द कार्य धरातल पर आएं जिससे लोगों को लाभ मिले इसके निर्देश अधिकारियों को दिए गए हैं। नगर निगम अपनी आय बढ़ा रहा है और विकास कार्यों पर खर्च भी खूब कर रहा है। -डा. उमेश गौतम, मेयर

> बैठक में आय-व्यय को लेकर चर्चा हुई है। शहर को विकास के पथ पर अग्रणी बनाने के लिए कार्यों में तेजी लाने के निर्देश जारी किए गए हैं। - संजीव कुमार मौर्य, नगर आयुक्त

बजट एक नजर में

- प्रारंभिक अवशेष - 329 करोड़
- प्राप्तियां - 649 करोड़
- अंतिम अवशेष - 198 करोड़
- कुल योग - 978 करोड़

शहर में लगाने को खरीदी जाएंगी 7 हजार लाइटें

शहर के हर वार्ड की गलियां रोशन हो सकें इसके लिए भी पार्षदों की मांग पर मेयर ने 7 हजार लाइटें खरीदने की भी अनुमति प्रदान की है।

एजेंसी दे गई दगा, अब लंगूर भगाएगा बंदर

बैठक में आवारा कुत्तों और बंदरों के आतंक का मुद्दा काफी देर तक गूंजा। पार्षद गौरव सक्सेना, राजेश अग्रवाल, छंगामल मौर्य, अब्दुल कयूम मुन्ना समेत तमाम पार्षदों ने आरोप लगाया कि बंदरों को पकड़ने में घोर लापरवाही की जा रही है। इन जानवरों को पकड़कर दोबारा से शहर के दूसरे इलाके में छोड़ दिया जाता है। इस पर मेयर ने स्वास्थ्य अधिकारियों ने जानकारी मांगी तो बताया कि कुत्तों को पकड़ने के लिए एजेंसी का चयन कर लिया गया है। हालांकि बंदर पकड़ने के लिए किसी कंपनी ने रुचि नहीं दिखाई है। पार्षदों के सुझाव पर वन विभाग से अनुमति लेकर बंदरों का प्रकोप कम करने को लंगूर मंगाने पर सहमति बनी है।

डीडीपुरम में हाउस टैक्स घोटाला, लेकिन कार्रवाई कागजों में

पार्षद राजेश अग्रवाल ने बैठक में कहा कि बीते बोर्ड बैठक में डीडीपुरम इलाके में हाउस टैक्स से जुड़े मामले में बड़ा घोटाला सामने आया था लेकिन लेकिन आज तक किसी भी अधिकारी या कर्मचारी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। मामले की शिकायत मुख्यमंत्री से की जाएगी।

न्यूज ब्रीफ

मंडलायुक्त ने की विकास कार्यों की समीक्षा

अमृत विचार, लखनऊ : मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत की अध्यक्षता में सोमवार को मंडल के सभी जनपदों के विकास कार्यों की मंडलीय समीक्षा बैठक आयुक्त कक्ष कार्यालय में हुई। बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं की भौतिक एवं वित्तीय प्रगति, समयबद्ध लक्ष्यपूर्ति तथा गुणवत्तापूर्ण कार्यान्वयन पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में अपर आयुक्त प्रशासन, अपर आयुक्त न्यायिक, वर्चुअल माध्यम से मण्डल के समस्त जिलाधिकारी व मुख्य विकास अधिकारी सहित संबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। मंडलायुक्त ने कहा कि सभी सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक पहुंचाया जाए। आईजीआरएस प्रकरणों की समीक्षा में मंडलायुक्त ने कहा कि अनियमितता और लापरवाही करने वाले अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने प्रकरणों के निस्तारण के बाद शिकायतकर्ताओं को कॉल करके उनका फीडबैक लेने के निर्देश दिए। मंडलायुक्त ने रैनबसेरों में साफ-सफाई, पर्याप्त कंबल, गरम पानी, प्रकाश, हीटर एवं सुरक्षा की व्यवस्था के भी निर्देश दिए।

प्रगतिशील कृषक व एफपीओ सम्मानित

अमृत विचार, लखनऊ : उद्यान राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने सोमवार को लखनऊ स्थित राजकीय शीतगृह परिसर में डीपी बोरा बाटिका, राजकीय उद्यान के सौन्दर्यीकरण एवं अन्य अवस्थापना सुविधाओं का शिलान्यास किया। इसके बाद उन्होंने एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एमआईडीएच) योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय कृषक संगोष्ठी-2025 का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में लखनऊ उत्तर से विधायक डॉ. नीरज बोरा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर उद्यान मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने कहा कि अलीगंज स्थित राजकीय उद्यान का जीर्णोद्धार एवं डीपी बोरा बाटिका की स्थापना क्षेत्र के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने दिवंगत डीपी बोरा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका जनसेवा का जीवन समाज के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा।

सत्र संबद्धता के लिए आवेदन आमंत्रित

अमृत विचार, लखनऊ : प्राविधिक शिक्षा विभाग, उप्र. शासन द्वारा डिप्लोमा सेक्टर के अंतर्गत नवीन डिप्लोमा स्तरीय तकनीकी (इंजीनियरिंग) एवं डिप्लोमा वास्तुकला (आर्किटेक्चर) शिक्षण संस्थानों (डी-फार्मा संस्थानों को छोड़कर) को शैक्षिक सत्र 2026-27 के लिए संबद्धता प्रदान किए जाने के संबंध में शासनादेश जारी किया गया है। प्राविधिक शिक्षा परिषद के सचिव संतोष कुमार सिंह ने बताया कि शासनादेश में वर्णित निर्देशों एवं प्राविधानों के अंतर्गत निजी क्षेत्र में स्थापित होने वाले नवीन डिप्लोमा स्तरीय तकनीकी एवं वास्तुकला शिक्षण संस्थानों को परिषद से संबद्धता प्रदान किए जाने के लिए यू-राईज पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। आवेदन की प्रक्रिया 1 जनवरी 2026 से प्रारंभ होकर 30 अप्रैल 2026 की रात्रि 11:59 बजे तक निर्धारित की गई है।

गोवंश को ठंड से बचाने के निर्देश

अमृत विचार, लखनऊ : पशुधन मंत्री धर्मपाल ने विधान भवन स्थित कार्यालय कक्ष में सोमवार को प्रदेश के गौ आश्रय स्थलों की ताजा स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को सख्त रूप से निर्देश दिये कि गो आश्रय स्थलों पर गोवंश के ठंड से बचाव के लिए त्रिपाल अलाव आदि की पर्याप्त व्यवस्था की जाए। ठंड से किसी भी गोवंश की मृत्यु न हो। उन्होंने हिदायत दी कि पशुचिकित्साधिकारी गौ आश्रयस्थल पर जाकर गोवंश के उत्तम स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं औषधि की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

डिजिटल नियंत्रण और जीरो टॉलरेंस से यूपी आबकारी मॉडल देश में नंबर वन

वार्षिकी : यूपी सरकार की नई आबकारी नीति से निवेश, रोजगार और राजस्व में वृद्धि ने पकड़ी रफ्तार, अवैध बिक्री और कारोबार पर पूरी तरह नियंत्रण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- जनसुरक्षा के लिए प्रदेशभर में अवैध शराब और शराब माफिया के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

अमृत विचार: वर्ष 2025 आबकारी विभाग के लिए कई बदलाव के लिए जाना जाएगा। नई आबकारी नीति ने विभाग की पूरी कार्यप्रणाली को तकनीक आधारित और पारदर्शी बना दिया है। वहीं राजस्व प्राप्ति के मामले में इस साल आबकारी विभाग ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। निवेश और रोजगार सृजन में भी उल्लेखनीय कार्य हुआ है।

योगी सरकार की नई आबकारी नीति ने विभाग की छवि को सकारात्मक रूप से बदलने का काम किया है। इस साल शराब की दुकानों का आवंटन ई-लॉटरी प्रणाली के माध्यम से किया गया, जिससे लाइसेंस आवंटन की प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष और ऑनलाइन हो गई। शराब की दुकानों से जुड़े विभिन्न प्रकार के थोक और बॉण्ड अनुज्ञापनों का निर्गमन, मदिरा की बोतलों पर लगने वाले लेबलों का अनुमोदन, मदिरा की एमआरपी का निर्धारण और अल्कोहल निर्यात के परमिट, अब सभी प्रक्रियाएं ऑनलाइन हो गई हैं।

नई नीति के तहत उत्पादन से लेकर परिवहन और बिक्री तक हर स्तर पर सख्त निगरानी सुनिश्चित की गई है। शीरा के उत्पादन, उठान और वितरण की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन की गई है, जबकि आसवनियों और अन्य इकाइयों में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। मदिरा और स्पिरिट के टैंकरों में डिजिटल लॉक लगाए गए हैं और केवल जीपीएस युक्त वाहनों से ही परिवहन की अनुमति दी गई है। आसवनियों में डिजिटल अल्कोहलोमीटर, मास फ्लो मीटर, रडार आधारित लेवल सेंसर और बॉटलिंग काउंटर लगाए गए हैं।

इस साल अवैध शराब और अपराधियों के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए बड़ी और प्रभावी कार्रवाई की है। इस साल प्रदेशभर में अवैध शराब के निर्माण और तस्करी से जुड़े 79,990 अभियोग दर्ज किए गए हैं। इस दौरान 20.86 लाख लीटर अवैध मदिरा एवं मादक द्रव्य बरामद किए गए। अवैध कारोबार में संलिप्त 15,085 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें से 2,755 को जेल भेजा गया।

राजस्व प्राप्ति में रिकॉर्ड वृद्धि दर्ज

राज्य सरकार की नई आबकारी नीति का असर राजस्व आंकड़ों में साफ दिखाई दे रहा है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में नवंबर माह तक प्रदेश को कुल 35,144.11 करोड़ रुपये का आबकारी राजस्व प्राप्त हुआ है, जो पिछले वित्तीय वर्ष 2024-25 की समान अवधि में प्राप्त 30,402.34 करोड़ रुपये की तुलना में 15.59 प्रतिशत अधिक है। इस अवधि में सरकार को 4,741.77 करोड़ रुपये का अतिरिक्त राजस्व मिला है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि योगी सरकार की आबकारी नीति ने राजस्व संग्रह को नई मजबूती दी।

एथेनॉल उत्पादन में बना नया कीर्तिमान

प्रदेश में इस साल तक 182 करोड़ लीटर एथेनॉल का उत्पादन हुआ, जो अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। योगी आदित्यनाथ सरकार के संरचनात्मक सुधार, तकनीकी अनुकूलता और 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' से शराब, बीयर, वाइन व एल्कोहल आधारित उद्योगों में वृद्धि हुई है। प्रदेश में 105.25 करोड़ लीटर और प्रदेश से बाहर 40.96 करोड़ लीटर एथेनॉल बिक्री ने उत्तर प्रदेश को एथेनॉल सप्लाई का भरोसेमंद केंद्र बनाया है।

अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन इस बार लखनऊ में

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला 19 जनवरी को करेंगे उद्घाटन : महाना

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

पत्रकारों को जानकारी देते विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना।

- मुख्यमंत्री योगी सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहेंगे
- सम्मेलन के दौरान विभिन्न समसामयिक और संसदीय विषयों पर होगा विमर्श
- सम्मेलन का समापन राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी
- 22 जनवरी को देशभर से आए प्रतिनिधि अयोध्या दर्शन को जाएंगे

अमृत विचार: इस वर्ष राजधानी लखनऊ में होने जा रहे अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारी सम्मेलन की मेजबानी उप्र. विधानसभा करने जा रही है। सम्मेलन का उद्घाटन 19 जनवरी को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला करेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहेंगे। सम्मेलन के दौरान 20 एवं 21 जनवरी को विभिन्न समसामयिक और संसदीय विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। सम्मेलन का समापन राज्यपाल आनंदीबेन पटेल द्वारा किया जाएगा। 22 जनवरी को देशभर से आए प्रतिनिधि अयोध्या दर्शन को जाएंगे।

यह जानकारी विधानभवन में सोमवार को आयोजित एक पत्रकारवार्ता में विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने पत्रकारों को दी। उन्होंने बताया कि 19 जनवरी से पूर्व मीडियाकर्मियों के लिए संसदीय पत्रकारिता पर एक सत्र भी आयोजित होगा। विधानसभा अध्यक्ष के मुताबिक, शीतकालीन सत्र की कार्यवाही एक बार भी स्थगित नहीं हुई। शीतकालीन सत्र के दौरान उन्हें पहली बार विधानसभा में वंदेमातरम गीत पूरा गाने का अवसर मिला। सदन में बहुत से सदस्यों ने वंदेमातरम पर चर्चा की, जबकि बहुत से सदस्यों को शिकायत रह गई कि उन्हें इस पर बोलने का अवसर नहीं मिला। सदस्यों को पढ़कर आना चाहिए बिल उन्होंने कहा कि बतौर विधानसभा अध्यक्ष चार साल के कार्यकाल में तीन बार सभी विधायकों के साथ अलग-अलग ग्रुपों में विभिन्न विषयों पर संवाद का अवसर मिला।

सतीश महाना ने बताया कि वह विधायकों के साथ जल्द वह संवाद करेंगे। इस बार उन्हें विभिन्न विधेयकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। अगले सत्र में किसी भी सदस्य को अचानक किसी बिल पर बोलने के लिए आमंत्रित करेंगे। जो हाथ नहीं भी उठाएगा, उसे भी अचानक बिल पर बोलने के लिए आमंत्रित करेंगे।

स्थगन समय शून्य जबकि स्थगन रहित समय 24 घंटे 50 मिनट का रहा

अमृत विचार : विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने बताया कि विधानसभा के शीतकालीन सत्र में स्थगन समय शून्य रहा तथा स्थगन रहित समय 24 घंटे 50 मिनट रहा। इस तरह कुल समयावधि में 24 घंटा 50 मिनट तक सदन की कार्यवाही हुई। उन्होंने बताया कि इस दौरान कुल प्राप्त प्रश्न 2776 रहे, स्वीकृत प्रश्नों में अल्पसूचित तारांकित प्रश्न 1, तारांकित प्रश्न 451 तथा अतारांकित प्रश्नों की संख्या 1842 रही। वहीं उत्तरित प्रश्नों में अल्पसूचित तारांकित प्रश्नों की संख्या 0, तारांकित प्रश्न 51 तथा अतारांकित प्रश्नों की संख्या 530 रही। वहीं 18वीं विधानसभा के वर्ष 2025 के तृतीय सत्र में नियम- 311 के अंतर्गत कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई।

गोरखपुर में विधायक खेल स्पर्धा-2025 के विजेता खिलाड़ी को पुरस्कृत करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

हर मंडल मुख्यालय पर बनाएंगे स्पोर्ट्स कॉलेज : मुख्यमंत्री

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

- योगी ने विधायक खेल स्पर्धा के विजेताओं को किया पुरस्कृत

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने खेल और खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा है कि प्रत्येक ग्राम पंचायत में खेल मैदान, ब्लॉक स्तर पर मिनी स्टेडियम और जिले स्तर पर बड़ा स्टेडियम बनवाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के साथ सरकार हर मंडल मुख्यालय पर स्पोर्ट्स कॉलेज बनाया जाएगा।

सीएम योगी सोमवार को गोरखपुर शहर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विधायक खेल स्पर्धा-2025 के पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। वीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार स्पोर्ट्स इन्फ्रास्ट्रक्चर को लगातार सुदृढ़ कर रही है। गोरखपुर में बेलीपार के पास एक इंटरनेशनल स्टेडियम बनने जा रहा है।

मुकाबला देखा, बढ़ाया खिलाड़ियों का उत्साह : विधायक खेल स्पर्धा के समापन समारोह के दौरान योगी आदित्यनाथ ने कुश्ती (74 किग्रा भार वर्ग) और कबड्डी प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला देखा। खिलाड़ियों के दांव और मूवमेंट को गहनता से देखते हुए उन्होंने ताली बजाकर उत्साहवर्धन किया। पुरस्कार वितरण के दौरान मुख्यमंत्री ने सीनियर कुश्ती प्रतियोगिता के विजेता शुभम यादव, उप विजेता अनुराग यादव तथा सीनियर कबड्डी प्रतियोगिता की विजेता टीम रीजनल स्पोर्ट्स स्टेडियम व उप विजेता टीम नीना थापा के खिलाड़ियों को पदक, ट्रॉफी और उपहार देकर पुरस्कृत किया।

कामकाजी और रिटायर्ड लोगों के लिए भी होंगी प्रतियोगिताएं

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधायक खेल स्पर्धा को लेकर अपनी आगामी योजना भी साझा की। उन्होंने कहा कि अगली बार बच्चों और छात्रों के स्तर के साथ ही वार्ड स्तर पर कामकाजी और रिटायर्ड लोगों के लिए भी खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। वार्ड स्तर, उसके बाद कुछ वार्डों को मिलाकर उपनगरीय और फिर नगर स्तर पर बड़ी प्रतियोगिता, बड़े समारोह का आयोजन कर विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा।

बीते आठ माह में वृद्धावस्था पेंशन योजना से जुड़े 9.83 लाख नए पेंशनर

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों के लिए संचालित राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना वर्ष 2025 में सामाजिक सुरक्षा का मजबूत आधार बनकर उभरी है। समाज कल्याण विभाग की इस योजना के अंतर्गत बीते आठ माह में प्रदेश भर में 9.83 लाख नए पात्र वृद्धजनों को जोड़ा गया है, जिससे कुल पेंशन लाभार्थियों की संख्या बढ़कर 67.50 लाख तक पहुंच गई है। समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर योजना में डिजिटल मॉनिटरिंग, आधार आधारित सत्यापन और सतत निगरानी की व्यवस्था लागू की गई है। इससे पेंशन वितरण प्रणाली अधिक पारदर्शी और भरोसेमंद बनी है। वर्ष 2024 में जहां राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना से 61.00 लाख वृद्धजन लाभान्वित हो रहे थे, वहीं 2025 में यह संख्या बढ़कर 67.50 लाख हो गई है।

फर्जी आयुष्मान कार्ड बनाने वालों पर लगेगा गैंगस्टर

अमृत विचार, लखनऊ : फर्जी आयुष्मान कार्ड बनाने वाले गिरोह के सरगना और सदस्यों के खिलाफ गैंगस्टर की कार्रवाई करने की तैयारी शुरू हो गई है। एसटीएफ के इस कार्रवाई के जद में कार्ड बनाने वालों के साथ अप्रूवल देने व दिलाने वाले भी शामिल हैं। एसटीएफ गिरोह के सरगना प्रतापगढ़ निवासी चंद्रभान, एजेंसी के एक्जीक्यूटिव और कल्याण सिंह कैंसर संस्थान के आयुष्मान मित्र रंजीत समेत सभी आरोपियों की संपत्तियों का ब्योरा जुटा रही है। अपराध की कमाई से बनी संपत्तियों की कुर्की की कार्रवाई भी होगी।

अपात्रों के कार्डों का अप्रूवल करने वाली आईएसए के एक्जीक्यूटिव बाराबंकी के सौरभ मौर्या, सुजीत कौनजिया, पूर्व अधिकारी विश्वजीत और एसएचए के अधिकारी व कैंसर संस्थान के रंजीत सिंह व अन्य के पास से बरामद इलेक्ट्रानिक गैजेट्स से अहम जानकारियां मिली हैं। उसके आधार पर अब जेल गए एजेंसी के अफसरों और कैंसर संस्थान के कर्मी के करीबी एसटीएफ की रडार पर हैं। एसटीएफ उनके संबंध में साक्ष्य संकलन कर रही है।

नाबार्ड व कार्यदायी विभाग मिलकर करें डिजिटलीकरण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

हाई पावर कमेटी की बैठक में अधिकारियों को निर्देश देते मुख्य सचिव एसपी गोयल।

- मुख्य सचिव की अध्यक्षता में हाई पावर कमेटी की तीसरी बैठक

अमृत विचार: मुख्य सचिव एसपी गोयल ने नाबार्ड और कार्यदायी विभागों को मिलकर डिजिटलीकरण पर कार्य करने की उम्मीद जतायी है। ऐसे में परियोजनाओं की स्वीकृति, प्रतिपूर्ति दावे और परियोजना पूर्णता प्रमाणपत्र (पीसीआर) शीघ्रता से आरआईडीएफ वेब पोर्टल पर भेजे जा सकेंगे। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में नाबार्ड के ग्रामीण अवसंरचना विकास निधि (आरआईडीएफ) से वित्त पोषित परियोजनाओं से संबंधित वित्तीय वर्ष 2025-26 की हाई पावर कमेटी की तृतीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

मुख्य सचिव ने सभी विभागों एवं नाबार्ड को आपसी तालमेल बढ़ाकर विभिन्न कार्यबिंदुओं पर संयुक्त रूप से कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने नाबार्ड द्वारा बीते वर्षों में किए गए कार्यों की सराहना की तथा वर्तमान वर्ष में नाबार्ड आरआईडीएफ-योजना के अंतर्गत संवितरण के लिए विभागों को प्रतिपूर्ति दावे नाबार्ड को शीघ्र प्रेषित करने के निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने आरआईडीएफ ऋण पात्रता, न्यूनतम परियोजना आकार और नयी संवितरण प्रणाली में नाबार्ड द्वारा हाल ही में किए गए बदलावों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कहा कि नई संवितरण प्रणाली राज्य सरकार को आंतरिक संसाधनों के समुचित आवागमन में सहयोग प्रदान करेगी।

मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड ने पिछले पांच वर्षों के दौरान आरआईडीएफ के तहत वित्त-पोषित परियोजना स्वीकृतियों एवं ऋण संवितरण में हुई उत्तरोत्तर वृद्धि पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए वर्ष 2025-26 के लिए संवितरण लक्ष्य 3000 करोड़ रुपये प्राप्त करने के लिए सभी विभागों को निर्देशित किया। मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड ने बताया कि वर्तमान में प्राथमिकता संवितरण पर केंद्रित है, क्योंकि संवितरण लक्ष्य की संतोषजनक प्राप्ति पर उत्तर प्रदेश के लिए मुख्यालय से स्वीकृति के लिए अतिरिक्त आवंटन का अनुरोध किया जा सकता है।

निर्माण कार्यों में हो रहा भ्रष्टाचार: अखिलेश

अमृत विचार, लखनऊ : समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने आरोप लगाया है कि यूपी में निर्माण कार्यों, सड़कों के निर्माण, जल जीवन मिशन समेत अन्य कार्यों में भारी भ्रष्टाचार हो रहा है। सोमवार को जारी एक बयान में अखिलेश यादव ने कहा है कि कई जिलों में पानी की टंकियां भ्रष्टाचार का भार नहीं सह पाईं और धराशायी हो गईं। जल जीवन मिशन भाजपा सरकार के लूट का मिशन बन गया है। इस सरकार में तमाम तरह का अवैध कारोबार हो रहा है। इन कार्यों को सत्ता का संरक्षण मिला हुआ है।

अखिलेश यादव के अनुसार भूमाफिया, ड्रग माफिया, खनन माफिया, लकड़ी माफिया प्रदेश में लूट मचाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि कन्नौज के छिबरामऊ में चार दिन में ही 20 लाख रुपये में बनाई गई सड़क उखड़ गयी। भाजपा सरकार में सड़कें नहीं बनती केवल कमीशनखोरी की सड़क बिछती है।

बढ़ते कदम

दिल्ली, आगरा और एनसीआर से मजबूत कनेक्टिविटी ने बढ़ाया निवेशकों का भरोसा

औद्योगिक विकास की धुरी बना यमुना एक्सप्रेस-वे

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- जेवर एयरपोर्ट के साथ एक्सप्रेसवे क्षेत्र को मिली वैश्विक पहचान

मैन्युफैक्चरिंग के लिए आदर्श बना क्षेत्र

दिल्ली आगरा और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से मजबूत कनेक्टिविटी ने यमुना एक्सप्रेस-वे क्षेत्र को लॉजिस्टिक्स और मैन्युफैक्चरिंग के लिए आदर्श बना दिया है। इसके साथ ही जेवर में बन रहा नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट इस पूरे क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय पहचान देने जा रहा है। योगी सरकार ने एयरपोर्ट को केंद्र में रखकर औद्योगिक शहरों, लॉजिस्टिक्स हब और रोजगार केंद्रों की एक पूरी श्रृंखला विकसित करने की योजना बनाई है।

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश की विकास यात्रा में यमुना एक्सप्रेस-वे मात्र एक सड़क नहीं, बल्कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की दूरदर्शी नीति और निर्णायक नेतृत्व का प्रतीक है। जिस मार्ग को कभी केवल दिल्ली और आगरा को जोड़ने वाले कॉरिडोर के रूप में देखा जाता था, वही आज प्रदेश के औद्योगिक पुनर्जागरण की रीढ़ बन गया है। योगी सरकार ने यमुना एक्सप्रेस-वे को ट्रैफिक सुविधा तक सीमित न रखते हुए इसे निवेश, रोजगार और नियोजित शहरीकरण के सबसे बड़े इंजन के रूप में विकसित किया है।

प्रदेश ने पिछले कुछ वर्षों में इन्फ्रास्ट्रक्चर आधारित विकास का ऐसा मॉडल अपनाया है, जिसने प्रदेश की छवि बदली है। एक्सप्रेस-वे के दोनों ओर औद्योगिक क्लस्टर, आधुनिक अर्बन सेंटर्स और लॉजिस्टिक्स हब का विकास इस बात का प्रमाण है कि सरकार की नीति अब केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं, बल्कि जमीन पर परिणाम देने वाली साबित हो रही है। यमुना एक्सप्रेस-वे क्षेत्र आज उस नए उत्तर प्रदेश की पहचान बन रहा है, जहां निवेशकों को भरोसा, युवाओं को रोजगार और प्रदेश को आर्थिक मजबूती मिल रही है। प्रोग्रेसिव फेडरेशन ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री के चेयरमैन दीपक मैनी का कहना है कि यमुना एक्सप्रेस-वे के आस-आस विकसित हो रहीं परियोजनाएं प्रदेश की अर्थव्यवस्था को बुलंदी पर पहुंचाने का काम कर रही है।

कृषि भूमि को आवासीय करने के लिए बनेगी विशेष समिति

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- सरकार ने विकास प्राधिकरणों के स्वामित्व वाली कृषि भूमि के लिए बनाई योजना

अमृत विचार: राज्य सरकार ने प्रदेश में शहरीकरण को बढ़ावा देने और मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण नए शहर प्रोत्साहन योजना को गति देने के लिए बड़ा निर्णय लिया है। सरकार ने विकास प्राधिकरणों के स्वामित्व वाली कृषि भूमि का भू-उपयोग बदलकर उसे आवासीय करने की प्रक्रिया को सरल और व्यवस्थित बनाने के लिए एक विशेष समिति के गठन का आदेश जारी किया है।

आवास एवं शहरी नियोजन विभाग की ओर से जारी आदेश के अनुसार, भू-उपयोग परिवर्तन का अधिकार अब विकास प्राधिकरण बोर्ड को सौंप दिया है। इसका मुख्य उद्देश्य मुख्यमंत्री की महत्वाकांक्षी योजना के तहत नए शहरों को बसाने और मौजूदा शहरों के विस्तार में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।

वहीं, महायोजना में कृषि के रूप में दर्ज भूमि को आवासीय में परिवर्तित करने के प्रस्तावों का सूक्ष्म परीक्षण करने के लिए एक चार सदस्यीय समिति बनाई गई है। इस समिति के अध्यक्ष संबंधित विकास प्राधिकरण के सचिव होंगे। जिले के जिलाधिकारी द्वारा नामित प्रतिनिधि, मुख्य नगर एवं ग्राम नियोजक द्वारा नामित प्रतिनिधि इसके सदस्य होंगे। संबंधित विकास प्राधिकरण के मुख्य नगर नियोजक या वरिष्ठ नगर नियोजक इसके सदस्य संयोजक बनेंगे। यह समिति विकास प्राधिकरण बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले आवासीय परियोजनों के प्रस्तावों की जांच करेगी। इससे नए आवासीय क्षेत्रों का विकास गति पकड़ेगा और कृषि भूमि को आवासीय में बदलने की कानूनी प्रक्रियाओं में लगने वाले समय में कमी होगी।

अमृत विचार

मंगलवार, 30 दिसंबर 2025

विफलता तभी होती है, जब हम अपने आदर्शों, उद्देश्यों और सिद्धांतों को भूल जाते हैं।
–पं. जवाहर लाल नेहरू, पूर्व प्रधानमंत्री

उल्लेखनीय उपलब्धि

उत्तर प्रदेश का ईज ऑफ डूइंग बिज़नेस में 12 वें स्थान से दूसरे पायदान पर पहुंचना राज्य के प्रशासनिक और आर्थिक चरित्र में आए बुनियादी बदलाव का संकेत है। राज्य के लिए यह उपलब्धि अत्यंत सराहनीय है, क्योंकि लंबे समय तक जो उत्तर प्रदेश निवेश के लिहाज से 'कठिन' और 'अनिश्चित' गंतव्य माना जाता रहा, वह अब सुधारों और पारदर्शिता का चेहरा बनकर उभरा है। वाणिज्य और उद्योग संवर्धन विभाग के बिज़नेस रिफॉर्म्स एक्शन प्लान के तहत जारी रैंकिंग में उत्तर प्रदेश की यह प्रगति बताती है कि सुधार केवल कागजों पर नहीं, बल्कि जमीन पर उतरे हैं। यह बदलाव आकस्मिक नहीं, बल्कि योजनाबद्ध प्रशासनिक सुधारों और डिजिटल गवर्नेंस का परिणाम है, जो सूबे के आर्थिक भविष्य के लिए निर्णायक साबित होगा।

निवेशक जहां नीति स्थिरता, समयबद्ध मंजूरी और न्यूनतम हस्तक्षेप देखते हैं, वहीं जाते हैं और तब पूंजी प्रवाह स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। इस संदर्भ में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अपनाई गई 'मिनिमम गवर्नमेंट, मैक्सिमम गवर्नेंस' की नीति ने निवेश बाधाओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डिजिटल पारदर्शिता, प्रक्रियाओं का सरलीकरण और जवाबदेही ने राज्य को अधिक भरोसेमंद निवेश गंतव्य बनाया है। लॉजिस्टिक्स रैंकिंग में 'अचीवर्स' श्रेणी में जगह बनाना और गुड गवर्नेंस इंडेक्स में वाणिज्य एवं उद्योग वर्ग में ऊपर आना द्योतक है कि बुनियादी ढांचे और प्रशासनिक दक्षता पर एक साथ काम हुआ है। उद्यम स्थापना, श्रम नियमों के सरलीकरण और भूमि प्रशासन जैसे तीन प्रमुख क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश का टॉप अचीवर बनना यह दिखाता है कि औद्योगिक बाधाओं को व्यवस्थित रूप से हटाया गया है। निवेश सुविधा, श्रम पंजीकरण, पर्यावरण अनुमति, सिंगल विंडो सिस्टम और निर्माण अनुमति जैसी प्रक्रियाओं को सरल करने तथा अनुपालन बोझ और दंडात्मक प्रावधानों को कम करने से निवेशकों का समय और लागत दोनों बचे हैं। इन सुधारों ने खासकर मध्यम और छोटे उद्यमों को बढ़ावा दिया है, जो किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं। योगी सरकार द्वारा 'निवेश मित्र' के अगले संस्करण निवेश मित्र 3.0 की तैयारी से अपेक्षा है कि यह और अधिक यूज़र-फ्रेंडली, डेटा-ड्रिवन और समयबद्ध होगा। वहीं 'मुख्यमंत्री उद्यमी मित्र योजना' ने औद्योगिक गलियारों में निवेश को आकर्षित करने में सहायक भूमिका निभाई है, जिससे विदेशी और घरेलू पूंजी प्रवाह बढ़ने के संकेत मिले।

निर्माण, विनिर्माण और औद्योगिकीकरण के मोर्चे पर उत्तर प्रदेश अब केवल उपभोक्ता बाजार नहीं, बल्कि उत्पादन केंद्र के रूप में उभर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और स्टैंडअप इंडिया जैसी योजनाओं के अपेक्षाकृत बेहतर क्रियान्वयन से रोजगार के अवसर बढ़े हैं और बेरोजगारी दर 19 से घट कर ढाई फीसदी पर आ गई है। इसके साथ प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि विकास की व्यापकता को दर्शाती है, हालांकि एक लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य के लिए अभी और काम करना होगा, विशेषकर उच्च मूल्य वाले विनिर्माण, निर्यात संवर्धन, शहरी अवसंरचना और हरित औद्योगिकीकरण पर।

प्रसंगवश

इस साल गुजर गए सिनेमा के कई अनमोल रत्न

वक्त की रेत पर बने पैरों के निशान धीरे-धीरे मिटते जा रहे हैं। वो आवाजें जो कभी हमारे घरों में गूंजती थीं, अब सन्नाटे में तब्दील हो गई हैं। वो चेहरे जिन्हें देखकर हमारे दिलों में उमंग भर जाती थी, अब केवल यादों के पर्दे पर बाकी हैं। 2025 भारतीय सिनेमा और मनोरंजन जगत के लिए एक ऐसा साल बनकर रह गया, जिसने हमसे हमारे कई प्रिय कलाकारों को छीन लिया। यह महज मौत का सिलसिला नहीं था, बल्कि एक पूरे युग का विसर्जन था।

नवंबर की वह सुबह शायद कभी नहीं भूलेगी जब खबर आई कि धर्मेंद्र नहीं रहे। 89 वर्ष की उम्र में, सांस की तकलीफ से जूझते बॉलीवुड के 'हीमैन' ने अपनी आखिरी सांस ली। उनके जाने के साथ ही मानो हिंदी सिनेमा का एक स्वर्णिम अध्याय समाप्त हो गया। धर्मेंद्र ने छह दशकों तक भारतीय सिनेमा को अपनी प्रतिभा से सजाया। अप्रैल का महीना भी कम दुखद नहीं रहा। दिल की बीमारी से जूझते हुए 87 वर्ष की उम्र में मनोज कुमार ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। 'उपकार' में 'मेरे देश की धरती सोना उगले' गाते हुए मनोज कुमार की छवि हर भारतीय के दिल में बसी है। यह गीत महज एक गाना नहीं था, बल्कि हर उस किसान की व्यथा और गौरव की कहानी था जो इस देश की धरती को सींचता है।

जयदेव राठी
अधिवक्ता

20 अक्टूबर को 84 वर्ष की उम्र में असरानी का निधन हो गया। हास्य अभिनय में माहिर असरानी ने अपनी अनोखी शैली से दर्शकों के चेहरों पर हमेशा मुस्कान बिखेरी। उनकी कॉमिक टाइमिंग इतनी परफेक्ट थी कि बिना किसी फूहड़ता के वे लोगों को हंसा देते थे। उसी महीने 15 अक्टूबर को पंकज धीर का निधन हो गया। बीआर चोपड़ा की महाकाव्य 'महाभारत' में कर्ण की भूमिका निभाकर पंकज धीर ने खुद को अमर बना दिया। 25 अक्टूबर को 74 वर्ष की उम्र में सतीश शाह का निधन हो गया। थिएटर से लेकर टेलीविजन और सिनेमा तक, सतीश शाह ने हर मंच पर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का लोहा मनवाया। 'सरभाई वर्सेज सरभाई' में इंद्रवर्धन सरभाई के रूप में उनका किरदार इतना लोकप्रिय हुआ कि वे घर-घर में पहचाने जाने लगे।

संगीत जगत को भी 2025 में बड़ा झटका लगा। 19 सितंबर को सिंगापुर में 52 वर्ष की कम उम्र में गायक जुबीन गर्ग का अचानक निधन हो गया। उनकी आवाज में एक जादू था, जो सुनने वाले को अपनी गिरफ्त में ले लेता था। 'या अली' गाने से उन्होंने लाखों दिलों में जगह बनाई थी। हिंदी, बंगाली और असमिया- तीन भाषाओं में उनका समान प्रभाव उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण था। जुबीन केवल एक गायक ही नहीं, बल्कि एक अभिनेता और फिल्म निर्माता भी थे।

जून महीने की 27 तारीख को 42 वर्ष की उम्र में शेफाली जरीवाला की मौत ने सबको हिलाकर रख दिया। 'कांटा लगा' गर्ल के नाम से मशहूर शेफाली ने एक ही गाने से इतनी लोकप्रियता हासिल की थी कि लोग उन्हें भूल नहीं सके। मई महीने में 23 तारीख को 54 वर्ष की उम्र में अभिनेता मुकुल देव का निधन हो गया। राहुल देव के भाई मुकुल ने 'सन ऑफ सरदार' जैसी फिल्मों में काम किया। जब हम इन सभी कलाकारों को याद करते हैं, तो महसूस होता है कि हमने केवल कुछ अभिनेताओं या गायकों को नहीं खोया है। हमने अपनी यादों के कुछ खूबसूरत पन्ने खो दिए हैं। वे हमारी स्मृतियों में, हमारी संस्कृति में, हमारे सिनेमा के इतिहास में हमेशा जीवित रहेंगे। उनकी कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती रहेगी और उनके नाम सदा के लिए स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। 2025 ने हमें सिखाया कि जीवन कितना नश्वर है, लेकिन कला अमर है।

27 का बिगुल 25 में ही फूंक गए पीएम मोदी

अजय दयाल
लखनऊ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस बार उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ की यात्रा अहम राजनीतिक संदेश देने वाली रही। अवसर तो संघ की विचारधारा से जुड़ी तीन ऐतिहासिक विभूतियों की प्रतिमाओं के साथ राष्ट्र प्रेरणा स्थल के लोकार्पण का रहा, लेकिन यहां उपस्थित जनसमूह कुंभ जैसा नजारा दिखा गया। बीते दिनों एक अर्से बाद बसपा नेत्री मायावती ने बहुजन समाज की एक बड़ी भीड़ जुटाकर यूपी से अपने राजनीतिक अस्तित्व को परखा था। सभी दलों खासकर भाजपा को भी मायावती ने आंबेडकर स्थल से संदेश दिया था कि अपने वोटबैंक में उनकी लोकप्रियता कहीं से कम नहीं पड़ी। पीएम मोदी ने अटल जी को यादकर प्रेरणा स्थल से इसका काउंटर कर दिया। सही मायनों में मोदी 27 (साल 2027 यूपी में विधानसभा चुनाव) का बिगुल 25 में ही फूंककर चले गए। अब इसकी गूंज पार्टीजनों में चुनाव तक दम भरती रहेगी।

दरअसल, पीएम मोदी की तीन महान विभूतियों श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीन दयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी की स्मृतियों के बीच मंशा एक लंबी लकीर खींचने की ही रही। अगर उनके संबोधन पर गौर करें, तो उन्होंने कांग्रेस शासन को यादकर भाजपा के अपमान की बात कही। कांग्रेस के साथ समाजवादी पार्टी को भी निशाने पर लिया। आंबेडकर को याद किया और मेरा यूपी, मेरा यूपी कई दफा कहा। उन्होंने कहा कि मुझे यूपी का जनप्रतिनिधि होने का गर्व है। निःसंदेह उनके मुख से निकले ये सभी शब्द यूपी के भावी चुनाव को लेकर गूढ़ राजनीतिक संदेश देने वाले रहे। चूंकि 25 दिसंबर को ही महाराजा बिजली पासी की भी जन्म-जयंती रही, सो मोदी उन्हें भी याद कर पासी समाज की भूमिका की प्रशंसा करना न भूले।

इसी कड़ी में उन्होंने यूपी में गठबंधन कर लड़ चुके दोनों दलों को कटघरे में भी खड़ा किया। बोले, कोई नहीं भूल सकता कि कैसे बाबा साहेब आंबेडकर की विरासत को मिटाने का प्रयास हुआ। दिल्ली में कांग्रेस के शाही परिवार ने ये पाप किया और यहां यूपी में सपा वालों ने भी यही दुस्साहस किया, लेकिन भाजपा ने बाबा साहेब की विरासत को मिटने नहीं दिया। आज दिल्ली से लेकर लंदन तक, बाबा साहेब आंबेडकर के पंचतीर्थ उनकी विरासत का जयघोष कर रहे हैं।

पीएम मोदी ने यूपी की जनता को संदेश देते हुए परिवारवाद की राजनीति पर भी हमला किया और कांग्रेस पर प्रहार किया। कहा कि परिवारवाद की एक विशिष्ट पहचान होती है, ये असुरक्षा से भरी हुई होती है, इसलिए परिवारवादियों के लिए, दूसरों की लकीर छोटी करना मजबूरी हो जाता है, ताकि उनके परिवार का कद बड़ा दिखे और उनकी दुकान चलती रहे। इसी सोच ने भारत में राजनीतिक छुआछूत का चलन शुरू किया। आप सोचिए, आज़ाद भारत में अनेक प्रधानमंत्री हुए, लेकिन राजधानी दिल्ली में जो म्यूजियम था, उसमें अनेक पूर्व प्रधानमंत्रियों को नजरअंदाज किया गया।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने राजनीतिक रूप से भाजपा को हमेशा अछूत बनाए रखा, लेकिन भाजपा के संस्कार हमें सबका सम्मान करना सिखाते हैं। बीते 11 वर्षों में भाजपा सरकार के दौरान, एनडीए सरकार के दौरान, नरसिम्हा राव जी और प्रणब बाबू को भारत रत्न दिया गया है। ये हमारी सरकार है, जिसने मुलायम सिंह यादव जी और तरुण गोगोई जी जैसे अनेक नेताओं को राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया है। कांग्रेस से, यहां समाजवादी पार्टी से कोई भी ऐसी उम्मीद तक नहीं कर सकता। इन लोगों के राज में तो भाजपा के नेताओं को सिर्फ अपमान ही मिलता था।

मोदी के उदाहरण के साथ खासकर कांग्रेस और सपा के कथित अन्याय पर कही गईं बातें, भाजपा के प्रति जनता में सहानुभूति प्राप्त करने सरीखी रहीं, हालांकि इस क्रम में उन्होंने बहुजन समाज पार्टी पर निशाना नहीं बनाया। इतना ही नहीं, पीएम मोदी इस यात्रा में समय रहते प्रदेशवासियों की नये सिरे से नब्ज टटोलकर गए। उन्होंने सीधे तौर खुद को यूपी का बताकर स्वयं ही लंबी लकीर खींच अन्य लकीर को छोटा कर दिया।

उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा की डबल इंजन सरकार का बहुत अधिक फायदा उत्तर प्रदेश को हो रहा है। उत्तर प्रदेश, 21वीं सदी के भारत में अपनी एक अलग पहचान बना रहा है और मेरा सौभाग्य है कि मैं यूपी से सांसद हूं। आज मैं बहुत गर्व से कह सकता हूं कि उत्तर प्रदेश के मेहनतकश लोग एक नया भविष्य लिख रहे हैं। कभी यूपी की चर्चा खराब कानून व्यवस्था को लेकर होती थी, आज यूपी की चर्चा विकास के लिए होती है। आज यूपी देश के पर्यटन मानचित्र पर तेजी से उभर रहा है। समझने वाले समझ जाएंगे कि इसका श्रेय उन्होंने किसे दिया? या स्वयं लिया?

सही मायनों में आंकलन करें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनसंघ की तीन महान विभूतियों की याद में राष्ट्र प्रेरणा स्थल जनता को समर्पित कर खुद को भी उस श्रेणी में खड़ा कर दिया। अब इस बात पर कल्याण सिंह और लाल कृष्ण आडवाणी के नाम का तर्क देने वाले समीक्षा करते रहें। जब मोदी ने यह कहा कि ये राष्ट्र प्रेरणा स्थल उस सोच का प्रतीक है, जिसने भारत को आत्मसम्मान, एकता और सेवा का मार्ग दिखाया है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी की विशाल प्रतिमाएं जितनी ऊंची हैं, इनसे मिलनी वाली प्रेरणाएं उससे भी बुलंद हैं। इस पंक्ति के साथ नरेंद्र मोदी ने भी अपनी ऊंचाई और बुलंदी का एहसास जनता को करा दिया। अपनी विचारधारा से जुड़ी तीन महान विभूतियों को याद कर मोदी का यह बिग शो, वाकई पार्टीजनों को गौरवान्वित करने वाला रहा। अंततः यही कहना न्यायसंगत होगा कि पीएम मोदी यहां विपक्षी दलों की खींची जिस लकीर को छोटा करने की मंशा लेकर आए थे, उसमें वह सफल रहे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लखनऊ आए थे। उन्होंने यहां जो कुछ कहा, निःसंदेह वो शब्द यूपी के भावी चुनाव को लेकर गूढ़ राजनीतिक संदेश देने वाले रहे। वो 27 का बिगुल 25 में ही फूंककर चले गए।

आमने

आरएसएस ऐसा संगठन है, जो नफरत फैलाता है। यह नफरत पैदा करता है और नफरत का प्रचार करता है। वह संगठन अल-कायदा जैसा है। अल-कायदा भी एक संगठित ग्रुप है, जो नफरत और आतंक फैलाता है। आरएसएस से सीखने जैसा कुछ नहीं है।

–मणिकम टैगोर
कांग्रेस सांसद

सामने

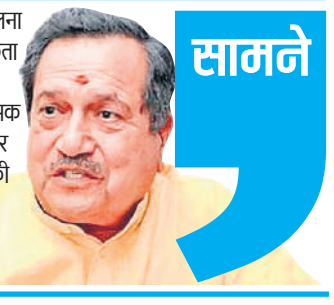

एक प्रमुख सांसद ने आरएसएस की तुलना अल-कायदा से करके अपनी मानसिकता का खुलासा किया है। यह कांग्रेस नेतृत्व और उसके सदस्यों के बौद्धिक व मानसिक दिवालियापन को दर्शाता है। जब लगातार हार का सामना करना पड़ता है, तो उनकी हताशा स्पष्ट हो जाती है।

–इंद्रेश कुमार
मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के मार्गदर्शक

अलविदा 2025: वक्त रुकता नहीं किसी के लिए

अनिल त्रिगुणायत
लखनऊ

महज कुछ ही दिन बाद आंग्ल वर्ष- 2025 हमारी स्मृतियों का हिस्सा भर रह जाएगा। खट्टे-मीठे अनुभव व अपनी धरोहरें नव वर्ष-2026 को सौंपकर काल की गर्त में समा जाएगा। समय का पहिया कभी रुकता ही नहीं। इस वर्ष के दिन, सप्ताह व माह एक-एक कर हमसे बिछड़ते रहे। मौसम चक्र भी और हम 'कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे' के माफिक समय को अहर्निश ताकते रहे। वर्ष 2025 के करीब 365 दिनों की यादों पर बहस-मुबाहिसा समीचीन है, क्योंकि इस वर्ष वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर पर कहीं मानवता कराही है तो कहीं खिलखिलाई भी है। कहीं खूब विकास हुआ तो कहीं विनाश भी। किसी के लिए यह वर्ष उपलब्धियों से भरा रहा, तो किसी के लिए अभिशप्त भी। कह सकते हैं कि वर्ष 2025 में एक ओर जहां वैश्विक चुनौतियां बढ़ीं, तो कई क्षेत्रों में विकास व नवाचार भी देखने को मिले।

चर्चित व बड़ी वैश्विक घटनाओं की बात की जाए, तो इस वर्ष के जनवरी माह में डोनाल्ड ट्रंप ने संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) के राष्ट्रपति के रूप में एक बार फिर शपथ ली। राष्ट्रपति बनने के बाद तुनकमिजाज ट्रंप ने अमेरिका की घरेलू और विदेश नीतियों में ऐसा परिवर्तन किया, जिससे दुनिया सकते में आ गई। इस वर्ष भी रूस और यूक्रेन के मध्य युद्ध विराम के सारे वैश्विक प्रयास असफल रहे। वर्ष के पूर्वार्ध में इजराइल व ईरान के बीच 12 दिनों तक चले युद्ध ने विश्व युद्ध की राह पर ला खड़ा किया। बाद में अमेरिका ने भी ईरान के तीन परमाणु स्थलों यानी फोर्डो, नतांज व इस्फ़हान पर हमले किए और नष्ट कर देने का दावा किया।

'जेन जी' यानी युवा पीढ़ी ने भ्रष्टाचार, बेरोजगारी व असमानता के विरुद्ध एकजुटता दिखाई। नेपाल, इंडोनेशिया, फिलीपींस और मालदीव में युवा आंदोलन हुए। बांग्लादेश में भी जनक्रांति हुई। नेपाल के युवाओं ने उग्र आंदोलन कर प्रधानमंत्री केपी ओली की सरकार ही गिरा दी।

पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच भी छिटपुट युद्ध होते रहे। म्यांमार की राजनीतिक अस्थिरता, दक्षिण चीन सागर में बढ़ता विवाद भी इस वर्ष की सुर्खियों में रहा। शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंचों पर आतंकवाद, उग्रवाद व अलगाववाद जैसे मुद्दों पर सदस्य देशों के बीच असहमति दिखी। चीन-ताइवान के बीच भी इस वर्ष तनातनी बनी रही। अफ्रीकी देश कांगो व रवांडा तथा इथियोपिया व इरिट्रिया के बीच जानी दुश्मनी चरम पर रही, जबकि सूडान गृह युद्ध की आग में इस वर्ष भी झुलसता रहा। नाइजीरिया, कैमरून व तंजानिया के युवाओं ने बरोजगारी से तंग आकर एंड सार्स नाम से उग्र आंदोलन चलाया।

2025 में दुनिया, अनसुलझे संघर्षों, अस्पष्ट आर्थिक नीतियों व बदलते भू-राजनीतिक गठबंधनों के बीच एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी दिखी। 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाक समर्थित आतंकवादियों द्वारा हमला कर 26 भारतीय पर्यटकों की जान लेने के बाद समूचा भारत उबल पड़ा था। दबाव इतना कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय वायु सेना ने सात मई को पाकिस्तान में घुसकर उसके नौ आतंकवादी ठिकानों को हवाई हमले से नेस्तनाबूद कर दिया। एक समय तो ऐसा लगा था कि दोनों शत्रु देशों के बीच होने वाली रार निर्णायक अंजाम तक पहुंच जाएगी।

भारत-पाकिस्तान के रिश्ते इस वर्ष भी बद से बद्तर हालात में ही रहे। इस वर्ष अमेरिका-भारत संबंध भी तीखा ही दिखा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश भारत में 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया जाना चर्चा में रहा। मित्रता की आड़ में दूसरे देशों से हमेशा ही छल करने वाला अमेरिका भारत पर कृषि व डेयरी बाजारों को सस्ते अमेरिकी आयात के लिए खोलने का दबाव बना रहा था, जिसे भारत सरकार ने कठोरता से ठुकरा दिया। यही नहीं, रूस से कच्चे तेल न खरीदने के अमेरिकी गीदड़ धमकी की हवा निकालकर यह जता दिया कि नया भारत किसी 'चौधरी देश' के इशारे पर नहीं चलने वाला। 140 करोड़ की आबादी वाला भारत अपनी राह बनाते हुए विश्व में अपना पताका स्वयं लहराएगा।

चीन और ब्राजील पर भारी टैरिफ लगाकर अमेरिका भारत को भी अपनी शर्तों पर झुकाना चाहता था। अन्य देशों की भांति वर्ष 2025 भारत के लिए भी मिला-जुला ही रहा। कहीं प्राकृतिक आपदाओं ने कहर बरपाया तो कहीं त्रासदियों ने। उत्तराखंड और हिमाचल में तो कुदरत ने काफी कहर बरपाया। वर्ष 2025 के आरंभ में अर्थात जनवरी के अंतिम सप्ताह में प्रयागराज के महाकुंभ में मौनी अमावस्या स्नान के दौरान भगदड़ में 30 श्रद्धालुओं की जान चली गई थी। इसके अलावा इस वर्ष 12 जून को अहमदाबाद में हुई विमान दुर्घटना में 241 यात्रियों की मौत से पूरा देश सिहर उठा था।

भारत ने इस वर्ष आर्थिक मोर्चों पर भी अपना परचम लहराया है। कृषि व उद्योग के क्षेत्र में भी आशातीत सफलता मिली। क्रिकेट में टीम इंडिया (पुरुष) ने चैंपियंस ट्रॉफी व एशिया कप पर कब्जा जमाया। वहीं आईसीसी महिला विश्वकप जीतकर गौरवान्वित किया।

इस वर्ष के दिन, सप्ताह व माह एक-एक कर हमसे बिछड़ते रहे। मौसम चक्र भी और हम 'कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे' के माफिक समय को अहर्निश ताकते रहे।

सोशल फोरम

दुनिया में कहां से आया 'खान' टाइटल

जिया इम्तियाज
ब्लॉगर

खान शब्द का मूल तुर्की भाषा का शब्द 'खाकान' है जिसका अर्थ शासक या नेता होता है, यही शब्द बदलकर खान हुआ और उज़्बेकी और मंगोलियाई शब्दकोश में राजा के संबोधन की शक्ल में शामिल हो गया। मंगोल चंगेज़ खान समेत कई शासक खान कहलाते थे, जिसका अर्थ होता था चंगेज़ राजा, कुबलाई राजा वगैरह।

मुगल वंश के संस्थापक बाबर का जन्म उज्बेकिस्तान की फ़रगना घाटी में हुआ था और वह तुर्किक बरलास जनजाति से था, जो मंगोल मूल की थी। वह तुर्किक और मध्य एशिया के स्थानीय तुर्क-मंगोल और अन्य जातीय समूहों से संबंध रखता था, यानी जिन क्षेत्रों में खाकान और ख़ान शब्दों का अर्थ शासक होता था, बाबर का मूल वही क्षेत्र था, इसीलिए मुगलों ने जब बाद में किसी को शासक की उपाधि दी, तो अक्सर उन्हें ख़ान और 'ख़ान ए ख़ाना' (सरदारों के सरदार) की उपाधियां दीं। ख़ान शब्द शासक के अर्थ में फ़ारसी में भी आ गया और फ़ारसी भाषा को मुगलों ने अपनी राजकीय भाषा बनाया था।

बाबर से पहले से ही अफगानिस्तान में भी तब खाकान को बहुत संक्षिप्त, लेकिन अर्थों में खाकान या खान से मिलता जुलता शब्द 'खां' प्रचलित था, जो एक सम्मानसूचक शब्द था। अफगानिस्तान में आज भी सम्मानपूर्वक हर व्यक्ति को खां कहा जाता है। ये 'साहब' और 'Sir' का समानार्थी शब्द है और टाइटल खां (जिसमे अंत में 'न' अक्षर नहीं आता) कुछ अफगानी लोग अपने नाम के साथ लगाया करते थे, जैसे शेरशाह सूरी के पिता हसन खां सूर आदि। पठानों का उपनाम 'ख़ां' होता है। अफगानी पश्तून भी और भारत के कन्वर्टेड राजपूत भी हमेशा खां या खान उपनाम का प्रयोग नहीं करते।

पश्तून अपने कबीलों जैसे आफ़रीदी, यूसुफ़ज़ई, दुर्रानी, अचकज़ई, मोहम्मदज़ई, खट्टक, बंगश, शिनवारी और अहमदज़ई वगैरह के नाम अपने टाइटल के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। राजपूत जो कभी धर्म बदलकर मुस्लिम हो गए, अपने नाम के साथ अपना गोत्र, जैसे गहलोत, सोलंकी, सिकरवार, चौहान, राजकुमार, कुंवर, भाटी, सिसोदिया, कछवाहा, क़ायमखानी वगैरह अपने टाइटल के तौर पर इस्तेमाल करते रहे हैं।

–फेसबुक वाल से

सामयिकी

परिवार नियोजन का बोझ महिलाएं ही क्यों उठाएं

यूं तो परिवार नियोजन किसी भी समाज और परिवार के स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। भारत सहित दुनिया के कई देशों में जनसंख्या नियंत्रण के लिए नसबंदी को सबसे प्रभावी स्थायी समाधान माना जाता है, लेकिन जब हम देश और प्रदेश में नसबंदी के आंकड़ों और सामाजिक स्वीकार्यता को देखते हैं, तो इसमें एक गहरा लैंगिक भेदभाव उभर कर सामने आता है। यह विडंबना है कि जैविक रूप से पुरुष नसबंदी अधिक सरल, सुरक्षित और कम खर्चीली है, फिर भी नसबंदी का लगभग पूरा बोझ महिलाओं के कंधों पर डाल दिया गया है। ऐसा करके इस समाज ने परिवार नियोजन की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर ही डाल दी है।

आधुनिक जमाने में भी ऐसा हो रहा है। आखिर क्यों? बड़ा सवाल है कि क्या समाज व परिवार कल्याण की जिम्मेदारी केवल महिलाओं की ही है। देश में परिवार नियोजन के लिए नसबंदी के आंकड़े एक महत्वपूर्ण लैंगिक असंतुलन दिखाते हैं। महिलाओं द्वारा नसबंदी करवाने की दर पुरुषों की नसबंदी की तुलना में काफी अधिक है। यह अंतर विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का परिणाम है, जो परिवार नियोजन को लेकर पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं। अगर हम इसके कारणों में जाते हैं, तो देखते हैं कि कई समाजों में परिवार नियोजन की जिम्मेदारी मुख्य रूप से महिलाओं की मानी जाती है। पुरुषों पर परिवार नियोजन के तरीकों को अपनाने का सामाजिक दबाव कम होता है। साथ ही इसके प्रति जागरूकता और शिक्षा की कमी है।

डॉ. मोनिका शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

कुछ मान्यताओं में पुरुष नसबंदी को मर्दानगी या यौन क्षमता से जोड़कर देखा जाता है, जो पुरुषों को इसे अपनाने से रोकता है, जबकि यह गलत है। नसबंदी से पुरुषों की यौन क्षमता पर कोई असर नहीं पड़ता है। परिवार नियोजन कार्यक्रमों में अक्सर महिलाओं को प्राथमिक लक्ष्य समूह के रूप में देखा जाता है, जिससे पुरुष नसबंदी को बढ़ावा देने पर कम जोर दिया जाता है। यह लैंगिक असमानता महिलाओं पर परिवार नियोजन का अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक बोझ डालती है। महिला नसबंदी एक सर्जिकल प्रक्रिया है, जिसके लिए अधिक समय और रिकवरी की आवश्यकता होती है, जबकि पुरुष नसबंदी एक छोटी और कम जोखिम वाली प्रक्रिया है।

इस असमानता को दूर करने के लिए परिवार नियोजन को एक साझा जिम्मेदारी के रूप में बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। पुरुषों को परिवार नियोजन में सक्रिय रूप से शामिल होने और अपनी भूमिका को समझने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। पुरुषों को भी इसके प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को पुरुषों से संवाद करने और उनके मिथकों और चिंताओं को दूर करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। पुरुष नसबंदी सेवाओं को सुलभ और आकर्षक बनाना चाहिए। परिवार नियोजन नीतियों में समान जिम्मेदारी के सिद्धांत को बढ़ावा देना चाहिए।

परिवार नियोजन एक युगल की साझा जिम्मेदारी है और दोनों की सक्रिय भागीदारी से ही एक स्वस्थ और न्यायसंगत समाज का निर्माण संभव है। यह काम सरकारों का है, लेकिन सरकारें भी इसके प्रति गंभीर नहीं होती हैं। वे भी महिलाओं की नसबंदी को लेकर ही अधिक योजनाएं बनाती हैं। पुरुष नसबंदी को लेकर जो भी योजनाएं बनाई जाती हैं, वह धरातल पर नहीं उतरतीं। आंकड़े बताते हैं कि देश में लगभग 38 फीसदी महिलाएं नसबंदी को अपनाती हैं, जबकि पुरुषों की भागीदारी मात्र 0.3 प्रतिशत है। इसका मतलब है कि हर 100 नसबंदी कराने वाले व्यक्तियों में 99 से अधिक महिलाएं होती हैं।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

माघ मेला
साधना का 'मिनी कुंभ'

गंगा, यमुना और सरस्वती नदी के पवित्र संगम तट प्रयागराज में माघ मास में स्नान, दान और दर्शन का विशेष महत्व है। इस दौरान यहां आयोजित होने वाला माघ मेला हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन और धार्मिक आयोजनों में से एक है। इसे 'मिनी कुंभ' भी कहा जाता है। मान्यता है कि माघ माह में पवित्र संगम में स्नान करने से मनुष्य के सभी पापों का नाश होता है और जन्म तथा मृत्यु के बंधन से छुटकारा मिलकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यही वजह है कि इस मेले में देश ही नहीं विदेशों से भी लोग आकर पुण्य का आशीर्वाद लेते हैं। माघ मेले में कुल छह तिथियां ऐसी होती हैं, जिनमें स्नान करना अत्यंत शुभ माना जाता है।

करौली शंकर महादेव
तृतीय मठाधिपति
मिश्रीमठ, हरिद्वार

हिंदू धर्म के अनुसार माघ माह में संगम नगरी में स्नान करने से मन और कर्म की शुद्धता होती है। इसे देखते हुए संगम में माघ स्नान की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। संत, महात्माओं के टेंट लग गए हैं। आम आदमी जिन्हें कल्पवास करना है वे भी तैयारियों में जुटे हैं। श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं (मकर संक्रांति) तब सभी देवता, दान, तीर्थ और मनुष्य तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी संगम में स्नान करते हैं। मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि माघ मास में संगम स्नान से दस हजार तीर्थों की यात्रा के बराबर पुण्य मिलता है।

श्रीहरि विष्णु को समर्पित महीना

पद्म पुराण में उल्लेख है कि माघ में पवित्र नदियों में स्नान करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं और पापों से मुक्ति मिलती है। इस माह में सूर्य उपासना का विशेष महत्व है, क्योंकि सूर्य मकर राशि में जब प्रवेश करते हैं, तो उस दिन मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है। माघ मास का सबसे बड़ा महत्व प्रयागराज के संगम में स्नान से जुड़ा है। क्योंकि यहीं गंगा, यमुना और अदृश्य हो चुकी सरस्वती नदी का संगम होता है। मान्यता है कि सृष्टि के रचयिता ब्रह्माजी ने यहां प्रथम यज्ञ किया था।

व्यक्तिगत शुद्धि का माध्यम भी

माघ मास और संगम स्नान हमें सादगी, तप और आध्यात्म की याद दिलाता है। यह न केवल व्यक्तिगत शुद्धि का माध्यम है, बल्कि सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है, जहां सभी वर्ग के लोग एक साथ स्नान करते हैं। यदि संगम नहीं जा सकते हैं, तो गंगा जल घर में लाकर स्नान करना चाहिए। इस मास में हमें जीवन में संयम और भक्ति का संदेश भी मिलता है, जो मोक्ष तक ले जाता है।

कब कौन सा होगा स्नान

साल 2026 में माघ मेले की शुरुआत 3 जनवरी को पौष पूर्णिमा के दिन होकर समापन 15 फरवरी को महाशिवरात्रि के साथ होगा।

- पौष पूर्णिमा स्नान- 3 जनवरी।
- मकर संक्रांति स्नान- 14 जनवरी।
- मौनी अमावस्या स्नान - 18 जनवरी।
- वसंत पंचमी स्नान - 23 जनवरी।
- माघी पूर्णिमा स्नान - 1 फरवरी।
- महाशिवरात्रि स्नान -15 फरवरी।

सहस्र वर्षों की तपस्या का फल

माघ मास में संगम स्थान से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है। संगम में प्रत्येक माघ मास में मेला लगता है। इस दौरान पौष मास की पूर्णिमा से महाशिवरात्रि तक लाखों श्रद्धालु संगम तट पर कल्पवास करते हैं। कल्पवासियों के लिए सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करने का विधान है। इस दौरान श्रद्धालु प्रभु के नाम का जप, हवन आदि करते हैं। मान्यता है कि कल्पवास से सहस्र वर्षों की तपस्या का फल मिलता है। माघ मेले के दौरान पौष पूर्णिमा, मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, वसंत पंचमी, माघ पूर्णिमा और महाशिवरात्रि के दिन स्नान का विशेष महत्व है। इनमें मौनी अमावस्या का विशेष महत्व है। इस दिन मौन रहकर स्नान करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। माघ पूर्णिमा पर स्नान से अक्षय पुण्य मिलता है और देवता संगम में अवतरित होते हैं। तिल का दान और उपयोग इस मास में विशेष है, क्योंकि तिल गर्म प्रकृति का होता है।

कल्पवास 21 नियम संयम पर आधारित

पद्म पुराण में कल्पवास के मुख्य 21 नियम बताए गए हैं, जो कठोर संयम पर आधारित हैं। इनका पालन करने से चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है। नियमों में सत्य बोलना, अहिंसा का पालन, इंद्रिय संयम (ब्रह्मचर्य), क्रोध न करना, दूसरों की निंदा न करना, झूठ न बोलना, चोरी व लोभ न करना, मोह का त्याग, गंदगी न करना, भूमि पर शयन, एक समय सात्विक भोजन, मौन व्रत, दान, जप-तप और ध्यान, सूर्य को अर्घ्य, देवपूजन, सत्संग और भजन-कीर्तन, विचारों को रखना, हिंसा रहित जीवन और ब्रह्म मुहूर्त में उठना शामिल है।

पौराणिक कथा

नारियल की उत्पत्ति

हिन्दू धर्म में नारियल का विशेष धार्मिक महत्व है। लगभग हर पूजा-पाठ, यज्ञ और शुभ संस्कार में नारियल का प्रयोग अनिवार्य माना जाता है। इसे पवित्रता, पूर्णता और शुभता का प्रतीक समझा जाता है। नारियल से जुड़ी एक प्राचीन पौराणिक कथा भी प्रचलित है, जिसके अनुसार इसका पृथ्वी पर अवतरण महर्षि विश्वामित्र द्वारा कराया गया था। यह कथा प्राचीन काल के प्रतापी और धर्मनिष्ठ राजा सत्यव्रत से संबंधित है। राजा सत्यव्रत ईश्वर में गहरी आस्था रखते थे। उनके पास राज्य, वैभव और सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं थी, फिर भी उनके मन में एक विशेष इच्छा थी- वे जीवित अवस्था में पृथ्वीलोक से स्वर्गलोक जाना चाहते थे। स्वर्गलोक की अलौकिक सुंदरता उन्हें अत्यंत आकर्षित करती थी, परंतु वहां पहुंचने का मार्ग उन्हें ज्ञात नहीं था।

एक समय महर्षि विश्वामित्र तपस्या के लिए अपने आश्रम से दूर चले गए। उनकी अनुपस्थिति में क्षेत्र में अकाल पड़ गया और उनका परिवार कठिन परिस्थितियों में जीवनयापन करने लगा। इस संकट के समय राजा सत्यव्रत ने महर्षि के परिवार की सहायता की और उनकी देख-रेख का दायित्व निभाया। जब महर्षि विश्वामित्र तपस्या से लौटे, तो उन्हें अपने परिवार से राजा के इस उपकार की जानकारी मिली। कृतज्ञ होकर महर्षि विश्वामित्र राजा के दरबार पहुंचे और उन्हें वर मांगने का अवसर दिया। राजा ने विनम्रतापूर्वक अपनी इच्छा व्यक्त की कि वे स्वर्गलोक जाना चाहते हैं। राजा के उपकार को स्मरण करते हुए महर्षि ने अपने तपोबल से एक मार्ग तैयार किया, जो स्वर्गलोक की ओर जाता था। राजा उस मार्ग से स्वर्ग की ओर बढ़े, किंतु जैसे ही वे स्वर्ग के समीप पहुंचे, देवराज इन्द्र ने उन्हें वहां प्रवेश करने से रोकते हुए पृथ्वी की ओर धकेल दिया। दुखी राजा ने यह घटना महर्षि को बताई। इसके बाद देवताओं और महर्षि विश्वामित्र के बीच विचार-विमर्श हुआ और एक समाधान निकाला गया।

निर्णय हुआ कि राजा सत्यव्रत के लिए पृथ्वी और स्वर्ग के बीच एक नया स्वर्गलोक बनाया जाएगा। उसे स्थिर रखने के लिए महर्षि ने उसके नीचे एक विशाल खंभे का निर्माण किया। मान्यता है कि समय के साथ यह खंभा एक ऊंचे वृक्ष में बदल गया और राजा सत्यव्रत का सिर फल का रूप धारण कर गया। यही वृक्ष नारियल का पेड़ और वह फल नारियल कहलाया। इस कथा के अनुसार राजा सत्यव्रत न तो पूर्ण रूप से पृथ्वी के रहे और न ही स्वर्ग के, बल्कि दोनों लोकों के बीच स्थित रहे। इसी कारण नारियल को हिन्दू धर्म में अत्यंत पवित्र और पूजनीय स्थान प्राप्त है।

– फीचर डेस्क

बोधकथा

विवेक और क्रोध

बहुत समय पहले की बात है। महान दार्शनिक आदि शंकराचार्य और विद्वान मंडन मिश्र के बीच लगातार सोलह दिनों तक शास्त्रार्थ चला। यह शास्त्रार्थ केवल विद्या का नहीं, बल्कि धैर्य, विवेक और आत्मसंयम की भी परीक्षा था। इस विद्वत वाद-विवाद की निर्णायिका स्वयं मंडन मिश्र की धर्मपत्नी, विदुषी देवी भारती थीं, जिनकी बुद्धिमत्ता और निष्पक्षता सर्वविदित थी। शास्त्रार्थ अपने निर्णायक मोड़ पर था, तभी किसी आवश्यक कारण से देवी भारती को कुछ समय के लिए बाहर जाना पड़ा। जाने से पहले उन्होंने एक अनोखा उपाय किया। उन्होंने दोनों विद्वानों के गले में एक-एक पुष्पमाला डालते हुए कहा- "मेरी अनुपस्थिति में ये मालाएं ही आपकी हार-जीत का निर्णय करेंगी।"

यह कहकर वे वहां से चली गईं। उनके जाने के बाद भी शास्त्रार्थ पूर्ववत चलता रहा। कुछ समय पश्चात देवी भारती लौट आईं। उन्होंने दोनों विद्वानों को ध्यान से देखा और बिना कोई प्रश्न किए अपना निर्णय सुना दिया- आदि शंकराचार्य विजयी हुए और मंडन मिश्र पराजित। यह सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। कई विद्वानों को यह निर्णय असहज लगा, क्योंकि देवी भारती तो शास्त्रार्थ के बीच में ही चली गई थीं। एक विद्वान ने विनम्रतापूर्वक प्रश्न किया-"देवी, आपने अनुपस्थिति में यह निर्णय कैसे लिया?"

देवी भारती ने मुस्कुराकर जवाब दिया- "जब भी कोई विद्वान

शास्त्रार्थ में पराजित होने लगता है और उसे जब हार की झलक दिखने लगती है, तो वह इस वजह से क्रोधित हो उठता है और मेरे पति के गले की माला उनके क्रोध की ताप से सूख चुकी है, जबकि शंकराचार्य जी की माला के फूल अभी भी पहले की भांति ताजे हैं। इससे ज्ञात होता है कि शंकराचार्य की विजय हुई है।"

यह उत्तर सुनकर पूरी सभा स्तब्ध रह गई। सभी ने देवी भारती की सूक्ष्म दृष्टि, विवेक और निर्णय क्षमता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस कथा का सार यही है कि क्रोध वह अवस्था है, जो जीत के बिल्कुल समीप पहुंचकर भी हार का द्वार खोल देती है। क्रोध केवल पराजय का कारण नहीं बनता, बल्कि संबंधों में दरार और विवेक के पतन का भी मूल कारण है। इसलिए जीवन में चाहे कैसी भी परिस्थिति आए, क्रोध को स्वयं पर हावी न होने दें- यही सच्ची विजय है।

-श्याम बिहारी शुक्ला

सप्ताह के प्रमुख व्रत

पौष पुत्रदा एकादशी

व्रत की तिथि- 30 दिसंबर
व्रत का महत्व : एकादशी के व्रत को सभी व्रतों में श्रेष्ठ माना गया। इनमें से पौष पुत्रदा एकादशी व्रत एक विशेष रखता है। यह व्रत नि :संतान दंपतियों के लिए अत्यंत ही फलदायी है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार जो व्यक्ति पौष की एकादशी के व्रत को पूरे श्रद्धा एवं विधि-विधान से करता है, उसे भगवान विष्णु की कृपा से संतान की प्राप्ति होती है। इसी कारणवश इस एकादशी को पौष पुत्रदा एकादशी के नाम से जाना जाता है।

व्रत की विधि-

- एकादशी के दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें। इसके बाद भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए व्रत का संकल्प लें।
- व्रत का संकल्प लेने के पश्चात भगवान विष्णु की गंगाजल, तुलसी, फूल, पंचामृत, तिल से पूजा करें।
- शाम को विधि-विधान से भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा एवं आरती करें।
- व्रत के अगले दिन द्वादशी को सुबह स्नान कर व्रत का पारण करें।

आपके घर का गलत वास्तु बढ़ा सकता है एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स

आज के समय में वैवाहिक रिश्तों में बढ़ती दूरियां, तनाव और एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर्स केवल भावनात्मक या सामाजिक कारणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनके पीछे घर का गलत वास्तु और प्रतिकूल ग्रह-दशाएं भी बड़ी भूमिका निभाती हैं। कई बार दंपति अनजाने में ऐसे स्थान पर रहते हैं, जहां ऊर्जा असंतुलन रिश्तों में शक, झगड़े और भावनात्मक खालीपन पैदा करता है। जब वास्तु दोष और ग्रहों का प्रभाव साथ मिल जाता है, तो 'तीसरे व्यक्ति' की एंट्री के योग बढ़ जाते हैं। इस लेख में जानिए कैसे घर की दिशाएं और ग्रह संबंधों को प्रभावित करते हैं।

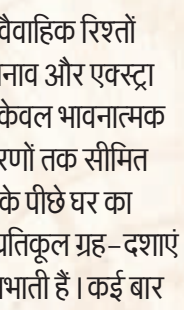

आचार्य मधुरेंद्र पांडेय
ज्योतिष एवं वास्तु एक्सपर्ट

पति-पत्नी के रिश्ते में दूरी, झगड़े और बीच में "तीसरे" का आना कई बार घर के वास्तु और ग्रह-दशा दोनों के मेल से होता है।

कैसे बिगड़ते हैं संबंध

यदि दंपति का बेडरूम दक्षिण-पूर्व (अग्नि कोण) में हो, तो स्वभाव में गर्मी, तकरार, शक और गुस्सा बढ़ता है, बात छोटी हो या बड़ी तुरंत झगड़े में बदल जाती है।

- जब बेडरूम उत्तर-पूर्व में होता है, तो भावनात्मक दूरी, ठंडापन और शारीरिक निकटता में कमी आने लगती है, जिससे पति-पत्नी एक-दूसरे से कटने लगते हैं।
- दक्षिण-पश्चिम जो रिश्तों और स्थिरता का कोना है, वहां कटाव, टॉयलेट, किचन या भारी दोष हों, तो भरोसा कमजोर होता है, असुरक्षा और अलगाव की भावना पैदा होती है।

तीसरे के आने के वास्तु कारण

- दक्षिण-पश्चिम जोन (रिलेशनशिप जोन) में टॉयलेट, गड्ढा या बहुत हल्कापन होने से वैवाहिक बंधन ढीला पड़ता है और बाहरी लोगों की दखल, यहां तक कि एक्स्ट्रा मैरिटल संबंध के योग बढ़ते माने गए हैं।
- उत्तर-पश्चिम में (रिश्तों और मूवमेंट का क्षेत्र) ज्यादा कट, अव्यवस्था या गलत निर्माण हो, तो घर के लोग बाहर की संगत में अधिक खिंचते हैं और घर से मन उखड़ सकता है।
- बेडरूम में आईना सामने से या बिस्तर को काटता हो, बिस्तर के नीचे कबाड़, या शादी की फोटो गलत जोन (जैसे SSW, ESE, WNW) में हों, तो गलतफहमियां, शक और तीसरे व्यक्ति की एंट्री की संभावना बढ़ती बताई गई है।

अवैवाहिक और ग्रह संबंध

- कुंडली में शुक्र पर राहु की पकड़, खासकर 5 वें, 7 वें, 8 वें या 12 वें भाव में और उनकी दशा-भुक्ति चल रही हो तो अनैतिक आकर्षण, गुप्त संबंध या बार-बार किसी और की ओर झुकाव के योग बन सकते हैं।
- ऐसी स्थिति में व्यक्ति को वर्तमान रिश्ता भी कम लगने लगता है, कल्पनाओं और मोह में निर्णय लेता है और यहीं से तीसरे व्यक्ति की भूमिका मजबूत होती है।

मुख्य सावधानियां बरतने की जरूरत

- कोशिश करें कि मास्टर बेडरूम दक्षिण-पश्चिम दिशा में हो, बेड सिर दक्षिण या पूर्व की ओर रहे और दोनों के लिए बेड के दोनों ओर बराबर जगह हो ताकि ऊर्जा और अधिकार संतुलित रहें।
- बेडरूम में टॉयलेट, तीखे लाल-नारंगी रंग, लगातार बंद खिड़कियां, कम रोशनी और बिस्तर के नीचे अव्यवस्था न होने दें, इससे अनावश्यक तनाव और मानसिक दबाव बढ़ता है।
- शादी की फोटो, जोड़े के गिफ्ट आदि को रिश्तों के लिए शुभ दिशा (आमतौर पर स्व, SW या पश्चिम) में साफ-सुथरे और सम्मानित स्थान पर रखें, न कि टॉयलेट, स्टोर या कचरे के पास।

आपकी कुंडली और घर की दिशा

हर व्यक्ति की कुंडली और हर घर की दिशा अलग होती है, इसलिए किस घर में कौन-सा दोष रिश्ते को कितना प्रभावित कर रहा है, यह देखने के लिए फ्लोर प्लान और दोनों की जन्म-तिथि, समय, स्थान को देखकर उसके माध्यम से ही उचित निष्कर्ष निकाला जा सकता है। अत: जब भी किसी को कभी घर या बेडरूम की नए सिरे से या दुबारा से व्यवस्थित कराना हो, तो किसी वास्तु विशेषज्ञ से सलाह लेकर ही कार्य करें ताकि घर में होने वाले वास्तु दोषों से बचा जा सकें।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	84,695.54	25,942.10
गिरावट	345.91	100.20
प्रतिशत में	0.41	0.38

सोना 1,41,800 प्रति 10 ग्राम

चांदी 2,40,000 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, मंगलवार, 30 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

कारोबार

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2535, राज श्री 1800, फ़ॉर्चून कि. 2250, रविन्द्रा 2410, फॉर्चुन 13 किग्रा 1980, जय जवान 1990, सचिन 2010, सूरज 1990, अवसर 1865, उजाला 1920, गृहणी 13 किग्रा 1855, क्लासिक (किग्रा) 2145, मोर 2185, चक्र टिन 2300, ब्लू 2085, आशीर्वाद मस्टर्ड 2300, स्वास्तिक 2490

किराना : हल्दी निजामाबाद 17000, जीरा 24500, लाल मिर्च 14000-18000, धनिया 9400-12000, अजवायान 13500-20000, मेथी 6000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 31000, (प्रतिकि.) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 840, किसमिस पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल (प्रति कु.) : डबल चाबी सेला 9600, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 4850, शर्बती स्टीम 5200, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 8200, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1 किग्रा, 5 किग्रा) 10100, हरी पत्ति नेचुरल 9100, जेनिथ 8400, गलैक्सी 7400, सूमो 4000, गोल्डन सेला 7900, मंसूरी पनघट 4350,लाडली 4000

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9800, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 12000-13400, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली 7250-7450 मलका दाल 7350-9200, मलका छाँटी 7250, दाल उड़द बिलासपुर 7800-8500, मसूर दाल छोटी 10000-11600, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 9900, उड़द धोवा इंदौर 11800, उड़द धोवा 9800-10400,चना काला 7150, दाल चना 7250, दाल चना मोटी 7200, मलका विदेशी 7200, रूपकिशोर बेसन 7700, चना अकोला 6600, डबरा 6700-8800, सच्चा हीरा 8500, मोटा हीरा 9900, अरहर गोला मोटा 7700, अरहर पटका मोटा 8000, अरहर कोरा मोटा 8500, अरहर पटका छोटा 10000-10600, अरहर कोरी छोटी 11000

चीनी : पीलीभीत 4280, बहेड़ी 4220

हल्द्वानी मंडी

चावल : शरबती- 3200, मसूरी- 900, बासमती- 5000, परमल- 1300

दाल दलहन : काला चना- 2200, साबुत चना दाल- 2000, मूंग साबुत- 4200, राजमा- 8000-11700, दाल उड़द- 5600, साबुत मसूर दाल- 3000, मसूर दाल- 2700, उड़द साबुत- 5000, काबुली चना- 8000, अरहर दाल- 10300, लोबिया/करमानी- 1200

औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दो साल के उच्च स्तर 6.7 प्रतिशत पर

जीएसटी दरों में कटौती से खनन और विनिर्माण क्षेत्र ने किया मजबूत प्रदर्शन

नई दिल्ली, एजेंसी

खनन और विनिर्माण क्षेत्रों के मजबूत प्रदर्शन से नवंबर महीने में देश के औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि दर दो साल के उच्च स्तर 6.7% पर पहुंच गई। यह जानकारी सोमवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों में दी गई।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के मुताबिक, औद्योगिक उत्पादन को मापने वाला औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) नवंबर, 2024 में पांच प्रतिशत बढ़ा था। इससे पहले औद्योगिक उत्पादन का उच्च स्तर नवंबर, 2023 में 11.9 प्रतिशत दर्ज किया गया था। त्योहारों से पहले देश में मांग और खपत को बढ़ावा देने के लिए कई उपभोक्ता वस्तुओं पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में 22 सितंबर 2025 से कटौती की गई थी। इससे जीएसटी दरों में कमी का लाभ उठाने के लिए विनिर्माण ऑर्डरों में तेजी आई। इसके साथ एनएसओ ने अक्टूबर 2025 के लिए औद्योगिक उत्पादन वृद्धि के आंकड़े को भी संशोधित किया है। अक्टूबर के लिए आईआईपी वृद्धि को बढ़ाकर 0.5% कर दिया गया है जबकि गत माह जारी अस्थायी अनुमान 0.4% का था।

- एनएसओ ने अक्टूबर 2025 के लिए वृद्धि के आंकड़े को भी किया संशोधित
- विनिर्माण क्षेत्र का आठ और खनन क्षेत्र का उत्पादन 5.4% बढ़ा

आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, नवंबर 2025 में विनिर्माण क्षेत्र का उत्पादन 8% बढ़ा, जो एक साल पहले इसी महीने में 5.5% था। खनन क्षेत्र का उत्पादन भी नवंबर में 5.4% बढ़ा जबकि नवंबर 2024 में यह वृद्धि 1.9% रही थी। हालांकि, बिजली उत्पादन का प्रदर्शन पिछले महीने कमजोर रहा। नवंबर में बिजली उत्पादन में 1.5% की गिरावट दर्ज की गई, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में इसमें 4.4% की वृद्धि हुई थी।

अमेरिकी शुल्क का कुछ खंडों पर दिख सकता है असर

इक्रा की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा कि अमेरिकी शुल्क और जुर्माने का असर कुछ विनिर्माण खंडों में दिखाई दे सकता है, जिससे जीएसटी दरों में बदलाव के सकारात्मक प्रभाव का असर कम हो सकता है। उन्होंने कहा कि दो महीने के बाद दिसंबर 2025 में बिजली की मांग बढ़ी है, जिससे उस महीने बिजली उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा और यह आईआईपी वृद्धि के लिए सकारात्मक संकेत है। नायर ने कहा कि दिसंबर 2025 में आईआईपी वृद्धि घटकर 3.5 से 5.0% के दायरे में आ सकती है, क्योंकि तुलनात्मक आधार प्रभाव सामान्य होगा।

नवंबर के आईआईपी आंकड़ों में सुधार से संकेत मिलता है कि औद्योगिक गतिविधियों में खासकर विनिर्माण और खनन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में रफ्तार की वापसी हो रही है। 2025-26 में अप्रैल-नवंबर के दौरान देश का औद्योगिक उत्पादन 3.3% की दर से बढ़ा, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में यह 4.1% था। विनिर्माण क्षेत्र के तहत 23 में 20 उद्योग समूहों ने नवंबर 2025 में सालाना आधार पर सकारात्मक वृद्धि दर्ज की।

घरेलू विमानन उद्योग को 18,000 करोड़ का होगा घाटा : इक्रा

मुंबई। घरेलू विमानन उद्योग को यात्रियों की संख्या में संभावित कमी और अन्य कारकों के कारण चालू वित्त वर्ष 2025-26 में करीब 17,000-18,000 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा होने का अनुमान है। रेटिंग एजेंसी इक्रा ने सोमवार को यह बात कही। इससे पहले, अनुमान लगाया गया था कि उद्योग को 2025-26 के दौरान 9,500-10,500 करोड़ का घाटा होगा।

- यात्रियों की कमी और अन्य कारकों से घाटे का अनुमान

इक्रा ने इस वर्ष जून में एयर इंडिया के बोइंग 787-8 विमान दुर्घटना और इस महीने की शुरुआत में इंडिगो द्वारा हजारों उड़ानों के रद्द होने सहित कई कारकों के कारण वित्त वर्ष 2025-26 में घरेलू हवाई यात्री यातायात वृद्धि के अपने पूर्वानुमान को घटाकर शून्य से तीन प्रतिशत कर दिया है। जबकि पहले उसने चार से छह प्रतिशत का अनुमान लगाया था। इक्रा ने कहा कि यह संशोधन 2025-26 की अप्रैल-नवंबर अवधि में उम्मीद से धीमी यातायात वृद्धि के कारण है जो सीमा पार तनाव बढ़ने से प्रभावित हुई थी।

विदेशी निवेशकों की पूंजी निकासी से बाजार टूटा

मुंबई, एजेंसी

- सेंसेक्स में 346 अंक और निफ्टी में 100 अंकों की गिरावट
- तेल एवं गैस और आईटी शेयरों में भारी बिकवाली

तेल एवं गैस और आईटी शेयरों में बिकवाली, विदेशी पूंजी की निकासी और साल के अंत में कमजोर कारोबार होने से सोमवार को घरेलू शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद हुए। सेंसेक्स 346 अंक के नुकसान में रहा जबकि निफ्टी एक बार फिर 26,000 के स्तर के नीचे आ गया।

बीएसई का सेंसेक्स चौथे कारोबारी सत्र में गिरावट दर्ज करते हुए 345.91 अंक टूटकर 84,695.54 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 403.59 अंक गिरा था। वहीं, एनएसई का निफ्टी तीसरे दिन भी नुकसान में रहा और 100.20 अंक फिसलकर 25,942.10 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में से अडाणी पोर्ट्स के शेयरों में सर्वाधिक 2.22% की गिरावट आई। एचसीएल टेक में 1.86%, पावर ग्रिड में 1.85, ट्रेंट में 1.36, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स में 1.26 और भारती एयरटेल में 1.14% की गिरावट रही। बाजार पूंजीकरण के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज में भी 0.88% की नरमी रही। केजी-डी6 गैस विवाद में रिलायंस और उसकी साझेदार बीपी से सरकार द्वारा 300 अरब डॉलर का मुआवजा मांगे जाने की खबर है। वहीं, टाटा स्टील के शेयरों में 1.83% की तेजी रही। एशियन पेंट्स, हिंदुस्तान यूनिलीवर और इटर्नल ने भी बढ़त दर्ज की।

डीआईआई ने 1,772.56 करोड़ के शेयर खरीदे

शेयर बाजार के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शुक्रवार को 317.56 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 1,772.56 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। इस बीच, वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1.70 प्रतिशत चढ़कर 61.67 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इससे पहले शुक्रवार को भी स्थानीय बाजार गिरावट के साथ बंद हुए थे।

बाजार के दायरे में रहने के संकेत

जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि बाजार में आगे तेजी के लिए फिलहाल मजबूत कारण नहीं दिख रहे हैं। अधिकतर निवेशक छुट्टियों के मूड में हैं, जिससे निकट अवधि में बाजार के एक दायरे में ही रहने के संकेत मिलते हैं। व्यापक बाजार में बीएसई स्मालकैप 0.58 और मिडकैप में 0.45% की गिरावट रही। क्षेत्रवार सूचकांकों में उपयोगिता खंड में 0.91 और बिजली खंड में 0.86% की तेजी रही। वहीं, आईटी, फोकस आईटी, रियल्टी और पूंजीगत उत्पाद खंड भी चढ़कर बंद हुए।

बाजार की धारणा वैश्विक संकेतों से प्रभावित

रेलिगेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (शोध) अजीत मिश्रा ने कहा कि बाजार की धारणा वैश्विक संकेतों और चुनिंदा शेयरों से जुड़ी खबरों से प्रभावित हो रही है। किसी बड़े उत्प्रेरक के अभाव में कारोबारी सौदे कम हो रहे हैं और निवेशक दांव लगाने के बजाय चयनात्मक निवेश को प्राथमिकता दे रहे हैं। एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी सूचकांक दो प्रतिशत से अधिक चढ़ गया। चीन का शंघाई कंपोजिट मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ जबकि जापान का निक्की 225 और हांगकांग का हैंगसेंग नुकसान में रहे। यूरोप के बाजारों में दोपहर तक गिरावट का रुख था। अमेरिकी बाजार शुक्रवार को स्थिर था।

केजी-डी6 विवाद : रिलायंस-बीपी से मांगा 30 अरब डॉलर मुआवजा

नई दिल्ली, एजेंसी

- न्यायाधिकरण ने 14 साल पुराने मामले पर सुनवाई नवंबर में की थी पूरी, फैसला अगले साल

केंद्र सरकार ने कृष्णा-गोदावरी बेसिन के केजी-डी6 गैस क्षेत्र से प्राकृतिक गैस उत्पादन का लक्ष्य पूरा नहीं कर पाने के मामले में रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) और उसकी साझेदार बीपी से 30 अरब डॉलर से अधिक का मुआवजा मांगा है। सूत्रों के मुताबिक, सरकार ने यह दावा तीन-सदस्यीय मध्यस्थता न्यायाधिकरण के समक्ष पेश किया है। करीब 14 साल पुराने इस मामले पर सुनवाई सात नवंबर को पूरी हो चुकी है।

सूत्रों ने बताया कि न्यायाधिकरण अगले वर्ष किसी समय इस मामले में अपना फैसला सुना सकता है। फैसले से असंतुष्ट पक्ष के पास सुप्रीम कोर्ट जाने का विकल्प होगा। हालांकि इस संदर्भ में रिलायंस इंडस्ट्रीज और बीपी ने तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की। सरकार का आरोप है कि दोनों साझेदारों ने केजी-डी6 ब्लॉक में जरूरत से ज्यादा बड़ी सुविधाएं विकसित कीं, लेकिन वे प्राकृतिक गैस उत्पादन के तय लक्ष्यों को हासिल कर पाने में नाकाम रहे। सरकार ने गैस का मौद्रिक मूल्य मांगने के साथ ही प्रतिष्ठानों पर अतिरिक्त खर्च, ईंधन विपणन और ब्याज पर भी मुआवजा मांगा है।

2024-25 में बैंकों का प्रदर्शन रहा मजबूत, जीएनपीए न्यूनतम स्तर पर

मुंबई, एजेंसी

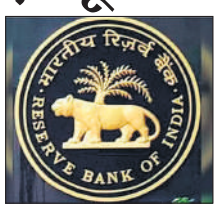

- आरबीआई ने कहा- बैंक ऋण और जमा वृद्धि दहाई अंकों में बनी रही, हालांकि इसमें कुछ नरमी देखी गई

वाणिज्यिक बैंकों का प्रदर्शन वित्त वर्ष 2024-25 में मजबूत रहा और मार्च के अंत तक सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (जीएनपीए) का अनुपात घटकर 2.2 प्रतिशत पर आ गया। यह कई दशकों का न्यूनतम स्तर है। भारतीय रिजर्व बैंक ने सोमवार को जारी रिपोर्ट में यह जानकारी दी।

भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति और प्रगति 2024-25 शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया कि 2024-25 के दौरान बैंकिंग क्षेत्र अच्छा बना रहा, जिसे मजबूत बहीखाते, लगातार लाभप्रदता और बेहतर परिसंपत्ति गुणवत्ता का समर्थन मिला। बैंक ऋण और जमा वृद्धि दहाई अंकों में बनी रही, हालांकि इसमें कुछ नरमी देखी गई। सभी बैंक समूहों में पूंजी और नकदी बफर नियामकीय आवश्यकताओं से काफी ऊपर बने रहे। बैंकिंग क्षेत्र के मजबूत बुनियाद जोखिमों के खिलाफ एक सुरक्षा कवच प्रदान करते हैं, जो विवेकपूर्ण विनियमन के साथ मिलकर लगातार ऋण प्रवाह के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाते हैं। 2024-25 में वाणिज्यिक बैंकों का शुद्ध लाभ बढ़ा, हालांकि इसकी गति पिछले वर्ष की तुलना में धीमी रही। सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का कुल शुद्ध लाभ 2024-25 में सालाना आधार पर 14.8% बढ़कर 4.01 लाख करोड़ रुपये हो गया। 2023-24 में इनका लाभ 32.8% बढ़कर 3.5 लाख करोड़ रुपये था।

राष्ट्रीय

कांग्रेस घुसपैठियों को मानती है वोट बैंक

केंद्रीय गृह मंत्री शाह बोले- भारत में पड़ोसी देश से आए अवैध प्रवासियों की केंद्र करेगा पहचान

- शाह ने श्रीमंत शंकरदेव के 227 करोड़ से पुनर्निर्मित जन्मस्थल का किया उद्घाटन

बोरदुवा (असम), एजेंसी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को आरोप लगाया कि कांग्रेस असम के लोगों, उनकी संस्कृति, भूमि और पहचान के लिए खतरा पैदा करने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों को अपना वोट बैंक मान रही है। शाह ने जनसभा में कहा कि केंद्र सरकार न केवल असम, बल्कि पूरे भारत में पड़ोसी देश से आए सभी अवैध प्रवासियों की पहचान करेगी।

असम में आयोजित कार्यक्रम में शामिल केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, सरबानंदा सोनोवाल, मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा व अन्य।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने न केवल असमिया लोगों की सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि राज्य के सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान दिया है। गृह मंत्री ने नगांव जिले में वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव के जन्मस्थान, बतद्रवा थान की 227 करोड़ रुपये की लागत वाली पुनर्विकास परियोजना का उद्घाटन किया। शाह ने कहा कि श्रीमंत शंकरदेव की जन्मभूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराना ऐतिहासिक अवसर है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने बांग्लादेशी घुसपैठियों से एक लाख बीघा से अधिक भूमि मुक्त कराई है। उन्होंने कहा कि भाजपा को असम को घुसपैठियों से मुक्त करने के लिए पांच साल का और समय दीजिए। गृहमंत्री ने कहा कि हम न केवल असम, बल्कि पूरे भारत में सभी बांग्लादेशी घुसपैठियों की पहचान करेंगे। उन्होंने कहा कि शंकरदेव ने एक भारत का आह्वान किया था, जिसका प्रधानमंत्री अब अनुसरण कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने असम में शांति और विकास सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए हैं, जो न केवल कागजों पर बल्कि वास्तविकता में भी साकार हो रहे हैं। शाह ने कहा कि भाजपा सरकार ने पिछले 11 सालों में राज्य में कई उग्रवादी संगठनों के साथ शांति समझौते किये हैं तथा इन समझौतों के 92 प्रतिशत उपबंधों/शर्तों को पूरा किया गया है।

तीन दिवसीय दौरे पर पश्चिम बंगाल आ सकते हैं शाह

कोलकाता। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के सोमवार को पश्चिम बंगाल के तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचने की संभावना है। भाजपा नेता ने बताया कि शाह शाम को कोलकाता हवाई अड्डे पर उतरेंगे और वहां से सीधे भाजपा कार्यालय जाएंगे और राज्य में अगले साल की शुरुआत में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी की संगठनात्मक तैयारियों का जायजा लेंगे। केंद्रीय गृह मंत्री के मंगलवार को शहर में कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें भी कर सकते हैं।

जम्मू-कश्मीर : कुपवाड़ा में दो महीने के लिए वीपीएन सेवाओं पर प्रतिबंध

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती जिले कुपवाड़ा में सोमवार को अधिकारियों ने राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं का हवाला देते हुए वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) के इस्तेमाल पर दो महीने के लिए प्रतिबंध लगा दिया। कुपवाड़ा प्रशासन ने जिले में सभी वीपीएन सेवाओं के प्रयोग पर प्रतिबंध का आदेश जारी किया।

- राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की आशंका में प्रशासन ने उठाया कदम

यह कदम कुपवाड़ा और हंदवाड़ा के एसएसपी की रिपोर्ट के बाद उठाया गया है, जिसमें संदिग्ध इंटरनेट यूजर्स द्वारा वीपीएन के इस्तेमाल में बढ़ोतरी की बात कही गई थी। जिला मजिस्ट्रेट श्रीकांत बालासाहेब सुसे ने सार्वजनिक सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और डिजिटल शासन की अखंडता पर चिंताओं का हवाला देते हुए वीपीएन के इस्तेमाल को प्रतिबंधित किया। आदेश में कहा गया है, वीपीएन सेवाओं का दुरुपयोग गैरकानूनी और राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों के लिए किया जा सकता है, जिसमें अशांति फैलाना, भड़काऊ या गुमराह करने वाली सामग्री फैलाना और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए हानिकारक गतिविधियों का समन्वय करना शामिल है, जिससे सार्वजनिक व्यवस्था, शांति और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा होता है। यह निर्देश कुपवाड़ा में काम करने वाले सभी व्यक्तियों, संस्थानों, साइबर कैफे और इंटरनेट सेवा प्रदाताओं पर लागू होगा।

पीड़िता बोली- जब तक फांसी नहीं होती चुप नहीं बैठूंगी

उन्नाव दुष्कर्म मामला

उन्नाव/नई दिल्ली,एजेंसी

उन्नाव दुष्कर्म मामले की पीड़िता ने भाजपा के पूर्व विधायक कुलदीप सेंगर की आजीवन कारावास की सजा को निलंबित करने वाले दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश पर उच्चतम न्यायालय द्वारा रोक लगाए जाने पर सोमवार को संतोष व्यक्त किया और न्याय प्रणाली पर अपना पूरा विश्वास जताया।

पीड़िता ने कहा कि मैं इस फैसले से बहुत खुश हूं। मुझे उच्चतम न्यायालय से न्याय मिला है। मैं शुरू से ही न्याय के लिए आवाज उठाती रही हूं। उन्होंने कहा, मैं किसी भी अदालत के खिलाफ कोई आरोप नहीं लगाती। मुझे सभी अदालतों पर भरोसा है, लेकिन उच्चतम न्यायालय ने मुझे न्याय दिया है और वह ऐसा करना जारी रखेगा। साथ ही कहा कि जब तक आरोपी को फांसी नहीं होती वह चुप नहीं बैठूंगी।

परिवार झेल रहा धमकियां, कानून पर विश्वास : इशिता

सेंगर की छोटी बेटी इशिता सेंगर ने एक्स पर भावनात्मक पोस्ट करते हुए न्याय की अपील की। इशिता ने कहा कि उनका परिवार आठ सालों से चुपचाप न्याय का इंतजार कर रहा है और उसने कानून और संस्थानों पर अपना भरोसा बनाए रखा है। उन्होंने लिखा कि उनकी पहचान सिर्फ भाजपा विधायक की बेटी तक सीमित हो गई है और उन्हें सोशल मीडिया पर लगातार नफरत, गाली-गलौज और धमकियों का सामना करना पड़ा है। इशिता ने कहा, उनका परिवार न तो कोई रियायत चाहता है और न सहानुभूति। बल्कि यह चाहता है कि कानून बिना किसी दबाव या डर के काम करे और सुबूतों की निष्पक्ष जांच हो। इशिता की उनकी बड़ी बहन ऐश्वर्या सेंगर ने भी एक्स पर लिखा कि हम हारेंगे नहीं, लड़ेंगे।

मनरेगा की कमियों और जी राम जी विधेयक के क्रियान्वयन पर चर्चा

नई दिल्ली, एजेंसी

- ग्रामीण विकास और पंचायती राज संबंधी संसदीय समिति चिंतित

संसदीय समिति ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कानून (मनरेगा) के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के साथ इस पर भी विचार किया कि नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा बनाए विकसित भारत-जी राम जी अधिनियम के सुचारू क्रियान्वयन के लिए छह महीनों में कैसे आगे बढ़ना है। सूत्रों ने बताया कि ग्रामीण विकास और पंचायती राज संबंधी संसद की स्थायी समिति के अधिकतर सदस्य इस बात को लेकर चिंतित थे कि अगले छह महीनों में परिवर्तन कैसे होगा जब सरकार मनरेगा की जगह जी राम जी अधिनियम को लागू करेगी।

उनकी चिंता इस बात को लेकर थी कि इस अवधि के दौरान लाभार्थियों को भुगतान कैसे किया जाएगा और अतिरिक्त बजटीय सहायता की व्यवस्था कैसे की जाएगी। सूत्रों के अनुसार, बैठक के दौरान किसी भी सदस्य ने जी राम जी अधिनियम का विरोध नहीं किया और उनमें से कई ने चिंता व्यक्त की कि पुराने कानून के तहत कार्य का पंजीकरण कई राज्यों में केवल 50 प्रतिशत के आसपास था। सदस्यों ने कहा कि जी राज जी अधिनियम को लागू करने में छह महीने लगेंगे, क्योंकि नियम बनने के बाद ही इसे लागू किया जाएगा।

रक्षा मंत्रालय 79 हजार करोड़ के सैन्य उपकरण खरीदेगा

नई दिल्ली। रक्षा मंत्रालय ने सेना की युद्ध क्षमता को मजबूत करने के लिए 79,000 करोड़ रुपये के लंबी दूरी के रॉकेट, मिसाइल, रडार प्रणाली और अन्य सैन्य उपकरणों की खरीद को सोमवार को मंजूरी प्रदान कर दी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता वाली रक्षा खरीद परिषद (डीएसी) ने प्रस्तावों को हरी झंडी दे दी।

- लंबी दूरी के रॉकेट, मिसाइल, रडार प्रणाली और अन्य उपकरणों की खरीद को दी गई मंजूरी

डीएसी ने सेना की तोपखाना रेजिमेंटों के लिए लोइटर म्यूनिशन प्रणाली की खरीद को मंजूरी दे दी। लोइटर म्यूनिशन ऐसे हवाई अस्त्र होते हैं जो किसी लक्ष्य क्षेत्र के आसपास तब तक मंडराते रहते हैं जब तक कि लक्ष्य का पता न चल जाए, और फिर हमला करते हैं। इसे आत्मघाती ड्रोन या विस्फोटक ड्रोन भी कहा जाता है। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि भारतीय सेना के लिए हल्के रडार, पिनाका रॉकेट प्रणाली के लिए लंबी दूरी के निर्देशित रॉकेट सामग्री और एकीकृत ड्रोन पहचान एवं अवरोधन प्रणाली (एमके-2) की खरीद को भी मंजूरी दी गई है।

शीत लहर से कांपा उत्तर भारत, कई राज्यों में हाई अलर्ट

रांची/पंजाब/हरियाणा/हिमाचल, एजेंसी

उत्तर भारत में लगातार पड़ रही ठंड ने आम जनजीवन को प्रभावित कर रखा है। इसे देखते हुए कई राज्यों में हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है। साथ ही सतर्कता बरतने की चेतावनी जारी कर दी गई है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के रांची स्थित केंद्र ने सोमवार को झारखंड के कई हिस्सों में शीत लहर और घने कोहरे की स्थिति को लेकर येलो अलर्ट जारी किया। मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, लातेहार, लोहरदगा, गुमला, खूंटी और रांची में शीत लहर की आशंका है। इन जिलों में मंगलवार सुबह 8:30 बजे तक भीषण ठंड का प्रकोप जारी रहेगा।

रांची के पास स्थित कांके राज्य का सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां तापमान 2.5 डिग्री रहा। गढ़वा, पलामू, लातेहार, चतरा, हजारीबाग और कोडरमा सहित छह जिलों में घने कोहरे से 'शीत दिवस' के लिए और गिरिडीह, देवघर, दुमका, गोड्डा, साहिबगंज और पाकुड़ सहित अन्य छह जिलों में घने कोहरे के लिए अलर्ट जारी हुआ है। आईएमडी के अनुसार, इन जिलों में दृश्यता 50 से 200 मीटर रह सकता है।

राजस्थान में सर्दी और कोहरे से जनजीवन प्रभावित

राजस्थान में कई दिनों के बाद सोमवार को छाए कोहरे से आम जनजीवन और यातायात प्रभावित हुआ। बेहद कम दृश्यता से आगरा-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 21 के साथ सभी मार्गों पर वाहनों को रेंगते हुए चलना पड़ा, वहीं दिल्ली-मुंबई एवं जयपुर-आगरा रेलमार्ग पर अधिकतर रेलगाड़ियां कई घंटे विलंब से चल रही हैं।

ओडिशा में 13 स्थानों पर पारा 10 डिग्री से नीचे

आईएमडी के अनुसार, ओडिशा में 13 स्थानों पर न्यूनतम तापमान 10 डिग्री से नीचे रहा। विभाग ने कहा कि नव वर्ष तक न्यूनतम तापमान में खास बदलाव नहीं होगा। तटीय क्षेत्र के स्थानों पर तापमान 10 डिग्री से ऊपर रहा, वहीं दक्षिणी और पश्चिमी जिले शीत लहर की चपेट में रहे।

पंजाब-हरियाणा में कड़ाके की ठंड, कोहरे से दृश्यता घटी

पंजाब और हरियाणा में भीषण ठंड से कोई राहत नहीं है और सोमवार को दोनों राज्यों में घना कोहरा छाया रहा, जिससे दृश्यता रही। हरियाणा का हिसार सबसे ठंडा रहा, जहां तापमान 2.1 डिग्री रहा। अंबाला में 2 और करनाल में 8.6, नारनौल में 4, रोहतक में 7.2, भिवानी में 5.5 डिग्री न्यूनतम तापमान रहा। पंजाब के अमृतसर, लुधियाना, पटियाला, पठानकोट, मोहाली और हरियाणा के अंबाला, हिसार और रोहतक सहित कई इलाकों में घना कोहरा देखा गया। मौसम विभाग के अनुसार पंजाब और हरियाणा के कई स्थानों पर दृश्यता 50 मीटर से भी कम रही। चंडीगढ़ में न्यूनतम तापमान 7.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

तुर्किये में आईएस के छह आतंकियों को मार गिराया

अंकारा, एजेंसी

- मुठभेड़ में पुलिस के तीन अधिकारियों की भी मौत

तुर्किये के गृह मंत्री ने बताया कि उत्तर-पश्चिमी हिस्से में सोमवार को हुई एक मुठभेड़ में इस्लामिक स्टेट के छह आतंकवादियों और पुलिस के तीन अधिकारियों की मौत हो गयी। अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में कम से कम पुलिस के आठ अन्य अधिकारी और एक गार्ड घायल भी हो गया।

उन्होंने बताया कि यह मुठभेड़ सोमवार को इस्तांबुल के दक्षिण में स्थित यालोवा प्रांत के इल्माली जिले में उस समय हुई, जब पुलिस ने एक ऐसे घर में छापेमारी की जहां आतंकवादी छिपे हुए थे। पड़ोसी प्रांत बर्सा से विशेष बलों को अभियान में सहायता के लिए भेजा गया।

गृह मंत्री अली येरलिकाया ने कहा कि यालोवा में चलाया गया अभियान देश भर के 15 प्रांतों में आईएस संदिग्धों के खिलाफ चलाए गए एक साथ सौ से अधिक छापेमारी अभियान का हिस्सा था। येरलिकाया ने कहा कि यालोवा में अभियान 'अत्यंत सावधानी' से चलाया गया क्योंकि जिस घर में आतंकवादी छिपे थे, उसमें महिलाएं और बच्चे मौजूद थे। उन्होंने बताया कि सभी पांच महिलाओं और छह बच्चों को घर से सुरक्षित निकाल लिया गया। सभी आतंकवादी तुर्किये के नागरिक थे।

श्रीलंका ने चीन से मांगी मदद

कोलंबो। श्रीलंका ने सोमवार को चीन से चक्रवात दित्वा के कारण क्षतिग्रस्त हो गए पुलों और रेलवे पटरियों के पुनर्निर्माण के लिए चीन से तत्काल सहायता की मांग की। नवंबर में चक्रवात के कारण इस द्वीपीय देश में व्यापक बाढ़ आयी, भूस्खलन हुए और बुनियादी ढांचे का गंभीर रूप से विनाश हुआ। देश की आपदा-कार्रवाई क्षमता पर भारी दबाव पड़ा। श्रीलंका के विदेश मंत्री विजिथा हेराथ ने चीनी राजदूत क्वी झेनहोंग से भेंटकर चक्रवात से क्षतिग्रस्त हुए पुलों और रेल पटरियों के पुनर्निर्माण में तत्काल सहायता देने का अनुरोध किया। विदेश मंत्रालय ने कहा कि हेराथ ने चीन से इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग पॉइंट स्थापित करने का भी आग्रह किया।

सुप्रीम कोर्ट ने कई फैसलों को पलटा

सोमवार का दिन न्यायपालिका के इतिहास में एक और ऐसे दिन के रूप में दर्ज हुआ, जब देश की सर्वोच्च अदालत ने बेहद महत्वपूर्ण मामले में दिए गए हाईकोर्ट के एक फैसले पर रोक लगा दी। उन्नाव दुष्कर्म मामले में भाजपा के पूर्व विधायक की सजा निलंबित करने और जमानत पर रिहा करने का यह आदेश पूरे देश में चर्चा में था और दिल्ली में कई दिन से इसके खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया जा रहा था। हाईकोर्ट का यह कोई पहला फैसला नहीं था, जिसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई और जिसे पलट दिया गया। इतिहास में विभिन्न उच्च न्यायालयों के तमाम ऐसे फैसले दर्ज हैं जिन पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक ही नहीं लगाई है बल्कि सख्त टिप्पणियां भी की हैं। देखा जाए तो यही न्यायपालिका पर देश के लोगों का भरोसा बनाए रखने की सर्वोत्कृष्ट प्रक्रिया है।

न्याय पर कायम भरोसा

अपने फैसलों को भी बदला

- सुप्रीम कोर्ट ने अपने कई फैसले को बदला जिनमें 1950 का एके गोपालन बनाम मद्रास राज्य के फैसले को मेनका गांधी बनाम भारत संघ (1978) के मामले में पलट दिया गया। पहले मौलिक अधिकारों को अलग-अलग माना गया था बाद में बाद में कहा गया कि अनुच्छेद 14, 19 और 21 आपस में जुड़े हैं। एडीएम जबलपुर बनाम शिवकांत शुक्ला (1976) के मामले में दिए गए फैसले को 2017 के केएस. पुट्टस्वामी वाद में पलट दिया गया। पहले आपातकाल में जीवन व स्वतंत्रता निलंबित मानी गई जिसे सुप्रीम कोर्ट ने निजता के अधिकार को मौलिक मानते हुए उक्त फैसले को गलत बताया।

पांच बड़े फैसले जिसे सुप्रीम कोर्ट ने पलटा

- **सबरीमला मंदिर मामला** : 1991 को केरल हाईकोर्ट को यह मामला 2018 में सुप्रीम कोर्ट में पेश हुआ। हाईकोर्ट ने 10-50 वर्ष की महिलाओं के मंदिर में प्रवेश पर प्रतिबंध को सही माना था। सुप्रीम कोर्ट ने फैसले को पलटते हुए कहा कि महिलाओं का प्रवेश संवैधानिक अधिकार है। कहा कि धार्मिक परंपराएं मौलिक अधिकारों से ऊपर नहीं हो सकतीं।
- **नाज फाउंडेशन केस** : दिल्ली हाईकोर्ट 2009 में यह मामला पेश हुआ जिस पर 2013 और 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की। हाईकोर्ट ने अपने निर्णय में समलैंगिक संबंधों को अपराध से बाहर किया था। 2013 में पेश इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने फैसले को पलट दिया जबकि 2018 में दुबारा पेश इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने यौनिक अल्पसंख्यकों की गरिमा व निजता का अधिकार मानते हुए समलैंगिक संबंधों को अपराध से बाहर माना।
- **राम जन्मभूमि-बाबरी मामला** : इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 2010 में विवादित भूमि को तीन भागों में बांटने का आदेश दिया था। जिसके बाद मामला 2019 में सुप्रीम कोर्ट पहुंचा, सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के फैसले को पलटते हुए भूमि के बंटवारे को असंवैधानिक बताया।
- **सहारा-सेबी मामला** : इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 2011 में दाखिल इस मामले में सहारा की दलीलों को स्वीकार किया। सुप्रीम कोर्ट 2012 में हाईकोर्ट के फैसले को पलटते हुए कहा कि सेबी की शक्तियों की व्यापक मान्यता है और सहारा को निवेशकों का पैसा लौटाने का आदेश पारित किया।
- **जेसिका लाल मर्डर केस** : दिल्ली हाईकोर्ट ने 2006 में इस केस के आरोपी को बरी कर दिया था। 2010 में सुप्रीम कोर्ट अपीली हुई तो कोर्ट ने आरोपी को दोषी ठहराते हुए कहा कि परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर सजा संभव।

वर्ल्ड ब्रीफ

उत्तर कोरिया ने किया मिसाइलों का परीक्षण

सियोल। उत्तर कोरिया ने सोमवार को कहा कि उसने लंबी दूरी की क्रूज मिसाइलों का परीक्षण किया है। रविवार को किया गया यह परीक्षण अगले साल की शुरुआत में होने वाले सत्तारूढ़ वर्कर्स पार्टी के अधिवेशन से पहले उत्तर कोरिया का नवीनतम शक्ति प्रदर्शन है। पांच साल में एक बार होने वाले इस सम्मेलन पर दुनिया की नजरें टिकी हैं, जहां उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन अमेरिका के साथ संबंधों को लेकर नई प्राथमिकताओं को स्पष्ट कर सकते हैं। कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी के अनुसार, किम ने रविवार को पश्चिमी तट से किए गए इन परीक्षणों पर संतोष व्यक्त किया।

रहमान ने दाखिल किया नामांकन पत्र

ढाका। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान ने आगामी चुनाव के लिए सोमवार को अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। डेली स्टार की खबर के अनुसार, नामांकन पत्र सोमवार को दोपहर करीब 12 बजे सेगुनबगीचा स्थित ढाका संभागीय आयुक्त कार्यालय में दाखिल किए गए। बीएनपी अध्यक्ष के सलाहकार अब्दस सलाम ने डॉक्टर्स एसोसिएशन ऑफ बांग्लादेश के मुख्य सलाहकार प्रोफेसर डॉ. फरहाद हलीम डोनर के साथ रहमान की ओर से नामांकन प्रस्तुत किया।

सिंगापुर में हिंदुओं को अनुष्ठान की सुविधा

सिंगापुर। सिंगापुर के हिंदू समुदाय के सदस्यों के लिए मृत्यु के बाद के अनुष्ठानों के लिए सोमवार को चांगी बीच पर एक नई सुविधा शुरू की गई। पांच साल पहले घोषित किया गया कर्मा कारिया निलयम (चार निजी हॉल वाली एक मंजिला इमारत) सिंगापुर के पूर्वी समुद्र तट पर स्थित है। सरकार के स्वामित्व वाले हिंदू धर्मस्व बोर्ड (एचईबी) ने कहा कि परिवार अंतिम संस्कार के 13वें या 16वें दिन अपने दिवंगत प्रियजनों के लिए समुद्र तट पर अनुष्ठान करने के लिए सुविधा केंद्र में 50 सिंगापुर डॉलर शुल्क देकर निजी हॉल ऑनलाइन बुक कर सकते हैं।

कैलिफोर्निया में 5.0 तीव्रता का भूकंप

बीजिंग। कैलिफोर्निया के सुसानविले से 15 किमी उत्तर-उत्तर पश्चिम में सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय समयानुसार 0041 बजे 5.0 तीव्रता वाले भूकंप के झटके महसूस किए गए। यह जानकारी अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने दी। भूकंप का केंद्र 5.4 किलोमीटर की गहराई में 40.54 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 120.69 डिग्री पश्चिम में था।

शांति समझौते को यूक्रेन से वार्ता में प्रगति, कुछ जटिल मुद्दे अभी बाकी

ट्रंप और जेलेंस्की के बीच वार्ता में 20 सूत्रीय योजना के अधिकांश मुद्दों पर सहमति

- युद्ध की समाप्ति को अगले सप्ताह यूक्रेन में मिलेंगे दोनों देशों के दल

फ्लोरिडा, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने यूक्रेन के राष्ट्रपति ब्लादिमिर जेलेंस्की के साथ बैठक के बाद कहा कि फ्लोरिडा वार्ता के दौरान यूक्रेन-रूस युद्ध को समाप्त करने की दिशा में प्रगति हुई है, दोनों देश शांति समझौते के काफी करीब पहुंच गए हैं लेकिन एक या दो बहुत जटिल मुद्दों को सुलझाना अभी भी बाकी है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि मुख्य सवाल टकराव वाले क्षेत्रों (जमीन) को लेकर था। रूस ने पहले मांग की है कि यूक्रेन उसे और अधिक जमीन सौंप दे। जेलेंस्की ने फ्लोरिडा के मार-ए-लागो में पत्रकारों से कहा कि वे 20 सूत्रीय शांति योजना के 90 प्रतिशत हिस्से पर समझौते पर पहुंच गए हैं, वहीं ट्रंप ने कहा कि यूक्रेन के लिए सुरक्षा गारंटी का काम लगभग 95 प्रतिशत पूरा हो गया है।

जेलेंस्की ने कहा कि अमेरिका और यूक्रेन के दल चार साल से चल रहे युद्ध को समाप्त करने के उद्देश्य से बातचीत करने के लिए अगले सप्ताह यूक्रेन में मिलेंगे। यूक्रेनी राष्ट्रपति ने बाद में टेलीग्राम एप पर एक बयान में कहा, हमने सभी मुद्दों पर सार्थक बातचीत की और हम पिछले हफ्तों में यूक्रेनी और अमेरिकी दलों द्वारा की गई प्रगति को बहुत महत्व देते हैं। रूस ने फरवरी 2022 में यूक्रेन पर आक्रमण शुरू किया था, और रूस ने इस समय यूक्रेनी क्षेत्र के लगभग 20 प्रतिशत हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया है। ट्रंप ने कहा कि पूर्वी यूक्रेन के डोनबास क्षेत्र, जिस पर रूस का काफी हद तक नियंत्रण है, उसे विसैन्यीकृत क्षेत्र में बदलने का प्रस्ताव अनसुलझा बना हुआ है। उन्होंने कहा कि उस जमीन का कुछ हिस्सा ले लिया गया है। उस जमीन का कुछ हिस्सा शायद हासिल किया जा सकता है, लेकिन इस पर अगले कुछ महीनों की अवधि में कब्जा भी किया जा सकता है।

रूस ने इस समय डोनेत्स्क क्षेत्र के लगभग 75 प्रतिशत और पड़ोसी लुहान्स्क के लगभग 99 प्रतिशत हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया है। इन क्षेत्रों को सामूहिक रूप से डोनबास के रूप में जाना जाता है। रूस चाहता है कि यूक्रेन डोनबास के उस छोटे से हिस्से से पीछे हट जाए जो अभी उसके कब्जे में है, जबकि यूक्रेन ने जोर देकर कहा है कि यह क्षेत्र एक मुक्त आर्थिक क्षेत्र बन सकता है जिसकी निगरानी यूक्रेनी बल करेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति ने खोए हुए यूक्रेनी क्षेत्रों पर बार-बार अपना रुख बदला है। उन्होंने सितंबर में यह सुझाव देकर पर्यवेक्षकों को चौंका दिया था कि यूक्रेन इसे वापस लेने में सक्षम हो सकता है। बाद में उन्होंने अपना रुख बदल लिया। ट्रंप ने कहा कि यह एक बहुत ही कठिन मुद्दा है।

रूस-यूक्रेन के बीच शांति समझौते की वार्ता के बाद हाथ मिलाते अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और यूक्रेन के उनके समकक्ष ब्लादिमिर जेलेंस्की।

संरा को दो अरब डॉलर की मदद देगा अमेरिका

जिनेवा। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन की ओर से अमेरिकी विदेशी सहायता में कटौती करने और नई आर्थिक परिस्थितियों में संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों को ढलने, खुद को सीमित करने की चेतावनी दिए जाने के बीच सोमवार को संयुक्त राष्ट्र के मानवीय सहायता कार्यक्रमों के लिए दो अरब डॉलर देने की घोषणा की गई।

यूक्रेन का पुतिन के आवास पर 91 ड्रोन से हमला, रूस ने सभी मार गिराए

मॉस्को। रूस ने सोमवार को दावा किया कि लंबी दूरी के 91 यूक्रेनी ड्रोन ने मॉस्को के उत्तर में नोवगोरोड क्षेत्र में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के स्थायी आवास पर हमला करने का प्रयास किया। विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि रविवार और सोमवार की दरमियानी रात को हुए ड्रोन हमले में कोई नुकसान नहीं हुआ क्योंकि ड्रोन को मार गिराया गया था। हालांकि, उन्होंने चेतावनी दी कि रूस उचित समय पर जवाबी कार्रवाई करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। लावरोव ने यूक्रेनी हमलों को कीव और उसके सहयोगियों द्वारा शांति वार्ता को विफल करने का प्रयास बताया। उन्होंने कहा कि मॉस्को यूक्रेन के साथ शांति वार्ता पर अपना रुख बदलेगा, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की टीम के साथ शांति वार्ता जारी रहेगी।

इंडोनेशिया में वृद्ध आश्रम में आग से 16 बुजुर्गों की मौत

- भीषण आग में 15 लोग जिंदा जले, एक पीड़ित का शव मिला

मनाडो। इंडोनेशिया के एक वृद्धाश्रम में रविवार शाम को आग लगने से 16 बुजुर्गों की मौत हो गई। पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि इंडोनेशिया के उत्तरी सुलावेसी प्रांत के मनाडो में स्थित इस एक मंजिला इमारत में आग उस समय लगी, जब वहां रहने वाले लोग सो रहे थे। उत्तरी सुलावेसी पुलिस के प्रवक्ता आलमस्याह हसीबुआन ने कहाकि जमीनी स्तर पर काम कर रही टीम ने पुष्टि की है कि मरने वालों की संख्या वर्तमान में 16 है। इनमें से 15 लोग जिंदा जल गए, एक पीड़ित का शव मिला है।

हसीबुआन ने बताया कि घटना में 15 लोग सुरक्षित बच गए हैं, जो मनाडो के दो अस्पतालों उपचाराधीन हैं। अधिकारियों के अनुसार, शवों को पहचान के लिए अस्पताल ले जाया गया है, जहां परिजनों की मदद ली जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि स्थानीय निवासियों द्वारा आपातकालीन सेवाओं को सूचना दिए जाने के बाद, दमकल के छह वाहनों को आग बुझाने में दो घंटे से अधिक का समय लगा। प्रारंभिक पुलिस रिपोर्ट में आग का कारण बिजली से संबंधित गड़बड़ी को बताया गया था, लेकिन अधिकारियों ने बाद में कहा कि आग लगने के कारणों की अभी जांच की जा रही है।

जापान से तनाव के बीच चीन ने ताइवान जलडमरूमध्य में शुरू किया सैन्य अभ्यास

बीजिंग, एजेंसी

- चीन ताइवान पर अधिकार जताता है, जापान का विरोध

जापान के साथ बढ़ते कूटनीतिक तनाव के बीच चीन की सेना ने ताइवान जलडमरूमध्य के मध्य क्षेत्रों में नए युद्धाभ्यास सोमवार को शुरू कर दिए हैं। चीन ताइवान पर अपना अधिकार जताता है और इसको लेकर चीन तथा जापान के बीच तनाव है। सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ में कहा गया है कि चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) की पूर्वी थिएटर कमान सोमवार को ताइवान जलडमरूमध्य के मध्य क्षेत्रों में जल और हवाई क्षेत्र में अभ्यास करने के लिए लड़ाकू विमानों, बमवर्षकों और मानवरहित हवाई वाहनों (यूएवी) के साथ समन्वय कर रही है।

सरकारी समाचार एजेंसी में कहा गया है कि इन युद्धाभ्यासों का मकसद जमीनी लक्ष्यों को निशाना बनाने और प्रमुख लक्ष्यों पर सटीक हमले करने की सैनिकों की क्षमताओं का परीक्षण करना है। चीन, ताइवान को अपनी मुख्यभूमि का हिस्सा मानता है और इसे अपने साथ मिलाने की कोशिशें करता है, हालांकि ताइवान खुद को स्वतंत्र रूप से शासित मानता है। इन युद्धाभ्यासों में लड़ाकू विमान, लंबी दूरी के रॉकेट और यूएवी का उपयोग किया जाएगा। यह युद्धाभ्यास ऐसे समय में हो रहे हैं जब अमेरिका ने ताइपे को रिकॉर्ड 11.1 अरब डॉलर का हथियार पैकेज मंजूर किया है, जिसकी चीन ने कड़ी आलोचना की। इसके साथ ही ताइवान को लेकर जापान के साथ भी कूटनीतिक तनाव बढ़ गए हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ताइवान के लिए 11.1 अरब अमेरिकी डॉलर के हथियार पैकेज को मंजूरी दे दी है, जिसे अगर अमेरिकी कांग्रेस द्वारा मंजूरी मिल जाती है, तो यह द्वीप को वाशिंगटन की अब तक की सबसे बड़ी हथियार बिक्री होगी।

ताइवान ने की सैन्य अभ्यास की निंदा

ताइपे। ताइवान ने सोमवार को द्वीप के आसपास चीन द्वारा किए जा रहे संयुक्त सैन्य अभ्यास की निंदा की और कहा कि यह अंतर्राष्ट्रीय नियमों की अवहेलना तथा पड़ोसी देशों को धमकाने की कार्रवाई है। ताइवानी रक्षा मंत्रालय ने सोमवार को एक्स पर लिखा कि जवाबी अभ्यास किया जा रहा है और द्वीप की रक्षा के लिए सेनाएं हाई अलर्ट पर हैं। मंत्रालय ने कहा कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के लक्षित सैन्य अभ्यासों से यह और पुष्ट होता है कि वह एक आक्रामक देश है और शांति का सबसे बड़ा दुश्मन है। सोमवार के अभ्यासों ने दोनों पक्षों के बीच तनाव बढ़ा दिया। ताइवान ने कहा कि संबंधित चीनी अभियान ताइवान जलडमरूमध्य और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता एवं सुरक्षा को कमजोर कर रहा है।

सिंगापुर में 14 को होगी गायक जुबिन मामले में सुनवाई

सिंगापुर। लोकप्रिय भारतीय गायक-गीतकार जुबिन गर्ग की मौत मामले की कोरोनर जांच 14 जनवरी को सिंगापुर में होगी। अदालत के रिकॉर्ड में यह जानकारी दी गई। कोरोनर जांच एक तथ्य-खोज प्रक्रिया है जिसका नेतृत्व एक न्यायिक अधिकारी कोरोनर द्वारा किया जाता है ताकि यह स्थापित किया जा सके कि किसी व्यक्ति की मौत कैसे, कब और कहां हुई। सुनवाई स्टेट कोर्ट्स में होगी। इससे पहले पुलिस ने कहा था कि उनके निष्कर्ष जांच के लिए स्टेट कोरोनर एडम नखोदा को सौंपे जाएंगे।

मेक्सिको में ट्रेन पटरी से उतरी, 13 लोगों की मौत

मेक्सिको सिटी, एजेंसी

- इंटरओशनिक ट्रेन हादसे में 98 यात्री घायल

प्रशांत महासागर को मेक्सिको की खाड़ी से जोड़ने वाली रेल लाइन पर रविवार को एक ट्रेन के पटरी से उतर जाने से 13 लोगों की मौत हो गई और 98 घायल हो गए। राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबॉम ने यह जानकारी दी।

ओआक्साका और वेराक्रूज राज्यों को जोड़ने वाली इंटरओशनिक ट्रेन निजांडा कस्बे के पास एक मोड़ से गुजरते समय पटरी से उतर गई। इस हादसे के बाद रेल लाइन पर यातायात ठप हो गया। शिनबॉम ने एक्स पर लिखा कि मेक्सिको की नौसेना ने मुझे सूचित किया है कि इंटरओशनिक ट्रेन हादसे में दुर्भाग्य से 13 लोग मारे गए हैं। उन्होंने बताया कि 98 लोग घायल हुए हैं, जिनमें से पांच की हालत गंभीर है। राष्ट्रपति ने कहा कि उन्होंने नौसेना सचिव और गृह मंत्रालय में मानवाधिकार मामलों के उपसचिव को घटनास्थल पर जाकर प्रभावित परिवारों की मदद का निर्देश दिया है। ट्रेन में 250 लोग सवार थे।

दो हेलीकॉप्टर हवा में टकराए, एक पायलट की मौत

हैमोंटन। अमेरिका के न्यू जर्सी में रविवार को हवा में दो हेलीकॉप्टर (चॉपर) के आपस में टकराने से एक पायलट की मौत हो गई और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया। हैमोंटन पुलिस प्रमुख केविन फ्रियल ने बताया कि बचाव दल को पूर्वाह्न करीब 11:25 बजे विमान दुर्घटना की सूचना मिली। संघीय विमानन प्रशासन के अनुसार, हैमोंटन म्यूनिसिपल एयरपोर्ट के ऊपर एनस्ट्रोम एफ-28ए और एनस्ट्रोम 280सी हेलीकॉप्टर आपस में टकरा गए।

सीजेआई बन महिला से 3.71 करोड़ ठगे

मुंबई, एजेंसी

- मुंबई पुलिस ने एक साइबर ठग को किया गिरफ्तार

मुंबई की एक बुजुर्ग महिला से साइबर ठगों ने कथित तौर पर पूर्व प्रधान न्यायाधीश चंद्रचूड़ और अन्य अधिकारी बनकर 3.71 करोड़ रुपये ठग लिए। इस मामले से जुड़े एक व्यक्ति को गुजरात से गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस के एक अधिकारी ने सोमवार को बताया कि महिला (68) को धन शोधन के मामले में डिजिटल अरेस्ट किए जाने के बाद उससे ठगी की गई रकम का बड़ा हिस्सा उस व्यक्ति ने अपने बैंक खाते में जमा करवाया था। यह घटना 18 अगस्त से 13 अक्टूबर के बीच हुई। अधिकारी ने बताया कि 18 अगस्त को महिला से एक व्यक्ति ने फोन में दावा किया कि वह कोलाबा थाने से बात कर रहा है और महिला के बैंक खाते का इस्तेमाल धन शोधन के लिए किया जा रहा है। उसने सीबीआई को जांच सौंपे जाने का दावा करते हुए उसके बैंक विवरण मांगे। आरोपी ने अधिकारी बनकर पीड़िता से उसके जीवन पर दो-तीन पन्नों का निबंध भी लिखवाया। इसके बाद उसने महिला से कहा कि वह उसके निर्दोष होने की बात से सहमत है और यह सुनिश्चित करेगा कि उसे जमानत मिल जाए।

इसके बाद साइबर अपराधियों ने उसे वीडियो कॉल के माध्यम से अदालत कक्ष में एक ऐसे व्यक्ति के सामने पेश किया जिसने खुद को न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ बताया। उससे उसके निवेश के सत्यापन के लिए ब्यौरा मांगा गया और इसके बाद पीड़िता ने दो महीने की अवधि में कई बैंक खातों में 3.75 करोड़ रुपये अंतरित कर दिए।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 30 दिसंबर, मंगलवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- पौष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, दशमी 07.50 तक तत्पश्चात एकादशी 31 दिसंबर 05.00 तक तत्पश्चात द्वादशी।

आज का पंचांग

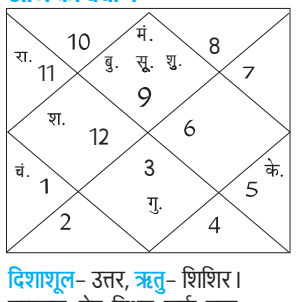

दिशाशूल- उत्तर, ऋतु- शिशिर।
चन्द्रबल-मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र-भरणी 31 दिसंबर 03.58 तक तत्पश्चात कृत्तिका।

मेष – आज जीवनसाथी के साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। धर्म-कर्म में आप काफी सक्रिय हो सकते हैं। आर्थिक उलझनों का निवारण हो सकता है। आपकी इच्छाओं के पूरा होने के योग बन रहे हैं। मित्र आपकी सहायता करने का प्रयास करेंगे।

वृष – आज दिन की शुरुआत कुछ नकारात्मक रहेगी। मन में अप्राकृतिक और अव्यवहारिक विचारों का जमावड़ा लगा रहेगा। पिता से झगड़ा हो सकता है। किसी महत्वपूर्ण काम में हाथ न डालें। प्रेम संबंधों को लेकर भावुक हो सकते हैं।

मिथुन – आज मार्केटिंग से जुड़े कारोबार में उत्तम प्रगति होगी। प्रेम संबंध को वैवाहिक स्वरूप भी दे सकते हैं। आपके विरोधी भी आपकी प्रशंसा करेंगे। अपने परिजन व दोस्तों के साथ समय बिताएं। विद्यार्थियों को किसी उपलब्धि के लिए सम्मान मिल सकता है।

कर्क – आज आप अपने परिजनों के साथ समय बिताना काफी पसंद करेंगे। यात्रा काफी शुभ व मंगलमय रहने वाली है। आपके व्यवहार व सिद्धांतों से कई लोग प्रभावित रहने वाले हैं। होटल कारोबारियों की आय में वृद्धि होगी।

सिंह – आज दिन की शुरुआत बहुत अच्छी रहेगी। उच्च शिक्षा में बड़ा शानदार प्रदर्शन करेंगे। दोपहर के बाद काम तेजी से गति पकड़ेंगे। धर्म-कर्म में आप रुचि ले सकते हैं। सेहत में आ रही परेशानियों से राहत मिलेगी।

कन्या – आज किसी से व्यर्थ में न उलझे। दूसरों के काम में हस्तक्षेप करना उचित नहीं है। अपना चरित्र अच्छा रखें। विवाह सुख में कुछ न्यूनता रहेगी। आकस्मिक धन हानि होने के योग बन रहे हैं। व्यस्तता के बावजूद अपने काम पर ध्यान दें।

तुला – आज करियर में आपको बड़े मौके मिल सकते हैं। व्यवसाय में बड़ा लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। दांपत्य सुख का भरपूर आनंद लेंगे। आप काफी रोमांटिक मूड में रहने वाले हैं। दोस्तों के साथ मौज-मस्ती भरा समय बिताएंगे।

वृश्चिक – आज आलस्य के कारण महत्वपूर्ण काम अटक सकते हैं। ननिहाल पक्ष में किसी परिजन का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। आप प्रतिस्पर्धियों के सामने बचाव के मूड में रहेंगे। आप कुछ प्रभावशाली लोगों के व्यक्तित्व और उनकी सफलता से काफी प्रेरित रहेंगे।

धनु – आज महत्वपूर्ण व्यापारिक संबंध बन सकते हैं। प्रेमी जन के साथ कहीं घूमने जा सकते हैं। कार्यक्षेत्र में अधिकारियों का व्यवहार आपको दुखी कर सकता है। पिता के साथ अपने संबंध अच्छे रखें। संतान की उन्नति से आपको प्रसन्नता होगी।

मकर – आज यात्राओं के लिए दिन शुभ नहीं है। निजी संबंधों में कुछ न्यूनता महसूस होगी। अपनी जीवनशैली पर ध्यान अवश्य दें। आप थोड़े अव्यवहारिक हो सकते हैं। स्वादिष्ट भोजन व मंहगे उत्पादों का प्रयोग आपको मानसिक संतोष की अनुभूति कराएगा।

कुंभ – आज आप अपने कुशल वाक् चातुर्य से महत्वपूर्ण परिस्थितियों को अपने पक्ष में कर लेंगे। किसी उत्सव में सम्मिलित होने का निमंत्रण मिल सकता है। अधिकारियों के साथ वेतन बढ़ाने को लेकर चर्चा कर सकते हैं। रोगों से छुटकारा मिलेगा।

मीन – आज जल्दबाजी में कोई बड़ा निवेश न करें। अधिकारी वर्ग आपके काम में कमी निकाल सकते हैं। आपको स्वास्थ्य में काफी ध्यान देना चाहिए। आय के स्रोतों में कमी या सकती है। अनुपयोगी गतिविधियों में अपना समय बर्बाद न करें।

सुडोकू -17

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

4	6					5		2
			8				1	
	9	2			7		3	
2	4			5		7	9	
		9				8		
	7	3		1			5	4
	5		6			2	8	
	2				3			
6		1					4	9

सुडोकू - 16 का हल

5	2	7	8	9	6	1	4	3
3	1	8	4	5	7	2	6	9
6	9	4	1	3	2	8	7	5
9	3	5	6	2	4	7	8	1
8	4	1	3	7	9	5	2	6
7	6	2	5	1	8	3	9	4
2	8	3	9	6	1	4	5	7
4	5	6	7	8	3	9	1	2
1	7	9	2	4	5	6	3	8

बिहार में खेल प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है और बेहतर प्रशिक्षण के जरिए यहां से भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार किए जा सकते हैं। राज्य में आधारभूत संसाधन मौजूद हैं और सही मार्गदर्शन से खिलाड़ी वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना सकते हैं।
-साइना नेहवाल

स्टेडियम

बरेली, मंगलवार, 30 दिसंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

चौथे एशेज टेस्ट की पिच को आईसीसी ने 'असंतोषजनक' कहा

दुबई। आईसीसी ने मेलबर्न में इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच खेले गए चौथे एशेज टेस्ट की पिच को सोमवार को असंतोषजनक करार दिया और एमसीजी पर एक डिमेरिट अंक भी लगा दिया। मैच रैफरी जैफ क्रो ने अपनी समीक्षा रिपोर्ट में कहा था कि पिच गेंदबाजों की जरूरत से ज्यादा मदद कर रही थी। चौथे टेस्ट के पहले दिन 20 विकेट गिरे। इंग्लैंड ने दो दिन के भीतर टेस्ट जीत लिया था। आईसीसी ने एक बयान में कहा चौथे एशेज टेस्ट के लिये मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड की पिच असंतोषजनक थी जिसके लिये आईसीसी पिच और आउटफील्ड मॉनिटरिंग प्रक्रिया के तहत एमसीजी पर एक डिमेरिट अंक लगाया गया है। छह डिमेरिट अंक होने पर मैदान पर एक साल तक का प्रतिबंध लग सकता है।

आईजी इनडोर स्टेडियम में होगा इंडिया ओपन

नई दिल्ली। बीडब्ल्यूएफ इंडिया ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन केडी जाधव इनडोर हॉल की जगह इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में 13 से 18 जनवरी तक होगा। भारत को अगले साल अगस्त में प्रतिष्ठित विश्व चैंपियनशिप की मेजबानी करनी है और ऐसे में नौ लाख 50 हजार डॉलर इनामी इंडिया ओपन इस वैश्विक टूर्नामेंट के परीक्षण स्थल के रूप में काम करेगा। नए स्थल में आठ हजार से अधिक दर्शकों के बैठने की क्षमता है जो पिछले स्थल की तुलना में दोगुने से अधिक है। इंडिया ओपन के टिकट ऑनलाइन 'टिकमिंट' पर उपलब्ध होंगे जिनकी कीमत 400 रुपये से शुरू होकर 1750 रुपये तक होगी। बैडमिंटन विश्व महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) के तत्वावधन में भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) द्वारा आयोजित इस सुपर 750 टूर्नामेंट के दौरान एक बार फिर भारतीय सरजमीं पर दुनिया भर के शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ी चुनौती पेश करते हुए नजर आएंगे।

ध्रुव जुरेल का ताबड़तोड नाबाद शतक यूपी ने बड़ौदा को 54 रनों से हराया

विजय हजारे ट्रॉफी : ग्रुप बी के मुकाबले में कप्तान रिंकू सिंह ने भी 63 रन जड़े

राजकोट, एजेंसी

युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज ध्रुव जुरेल (नाबाद 160) की आक्रामक नाबाद शतकीय पारी के बूते उत्तर प्रदेश ने विजय हजारे वनडे ट्रॉफी के ग्रुप बी मैच में सोमवार को यहां बड़ौदा को 54 रन से शिकस्त दी। जुरेल ने 101 गेंद की नाबाद पारी में 15 चौके और आठ छक्कों के साथ भारत की टी20 विश्व कप टीम में चयन न होने की निराशा को कम किया। उन्हें रिंकू सिंह (67 गेंद में 63) और प्रशांत वीर (23 गेंद में 35) का अच्छा साथ मिला।

उत्तर प्रदेश ने सात विकेट पर 369 रन बनाने के बाद बड़ौदा की पारी को आखिरी गेंद पर 315 रन पर समेट दिया। इस जीत से टीम तीन मैचों में 12 अंक के साथ तालिका में शीर्ष पर पहुंच गयी जबकि जम्मू कश्मीर, विदर्भ, बड़ौदा और बंगाल की टीमों के नाम आठ-आठ अंक हैं। सलामी बल्लेबाज और पिछले मैच के शतकवीर आर्यन जुयाल (26) के आउट होने के बाद बल्लेबाजी करने आए जुरेल ने रिंकू के साथ चौथे विकेट के लिए 131 रन की साझेदारी की।

19वें ओवर में 92 रन पर तीसरा विकेट गंवाने के बाद क्रीज पर आये रिंकू ने इस दौरान काफी सजगता के साथ बल्लेबाजी की। जुरेल ने निचले क्रम के बल्लेबाज प्रशांत के साथ मिलकर छठे विकेट के लिए 122 रन की साझेदारी कर उत्तर प्रदेश को बड़े स्कोर तक पहुंचा दिया। युवा तेज गेंदबाज राज लिंबानी ने 74 रन देकर चार विकेट लिये जबकि रासिख डार ने अपने 10 ओवर में 102 रन लुटाये। सलामी बल्लेबाज शाश्वत रावत (60) और शिवालिक शर्मा (30) ने बड़ौदा को अच्छी शुरुआत दिलाई, लेकिन जितेश शर्मा और प्रियांशु मौलिया के जल्दी आउट होने से उनकी रफ्तार धीमी पड़ गई। जिशान अंसारी (53 रन पर तीन विकेट), समीर रिजवी (2/43) और विपराज निगम (67 रन पर दो विकेट) की स्पिन गेंदबाजों की तिकड़ी ने आपस में सात विकेट साझा कर बड़ौदा पर शिकंजा कसे रखा।

कृणाल पंड्या (77 गेंदों पर 82 रन) ने क्रीज पर रहते हुए कुछ उम्मीद जगाए रखी लेकिन 43वें ओवर में उनके आउट होने से बड़ौदा की हार तय हो गई।

ध्रुव जुरेल।

160* रन **101** गेंद **15** चौके **08** छक्के

बंगाल ने चंडीगढ़ को छह विकेट से हराया

ग्रुप के अन्य मैच में भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने 69 रन पर तीन विकेट जबकि मुकेश कुमार ने 59 रन पर पांच विकेट लिये जिससे बंगाल ने चंडीगढ़ को 14 गेंद शेष रहते छह विकेट से हराया। मनन वोहरा की 122 रन की पारी के बावजूद चंडीगढ़ की टीम 48.2 ओवर में 319 रन पर आउट हो गयी। लक्ष्य का पीछा करते हुए अभिषेक पोरेल ने 84 गेंद में 106 रन की पारी से बंगाल पर दबाव हावी नहीं होने दिया। विदर्भ ने जम्मू-कश्मीर के खिलाफ 312 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए पांच विकेट से जीत दर्ज की। अमन मोखाडे (125 गेंदों पर 139 रन) और मध्यक्रम के बल्लेबाज रविकुमार समर्थ (108 गेंदों पर 114 रन) की शतकीय पारियों ने टीम का काम आसान कर दिया।

शार्दुल की गेंदबाजी से मुंबई ने छत्तीसगढ़ को रौंदा

जयपुर : कप्तान शार्दुल ठाकुर की शानदार गेंदबाजी से मुंबई ने विजय हजारे वनडे ट्रॉफी के ग्रुप सी मैच में सोमवार को यहां छत्तीसगढ़ को नौ विकेट से हराकर अपनी जीत की हैट्रिक पूरी की। टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला करने के बाद शार्दुल ने सुबह में तेज गेंदबाजों की मददगार परिस्थितियों का पूरा फायदा उठाते हुए पांच ओवर के अंदर छत्तीसगढ़ का स्कोर चार विकेट पर 10 रन कर दिया। कप्तान अमनदीप खरे (63) और अजय मंडल (46) के बीच पांचवें विकेट के लिए 105 रन की साझेदारी के बावजूद छत्तीसगढ़ की टीम शुरुआती झटकों से कभी नहीं उबर सकी। टीम 38.1 ओवर में 142 रन पर आउट हो गई। शार्दुल ने खेल के शुरुआती आधे घंटे में छत्तीसगढ़ के खिलाफ कहर बरपाया तो वहीं वामहस्त स्पिनर शम्स मुलानी ने आखिरी छह में से पांच विकेट झटक कर छत्तीसगढ़ की पारी को सस्ते में समेटने में योगदान दिया। मुलानी ने 31 रन देकर पांच विकेट लिये जिससे छत्तीसगढ़ ने अंतिम छह विकेट 27 रन के अंदर गंवा दिये। अंगकृष रघुवंशी (66 गेंदों पर 68 नाबाद) और अनुभवी सिद्धेश लाड (42 गेंदों पर 48 नाबाद) ने दूसरे विकेट के लिए 102 रन की अटूट साझेदारी कर महज 24 ओवरों में ही मुंबई को नौ विकेट से एकतरफा जीत दिला दी।

दिल्ली ने सौराष्ट्र को तीन विकेट से हराया

बेंगलुरु : सलामी बल्लेबाज प्रियांश आर्य और तेजस्वी दहिया के आक्रामक अर्धशतकों से दिल्ली ने सोमवार को यहां विजय हजारे ट्रॉफी एकदिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट के ग्रुप डी मैच में सौराष्ट्र को तीन विकेट से हरा दिया। विराट कोहली की गैरमौजूदगी में खेल रही दिल्ली की टीम ने 321 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए प्रियांश (78 रन, 45 गेंद) और तेजस्वी (53 रन, 51 गेंद) की पारियों की बदौलत 48.5 ओवर में सात विकेट गंवाकर लक्ष्य हासिल कर लिया। सौराष्ट्र ने इससे पहले सलामी बल्लेबाज विश्वराजसिंह जडेजा की 104 गेंद में 115 रन की पारी और रुचित अहीर 65 गेंद में 95 रन की पारी बदौलत 50 ओवर में सात विकेट पर 320 रन बनाए। कोहली ने पहले दो मैच में शतक और अर्धशतक जड़कर दिल्ली की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। वह बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में छह जनवरी को रेलवे के खिलाफ मैच में भी खेलेंगे। दिल्ली के कप्तान ऋषभ पंत हालांकि प्रभावित करने में नाकाम रहे और 26 गेंद में 22 रन बनाकर चिराग जानी की गेंद पर जय गोहिल को कैच दे बैठे। प्रियांश ने चेतन सकारिया की गेंद पर आउट होने से पहले आयुष दोसेजा के साथ दूसरे विकेट के लिए 66 रन की साझेदारी भी की। दिल्ली ने 13.2 ओवर में 115 रन पर दो विकेट गंवा दिया थे लेकिन नियमित अंतराल पर विकेट गंवाने के बावजूद रन गति को बनाए रखा। तेजस्वी ने पंत के साथ पांचवें विकेट के लिए 48 और हर्ष त्यागी के साथ छठे विकेट के लिए 40 रन की उपयोगी साझेदारियां की। त्यागी (45 गेंद) व नवदीप सैनी (नाबाद 34) ने साझेदारी कर दिल्ली के लिए चार अंक सुनिश्चित किए।

कोच अमोल मजूमदार व कप्तान हरमनप्रीत कौर। एजेंसी

भारतीय महिला टीम की नजरें क्लीन स्वीप पर

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी

- सांत्वना जीत हासिल करना चाहेगा श्रीलंका

भारतीय महिला क्रिकेट टीम अपने आक्रामक खेल को जारी रखते हुए श्रीलंका के खिलाफ मंगलवार को यहां होने वाले पांचवें और अंतिम महिला टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में जीत दर्ज करके पांच मैच की शृंखला में 5-0 से क्लीन स्वीप करने की कोशिश करेगी। यह शृंखला अगले साल जून-जुलाई में इंग्लैंड में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए भारत की तैयारियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

समय शाम 7:00 बजे से

श्रीलंका के खिलाफ वर्तमान शृंखला के बाद भारतीय टीम विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में तीन-तीन टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेलेगी। भारतीय टीम 2024 में टी20 विश्व कप में ग्रुप चरण से बाहर हो गई थी, लेकिन इसके बाद उसने अपनी शैली में बदलाव किया और अधिक आक्रामकता अपनाई जिससे उसे अनुकूल परिणाम मिले।

भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने कहा यह शृंखला हम सभी के लिए शानदार रही। पिछले विश्व कप के बाद हमने इसी बात पर चर्चा की थी कि हमें अपने स्तर को ऊपर उठाना होगा और टी20 में अधिक आक्रामक होकर खेलना होगा। शुरुआती तीन मैचों में भारतीय गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया जिससे बल्लेबाजों को बहुत कम मेहनत करनी पड़ी। इन मैच में हालांकि आक्रामक अंदाज में खेलने वाली शेफाली वर्मा ने प्रभावित किया है। भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय उसकी फील्डिंग है। वह अभी तक इस विभाग में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया है। पिछले मैच में भी उसने दो कैच छोड़े और स्टंपिंग का एक मौका गंवाया। भारतीय टीम के लिए इस शृंखला में कई सकारात्मक पहलू भी रहे। तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ठाकुर ने एक साल के अंतराल के बाद इस प्रारूप में सफल वापसी की, वहीं हमेशा भरोसेमंद रहने वाली दीप्ति शर्मा लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं।

वनडे सीरीज में पंड्या व बुमराह को दिया जा सकता है आराम

नई दिल्ली, एजेंसी

आगामी टी-20 विश्व कप को ध्यान में रखते हुए हार्दिक पंड्या और जसप्रीत बुमराह को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन वनडे मैचों के लिए आराम दिया जा सकता है।

टी-20 विश्व कप से पहले न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच अंतर्राष्ट्रीय टी-20 मैच नागपुर (21 जनवरी), रायपुर (23 जनवरी), गुवाहाटी (25 जनवरी), विशाखापत्तनम (28 जनवरी) और तिरुवनंतपुरम (31 जनवरी) में होंगे। ऐसा माना जा रहा है कि हार्दिक पंड्या और जसप्रीत बुमराह न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच मैचों की टी-20 सीरीज में वापसी करेंगे। इनसे पहले होने वाले तीन एकदिवसीय मैच 11 जनवरी (बड़ौदा), 14 जनवरी (राजकोट) और 18 जनवरी (इंदौर) को होंगे। इनमें बुमराह और पंड्या को शामिल किए जाने की संभावना कम है। एकदिवसीय टीम की घोषणा 4-5 जनवरी के आसपास होने की उम्मीद है। ऐसा समझा जा रहा है कि टीम प्रबंधन ने फैसला किया है कि टी-20 विश्व कप के लिए अहम इन दो खिलाड़ियों को एकदिवसीय टीम से बाहर रखा जाएगा।

हार्दिक पंड्या, जो सिर्फ सफेद गेंद क्रिकेट खेलते हैं, फिटनेस की दिक्कतों के कारण मार्च में चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल के बाद से कोई वनडे नहीं खेले हैं। जसप्रीत बुमराह, जिनके वर्कलोड पर टीम में उनकी अहमियत को देखते हुए करीब से नजर रखी जा रही है, 2023 विश्व कप फाइनल के बाद से वह किसी वनडे में नहीं खेले हैं। उम्मीद है कि पंड्या चल रहे विजय हजारे गेम्स में बड़ौदा के लिए खेलेंगे।

संभावना है कि वह घरेलू 50-ओवर के टूर्नामेंट में खेलेंगे ताकि वह बीसीसीआई के घरेलू खेल में अनिवार्य भागीदारी के फरमान का पालन कर सकें। रोहित शर्मा और विराट कोहली की तरह, जिन्होंने पहले दो खेल में मुंबई और दिल्ली के लिए खेला था, पंड्या बड़ौदा के लिए विजय हजारे ट्रॉफी के आखिरी तीन लीग मैचों में से दो में खेल सकते हैं, जो 3, 6 और 8 जनवरी को राजकोट में होने हैं। इस बीच, दिल्ली एंड डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के एक शीर्ष अधिकारी ने क्रिकबज को बताया कि कोहली, जिन्होंने 24 और 26 दिसंबर को बेंगलुरु में दिल्ली के लिए पहले दो विजय हजारे ट्रॉफी में खेले थे, छह जनवरी को अलूर के मैदान पर रेलवे के खिलाफ खेले जाने वाले लीग मैच के लिए वापस आएंगे।

भूटान के सोनम ने टी-20 में 8 विकेट लेकर बनाया रिकॉर्ड

नई दिल्ली। भूटान के स्पिनर सोनम येशे पुरुषों के टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में आठ विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं।

ईएसपीएनक्रिकइंफो के अनुसार बाएं हाथ के स्पिनर सोनम येशे ने 26 दिसंबर को भूटान के गेलेफू माइंडफुलनेस सिटी में म्यांमार के खिलाफ तीसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। इस 22 वर्षीय गेंदबाज ने सात रन देकर आठ विकेट लिए जिससे भूटान ने म्यांमार को 45 रन पर आउट कर दिया। इससे पहले भूटान ने नौ विकेट पर 127 रन बनाए थे। भूटान क्रिकेट ने एक्स पर पोस्ट किया एक यादगार स्पेल। सोनम येशे ने अविश्वसनीय प्रदर्शन करके चार ओवर में सात रन देकर आठ विकेट लिए और इस तरह से नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। इससे पहले किसी भी गेंदबाज ने किसी भी तरह के टी20 मैच में आठ विकेट लेने का कारनामा नहीं किया था।

2025

क्रिकेट

टेस्ट क्रिकेट में जूझती रही भारतीय पुरुष टीम

महिला टीम ने जीता वनडे विश्व कप

बेंगलुरु, एजेंसी

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वर्ष 2025 में वनडे विश्व कप जीतकर आईसीसी ट्रॉफी हासिल करने के अपने लंबे इंतजार को खत्म किया, लेकिन भारतीय पुरुष टीम टेस्ट क्रिकेट में जूझती नजर आई जिससे उसकी सीमित ओवरों की क्रिकेट में सफलता भी फीकी पड़ गई। वर्ष 2025 में वैश्विक टूर्नामेंट में भारत की पुरुष और महिला टीम ने अपना दबदबा बनाया। पुरुष टीम ने चैंपियंस ट्रॉफी (वनडे) और एशिया कप (टी20) में जीत हासिल की, जबकि महिला टीम ने पहली बार 50 ओवर का विश्व कप जीता। लेकिन पुरुषों के खेल में दक्षिण अफ्रीका के हाथों टेस्ट मैचों में 0-2 से मिली करारी हार ने मुख्य कोच गौतम गंभीर के नेतृत्व में लाल गेंद के प्रारूप में भारत की कमियों को उजागर कर दिया।

भारत ने नए विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) चक्र (2025-27) में अपनी यात्रा की नींव नए कप्तान शुभमन गिल और उभरते खिलाड़ियों के एक समूह के साथ रखी थी और अब तक के परिणाम बेहद मिले-जुले रहे हैं। भारत की नए स्वरूप वाली टेस्ट टीम ने इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचों की शृंखला 2-2 से ड्रॉ की, जिसमें गिल ने अपने खेल और कप्तानी दोनों से प्रभावित किया। उन्होंने चार शतकों की मदद से 75.40 के औसत से 754 रन बनाए, जो 1936-37 एशेज में डॉन ब्रैडमैन के 810 रन के बाद किसी कप्तान द्वारा सीरीज में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में दूसरे नंबर पर है। इसके बाद भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज को अपनी घरेलू धरती पर दोनों टेस्ट मैच में हराया। तब लग रहा था कि भारत की युवा टीम ने बिना किसी खास परेशानीके बदलाव का दौर पूरा कर लिया है।

स्टार खिलाड़ियों के साथ अनचाहे परिणाम

जब पूरे साल में शानदार परिणाम देखने को मिले तो एकमात्र गड़बड़ी पर ध्यान केंद्रित करना क्यों महत्वपूर्ण है। इसका जवाब पाने के लिए 2024-25 की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी पर एक नजर डालना जरूरी है। इस सीरीज में 1-3 से मिली हार के साथ विराट कोहली और रोहित शर्मा के टेस्ट करियर का अंत हो गया। यही नहीं स्टार स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने पिछले साल के आखिर में ऑस्ट्रेलिया के दौरे के दौरान संन्यास की घोषणा कर दी थी। इससे भारतीय टीम किसी हद तक कमजोर पड़ गई। रोहित और कोहली के वनडे में भविष्य को लेकर पूरे साल चर्चा होती रही। इन दोनों ने हालांकि भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के घरेलू क्रिकेट में खेलने की अनिवार्यता का सम्मान किया और दिखा दिया कि वह अभी वनडे प्रारूप को अलविदा कहने के मूड में नहीं हैं। एक और दिग्गज टेस्ट खिलाड़ी चेतेश्वर पुजारा ने भी औपचारिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया, जिससे मध्य क्रम में बड़ा शून्य पैदा हो गया है। भारतीय टीम मध्यक्रम में अब एक मजबूत बल्लेबाज की तलाश के लिए संघर्ष कर रहा है।

सीमित ओवरों के मैच में शानदार प्रदर्शन

भारतीय टीम ने हालांकि सीमित ओवरों की क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया। भारत ने दुबई में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी और फिर बाद में उसी स्थान पर आयोजित किए गए एशिया कप में जीत हासिल करके वनडे और टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में अपना दबदबा साबित किया। यदि 2025 के प्रदर्शन को एक मापदंड के रूप में लिया जाए तो भारतीय प्रशंसकों को 2026 में भी कुछ रोमांचक क्रिकेट देखने को मिलेगी क्योंकि पुरुष और महिला टीमें टी20 विश्व कप के लिए तैयार हो रही हैं। एक तरह से देखा जाए तो यह साल महिला क्रिकेटरों का रहा। अंडर-19 टीम ने फरवरी में अपना टी20 खिताब बरकरार रखा। भारतीय महिला सीनियर टीम को वैश्विक टूर्नामेंटों में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ हमेशा संघर्ष करना पड़ा था लेकिन इस साल वनडे विश्व कप में हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को हराया। उसने फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को हराकर अपना पहला आईसीसी खिताब जीता।

पाकिस्तान से बढ़ी तल्खी, नहीं मिलाया हाथ

पहलगाम आतंकी हमले और उसके बाद संक्षिप्त सैन्य अभियान के कारण भारत के पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंध और बिगड़ गए। इसका असर क्रिकेट के मैदान पर भी देखने को मिला। बीसीसीआई के निर्देश पर भारतीय क्रिकेटरों ने एशिया कप के दौरान पाकिस्तान के खिलाड़ियों से हाथ मिलाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने खिताब जीतने पर ट्रॉफी भी स्वीकार नहीं की क्योंकि इसे पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने प्रदान करना था। नकवी एशियाई क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष और पाकिस्तान के गृहमंत्री भी हैं। यह ट्रॉफी अभी दुबई में एसीसी मुख्यालय में बंद है क्योंकि नकवी ने स्पष्ट कर दिया है कि वह इसे मीडिया कर्मियों के सामने ही भारत को सौंपेंगे। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने 2025 में आईपीएल ट्रॉफी जीतकर अपना 18 साल का इंतजार खत्म किया। उसकी यह ऐतिहासिक उपलब्धि हालांकि जल्द ही एक त्रासदी में बदल गई क्योंकि फ्रेंचाइजी के जश्न के दौरान एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के पास भगदड़ में 11 प्रशंसकों की मौत हो गई और 56 अन्य घायल हो गए।

दृढ़ संकल्प

पुर्तगाल के 40 वर्षीय महान खिलाड़ी के नाम पेशेवर फुटबॉल में दर्ज हैं 956 गोल

रोनाल्डो छूना चाहते हैं 1000 गोलों का आंकड़ा

दुबई, एजेंसी

दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अपने करियर के अंत तक 1,000 गोल करने का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया है। पुर्तगाल के इस 40 साल के महान खिलाड़ी को पूरा विश्वास है कि वह इस लक्ष्य को हासिल कर लेंगे। उनके नाम शीर्ष स्तर के पेशेवर फुटबॉल में 956 गोल है। रोनाल्डो को रविवार देर रात दुबई में आयोजित 'ग्लोब सॉकर अवार्ड्स' समारोह में मध्य पूर्व का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। उन्होंने कहा अगर कोई चोट न लगे तो मैं यह आंकड़ा जरूर हासिल कर लूंगा।

रोनाल्डो ने शनिवार को सऊदी प्रो लीग में अल-नसर के लिए दो गोल करके अपने करियर के कुल गोल की संख्या 956 तक पहुंचा दी। उनके गोलों की संख्या में पुर्तगाल के लिए पुरुषों के अंतरराष्ट्रीय रिकॉर्ड 143 गोल भी शामिल हैं। रोनाल्डो अगले साल अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको में होने वाले विश्व कप में पुर्तगाल की कप्तानी करने वाले हैं। इस विश्व कप के शुरू होते समय उनकी उम्र 41 साल हो जायेगी। रीयल मैड्रिड, मैनचेस्टर यूनाइटेड और युवेंटस जैसी बड़ी टीमों का प्रतिनिधित्व कर चुके इस स्ट्राइकर ने कहा मैं अब भी आगे बढ़ने के लिए बहुत प्रेरित हूं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं कहां खेल रहा हूं (मध्य पूर्व में, यूरोप में या कही और)। मुझे हमेशा फुटबॉल खेलना, ट्रॉफी जीतना, गोल करना पसंद है और मैं इसी तरह आगे बढ़ना चाहता हूं।

उन्होंने कहा आप जानते हैं मेरा लक्ष्य क्या है। मैं और अधिक ट्रॉफी जीतना चाहता हूं और उस संख्या तक पहुंचना चाहता हूं जिसे आप सभी जानते हैं। रोनाल्डो ने अभी तक विश्व कप का खिताब नहीं जीता है। उन्होंने 2016 में पुर्तगाल के साथ यूरोपीय चैंपियनशिप जीती थी।

डेम्बेले बने सर्वश्रेष्ठ पुरुष फुटबॉलर

दुबई में आयोजित ग्लोब सॉकर अवॉर्ड्स 2025 ने वैश्विक फुटबॉल के सर्वश्रेष्ठ चेहरों को एक मंच पर सम्मानित किया। इस भव्य समारोह में जहां क्रिस्टियानो रोनाल्डो की निरंतर प्रभावशाली मौजूदगी चर्चा में रही, वहीं रात का सबसे बड़ा पुरस्कार ओस्मान डेम्बेले ने अपने नाम किया। पीएसजी के लिए शानदार और निर्णायक सीजन खेलने वाले ओस्मान डेम्बेले को बेस्ट मेल प्लेयर चुना गया। 40 वर्ष की उम्र में भी क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने एक और अवॉर्ड अपने साथ जोड़ा। अल-नस्र के लिए खेलते हुए उन्हें बेस्ट मिडिल ईस्टर्न प्लेयर का सम्मान मिला। मैदान पर प्रदर्शन के साथ उनके व्यावसायिक प्रभाव को भी इस अवॉर्ड में सराहा गया।